

MUNTAKHABĀT-I-HINDĪ,

OR

SELECTIONS IN HINDUSTANI,

WITH

VERBAL TRANSLATIONS OR PARTICULAR VOCABULARIES,

AND A

GRAMMATICAL ANALYSIS OF SOME PARTS,

FOR THE

USE OF STUDENTS OF THAT LANGUAGE.

BY JOHN SHAKESPEAR,

ORIENTAL PROFESSOR AT THE HONOURABLE EAST-INDIA COMPANY'S
MILITARY SEMINARY.

SECOND EDITION.

VOL. II.

LONDON:

PRINTED FOR THE AUTHOR,

By Cox and Baylis, 75, Great Queen Street, Lincoln's-Inn-Fields,

And sold by KINGSBURY, PARBURY, and ALLEN, Booksellers to the Honourable
East-India Company, Leadenhall Street.

1825.

MUNTA KHABAT-HINDI.

SELECTIONS IN HINDUSTANI

VERBAL TRANSLATIONS OR PARTICIPULAR VOCABULARIES

GRAMMATICAL ANALYSIS OF SOME PARTS

USE OF STUDENTS OF THAT LANGUAGE

BY JOHN SHAKESPEAR.

SECOND EDITION.

VOL. II.

LONDON:

East-India Company, Leadenhall Street

1855.

ADVERTISEMENT.

IN the description of India which occupies a considerable portion of these selections, a few names of places have, on the authority of the آرائش محفل خلاصۃ التواریخ been written differently from what they are in the آرائش محفل and such uncertainty exists with respect to the reading of some names of places and a few other provincial words, which have occurred in the Arabic characters without points only, that they are necessarily retained, as found, void of the orthographical marks to define the exact pronunciation of them. But, the like uncertainty with respect to the orthography of many proper names must continue to exist in all local descriptions of India, till, through the well directed attention of individuals or care of Government, the correct reading of them is ascertained, and is denoted in characters which, like the Nagari for instance, admit not of ambiguity. The indulgence of the reader is appealed to, to correct and to excuse the following errors or failures in the impression.

सफ़हः	सत्र	ग़लत	सहीह	सफ़हः	सत्र	ग़लत	सहीह
२	१४	चौकार	चौकोर	१७	२	मिद्यी	मिट्टी
३	४	पूल	फूल	१८	१	मिद्यी	मिट्टी
८	१६	मिद्यी	मिट्टी	२२	१२	भेरे	मेरे
१२	७	नहों	नहीं	३१	११	का	की
१३	१५	हागे	होगे	३४	३	रुपे	रुपै
१४	१८	बुक्ष	बृक्ष	४६	१३	में	मैं

CORRECTIONS.

صفحہ سطر	غلط	صحیح	صفحہ سطر	غلط	صحیح
۴	۸ — تعمیہ	تعمیر —	۹۶	۱۶ — نیت	نیت —
۵	۱۶ — حوض	حوض —	۱۰۰	۱۵ — بوین	بوین —
۷	۱۲ — چھوٹی	چھوٹی —	۱۰۰	۱۶ — ر	اور —
۱۰	۱۵ — کچھ	کچھ —	۱۰۲	۱۶ — اخنک	ارخنک —
۱۲	۶ — مرکز	مرکز —	۱۰۹	۵ — سرِیصاف	سرِیصاف —
۲۴	۱۴ — مفسد	مفسد —	۱۱۱	۱۶ — آلحکومت	آلحکومت —
۲۸	۴ — تسخیر	تسخیر —	۱۱۶	۱۵ — چہت	چہت —
۳۴	۱۲ — وہانکی	وہانکی —	۱۲۲	۱ — موقوف	موقوف —
۳۴	۱۲ — قیامت	قیامت —	۱۲۴	۳ — خصوصاً	خصوصاً —
۵۰	۱۶ — سابق	سابق —	۱۲۵	۱۶ — پلشت	پلشت —
۵۲	۱۵ — پ	پر —	۱۶۶	۴ — تھوڑی	تھوڑی —
۶۶	۱۶ — گھوڑی	گھوڑی —	۱۶۹	۹ — جریب	جریب —
۷۲	۵ — کہ	کہ —	۱۷۲	۲ — لیکن	لیکن —
۷۲	۱۶ — تین	تین —	۱۸۱	۱۴ — گرمائی	گرمائی —
۸۱	۱۳ — اُنکی	اُنکی —	۱۹۴	۴ — جدَاوند	جدَاوند —

यिह कहानी इन्तिखाब की गई है सिंहासन बत्तीसी में से ॥
 राजाओं में एक राजा भोज उज्जैन नगरी का राजा
 था बड़ा बली और बड़ा धनी जिस धर्म उस में सब था
 जितने लोग उस के राज में बस्ते थे सब चैन कर्ते थे राजा
 राज प्रजा सुखी किसी को कोई दुख नहीं दे सका था यह
 न्याय उस के था जो बाध बन्नी एक घाट पर पानी पीते
 थे और सब उस के आन्ने से जीते थे खुदा ने जब से उसे
 दुन्या के पर्दे पर उतारा सब बेसहारों का किया सहारा
 और हुस्न उस का देख कर चौधवीं रात के चान्द को
 चकाचौंध आती थी बड़ा चतुरा सुघड़ गुणी था अच्छी
 अच्छी जितनी बातें थीं सब उस में समाई थीं भलाई उस
 की सब जग में मशहूर थी और नगरी उस की यह बस्ती
 थी जो चप्पा रखने को जगह नहीं मिली थी ॥
 वह भरा भरा नगर शादियां घर घर नये नये तौर के
 अच्छे अच्छे मकान बने हुए चौपड़ का बाज़ार दर्भियान
 नहर बहती हुई दुरस्तः दूकानों में एक एक उन में दूकान
 दार सरीफ बज़्जाज़ सौदागर कारीगर सुनार लुहार सादः
 कार कसेरा पटुआ किनारी बाफ़ कोफ़्तगर जिलाकार
 आईनः साज़ अप्पे अप्पे काम में सर गर्म था ॥

जौहरी बाज़ार में जवाहिर से किशियां भरी हुई
 मोती मूंगा ज़ुमुरद लज़ल याकूत नीलम पुखराज जौहरी
 देखते भाले और खरीदारों से बाज़ार का बाज़ार भरा
 हुआ और उस के बराबर दूकानों में मेवः फ़रोश विलायती
 अनार सेब बिही नाशपाती अंगूर से पिटारे पिटारियां
 भर कर लगाये हुए और ढेर कुहारे पिस्ते बादामों के
 किये हुए बेच रहे फूलवाले फूल गंध रहे ॥

तंबोली बीड़े बांध रहे गंधियों की दूकानें तेल फुलेल
 अन्न अर्गजे की लपटों से महक रहीं और सुपारी वाले
 दूकानों में पुड़े बुन धनिये सुपारी के बांध कर लगाये हुए
 डिब्बे मज़जूनों के आगे धरे सुपारियां कतर रहे बिसाती
 हर रंग की जिन्स दूकानों में चुने हुए मोल गाहकों से
 कर रहे ॥

चौक चौकार बना हुआ मीना बाज़ार लगा हुआ तीसरे
 पहर को गुज़री लगी हुई अस्वाब तरह तरह का नया
 पुराना बेचने वाले बेच रहे और लेनेवाले मोल ले रहे
 गर्म बाज़ारी हर एक चीज़ की हो रही कटोरे हर तरफ़
 बाज रहे ॥

कहीं नाच कहीं राग कहीं भगत कहीं नकु कहीं किस्सः

हो रहा मअशूक बाज़ार में सैर कर्ते हुए आशिक पीछे
पीछे फिर्ते हुए दिन रात यह समां वहां रहता था बाग
बाग़चे सैर ओ तमाशे को बने हुए दरख़्त मेवों से झूमते
हूए और पूल क्यारियों में खिले हुए ॥

तालाबों में कंवल फूले हुए बावलियों में पानी झलक़ा
हूआ हर एक कूए पर रहट चला हूआ पनूघट लगा हूआ
और राजा के चौरासी खास महल उंचे उंचे दबीज़े खुश
कितूअः चार दीवारियां सीधी खिंचीं हूइयां चारों तरफ़
उन के बाहर अन्दर मकान अनूठे अनूठे बने हुए ॥

कोदरियां दालान दर दालान बारहदरियां बालाख़ाने
चौमहल्ले पचमहल्ले रंगमहल्ले ऐशमहल्ले अटारियां बंगले
तैयार चिल्वने पर्दे हरहर दर पर लगे हुए फ़र्शी चान्दनी
सोज़नी कालीनों का जाबजा बिछा हूआ मसूद तक्ये लगे
हूए शहनिशीनों में दंगल और कुर्सियां सोने रूपे की
जड़ाउ बिछी हुई ताकों पर शीशे बेद मुश्क गुलाब के चुने
हूए सायबान ताश बादले के खिंचे हुए नमगीरे बज़ज़ी
बज़ज़ी जगह अप्पे अप्पे मौक़अ पर खड़े हुए ॥

सह्न में क्यारियां बनी हुई चौपड़ की नहरें पानी से
भरी हुई लहरें लेती हुई हौज़ बेदमुश्क गुलाब से भरे हुए

फौवारे छूटते हुए चादरों से पानी बहता हुआ अब
 जोहं चारों तरफ़ जारी सर्व खड़े हुए और छोटे छोटे
 दरख्त लगे हुए रविशं पट्टियां सब दुरुस्त फूल हज़ारों
 रंग के क्यारियों में फूले हुए हर हर महल में एक एक
 रानी ऐश ओ काश्रानी से राजा का दिल हाथों में लिये
 रहती थी नाच राग रंग रात दिन होता था और वह आप
 यह मुघड़ था जो बात बात में मोती पिरोता और नौ
 किस्म के साहिबि कमाल जैसे नौ रत्न उस की मज्लिस में
 हाज़िर रहते थे ॥

राजा इंद्र उस की सभा को देख कर रश्क की आग से
 जला था और उस का अखाड़ा हस्त के मारे हाथ मला था
 रंजी मर्द उस की सूरत पर दीवाने थे जिस ने एक बार
 उसे देखा आप में न रहा जिस ने उस की खूब सूरती का
 बयान सुना वे चैन हुआ जोबन के मद में सरीर मोहन का
 औतार नौ जवान चातुर साहिबि तद्बीर ॥

उस नगरी में वह राजा यों राज कर्ता था उस की सैर
 और तमाशे को शहर के किनारे बाग़बानों ने कोसों तक
 क्यारियां बनाई थीं और हर रंग के फूलों की बहारें
 दिखाई थीं और उन के बराबर एक खेत में किसी मुराई

ने खीरे बोए थे जब वे उगे बेलें तमाम खेत में फैल गईं
और खूब हरीवल हुआ ज़र्द ज़र्द फूलों ने और ही बहार
दी ॥

जब वह खेत फला और तैयारी पर आया तब उस
खेत वाले ने रखवाली को एक मकान तज़वीज़ किया
देखा दर्भियान उस खेत के एक चौका ज़मीन का खाली
रह गया है कि न कुछ जमा है न उपजा है रखवाली
कर्ने को गिर्द इस्तादे लगाकर उपर एक मचान सा बांधा
उस पर चढ़ कर चारों तरफ़ निगाह कर्ते ही कहने लगा
कोई है इसी वक्क भोज को गढ़ से पकड़ लावे और सज़ा
को पहुंचावे ॥

राजा के नौकरों में से एक ने इस बात को मुन्तेही टांग
पकड़ कर उसे नीचे गिरा दिया और मुंह हीं मुंह थपेड़े
मार मार सारा मुंह सुजा दिया कान पकड़ कर उठाया
और बिठाया गुरुर का निशः जित्ना उसे चढ़ा था सब
उतर गया तौबः धाड़ कर्के पांओं पड़ा और कहने लगा
मैं ने क्या ऐसी तक़सीर की जो मुझ पर यह मार पीट
हई ॥

इधर उधर की राह बाट के लोग जो वहां इकठे हुए

थे उन्होंने ने कहा तूने ऐसी बात मुंह से निकाली अगर राजा सुने अभी तुझे तोप के मुंह पर रखकर उड़ा दे सुन्तेही वह गिड़गिड़ाने लगा रहे सहे होश ओ हवास और भी जाते रहे जान के उर से घबरा दम उस का होंठों पर आ रहा मिनूत और ज़ारी से बारे छूट गया ॥

राजा के उस फिद्दीने वहां से घर की राह ली पर वह जब उस मचान पर चढ़ता तो ऐसी बक्वास किये बिन न उतर्ती एक दिन चार हकीरे राजा ने एक काम को किसी तरफ़ भेजे थे वे रात को उधर से फिरे हुए चले आते थे और वह मचान पर चढ़ा हुआ बक रहा था कि बुलाओ हमारे दीवान और अहलि कारों को कि इस जगह खासे खासे महल और एक गढ़ बनावें सब सरंजाम लड़ाई का उस में जमूअ करें कि मैं राजा भोज से लड़ूं और मारूं जो मेरी सात पुश्त का राज यह राजा कर्ता है ॥

यिह सुन्तेही उन चारों हकीरों को अचम्भा हुआ और एक एक को उन में से गुस्सः आया एक ने गज़ब से कहा इसे जान से मारो दूसरे ने कहा इसे तंबीह कर्के मुश्कें बांध राजा ही के पास ले चलो वह इस के हक में जो चाहे सो करे तीसरे ने कहा इस ने शराब पी है मत्वाला है जो मुंह

में आता है बक्का है चौथे ने कहा फिर सम्झा जायगा अब जाने दो देर होगी ॥

आपस में यह बात कह कर राजा के पास गये पहले मुजरा किया और जहां भेजा था वहां का अहवाल अर्ज किया राजा ने सुन कर पूछा हमारे राज में सब लोग खुश रहते हैं और अपने अपने घर में बैठ कर हमारे हक में क्या क्या कहते हैं तब उन्होंने ने हर एक का अहवाल कहकर वह किसः राह का जो सुना था बयान किया और कहा कि अजब असुर उस मकान का है कि जब वह उस मकान पर चढ़ता है एक रुड़नत उस पर चढ़ जाती है और जब वह वहां से उतरती है निशः सा उतर जाता है फिर अपनी हालति असूली में आता है ॥

राजा ने कहा तुम मुझे वहां लेचलो और उसे दिखाओ कि वह जगह कौन सी है तब राजा खुशी खुशी उठ हकीरों को लेकर उस मकाम पर गया वहां छिपकर चुपके कहीं बैठ रहा इन्ने में क्या सुन्ता है कि वह मकान पर पांव रखतेही कहने लगा लोग जल्दी जाएं और राजा भोज को गढ़ से पकड़ लावें मारें उस से जल्दी मेरा राज ले दें इस में जस और धर्म दोनों उन्हें होगा ॥

सुन्तेही राजा को खौफ़ आया हकीरों को साथ लेकर
घर को फिर आया रात को फ़िक्र के मारे नींद न आई
सात पांच कर के जों तों वुह रात गंवाई सुबह होतेही
अण्णान कर के दर्बार किया पंडितों को और नुजूमियों
को बुलाया और रात का सब अफ़सानः ज़बान पर लाया ॥

नुजूमियों ने घड़ी साज़त और वुह दिन बिचार कर
के कहा राजा हमारे बिचार में कुछ वहां लक्ष्मी का लक्षण
नज़र आता है और पंडितों ने कहा इस मकान में बहुत
दौलत है ॥

सुन्तेही राजा ने तमाम उस शहर के बेलदारों को हुक्म
किया कि लाख बेलदार वहां जाओ और उस मक़ाम की
तमाम ज़मीन खोदो वे बमूजिब हुक्म के रवानः हुए बअद
उन के सब अप्पे मुसाहिबों को भेजा और आप भी सवार
होकर वहां आया ॥

बेलदारों ने जब चारों तरफ़ से खोदा और वहां की
भिद्दी दूर की एक पाया नज़र आया तब राजा ने फ़र्माया
अब ख़बदीरी से खोदो दूट न जाय जब खोदते खोदते
चारों पाए सिंहासन के नज़र आये राजा ने कहा अब
इसे बाहर निकालो ॥

लाख मज़दूर उठाते थे और ज़ोर कर्ते थे ज़रा भी वह जगह से न हिला था तब उन में से एक पंडित ने अर्ज़ की महाराज यह सिंहासन देवताओं का या दानाओं का बनाया हुआ है यह जगह से न हिलेगा और न उठेगा बल लेगा इस को बल दीजिये ॥

तब राजा ने कड़ोड़ भैसे ओर बक्रे वोंहीं बल दिये चारों तरफ़ बाजे बजने लगे और जैजैकार होने लगे तब बल लेकर हाथ लगाते ही वह सिंहासन उपर को उठ आया झाड़ बुहार कर एक ज़मीनि पाकीज़ पर रख दिया राजा सिंहासन देख कर बहुत खुश हुआ जब उस की मिट्टी ढुड़ाकर गर्द ओ गुबार दूर कर धोया और पोंछा ऐसा चमक्रे लगा कि आंख किसी की उस पर न ठहती थी जिस ने उस जड़ाउ सिंहासन को देखा उसे खुदा की कुदरत का तमाशा नज़र आया कारीगरों ने ऐसा बनाया था कि किसू ने न देखा न सुना ॥

आठ आठ पुतलियां चारों तरफ़ बनी हुई थीं और एक एक फूल कंवल का हर एक के हाथ में था अगर सुर या मुन उसे देखें भैचक्र हो जावें राजा ने तमाम कारीगरों को बुलाकर फ़र्माया जितने रुपए खर्च हों खज़ाने से ले

लो जहां जहां का जवाहिर जाता रहा है जड़ कर
जल्दी तैयार करो ॥

यिह कह कर राजा महल में दाखिल हुए सिंहासन
बने लगा पांच महीने में सब तैयार हुआ और पुत्लियां
ऐसी बन कर खड़ी हुईं गोया अभी बोलती हैं और चलीं
हैं गरज सिर से पांच तलक खूबियों में भरी हुई आंखें
हिरन की सी कमर चीते की सी पांच का यिह अंदाज़ जैसी
हंस की चाल जिन्होंने सुरत उन की देखी अप्नी आंखों
की पुत्लियों में जगह दी ॥

तब पंडित राजा से सिंहासन की हकीकत कहने लगे
राजा सुन मनी जीना इख्तियार खुदा के है पर इन्सान
को चाहिये जीते जी सब ज़िन्दगी का ऐश कर ले यिह
राजा सुन कर बहुत खुश हुआ और कहने लगा शायद ये
पुत्लियां खुदा ने अप्ने हाथ से बनाइयां हैं या इंद्र के यहां
की परियां हैं ॥

यिह कह कर पंडितों को हुक्म किया नेक साज़त अच्छी
लग्न बिचारो जो मैं उस साज़त सिंहासन पर बैठूं मुन्तेही
पंडितों ने बिचार किया कातिक महीने में एक दिन शुभ
लग्न ठहराई सब जोग उस के अच्छे थे कहा कि उस साज़त
तुम बैठो ॥

राजा ने बैदने की तैयारी की जितने राजा उसके राज के थे और पंडित और करावती दूर और नज़्दीक के उन्हें न्योता भेज कर बुलाया और आप अशनान कर्के अच्छे कपड़े पहने पंडित बेद पढ़ने लगे और गंधर्व गीत गाने लगे भाट उस बयान करने लगे और तरह तरह के बाजे बजने लगे हर हर महल में शार्दियां नाच राग रंग मचे जितने लोग आये थे उन सब की ज़ियाफ़त की ब्राह्मणों को वृत्ति गांव भूखों को खाना और रुपए नंगों को कपड़ा और माल अस्बाव रथेत को बख़्शिश और इन्आम तमाम शहर में खैर खैरात फौज को खिलअत और इज़ाफ़े हमनिशीनों पर तरह तरह की मिहर्बानियां नवाज़िशें और जितने लोग उस सभा में इकठे हुए थे जैजैकार कर्ते थे और खुदा का नाम लेते थे ॥

बीच में सिंहासन धरा था राजा खुशी खुशी गणेश को मनाता हुआ सिंहासन के पास जाकर खड़ा हुआ दाहिना पांव बढ़ाकर चाहा कि उस पर रखे बेइस्त्रतियार पुतलियां खिलखिला कर हंसियां और सब ने यह देखा राजा अपने दिल में कटा रुक्कर निहायत शर्मिंदः हो कुछ दहशत खाई कुछ उसे अचम्भा हुआ कि ये बेजान

पुत्लियां जानदार क्यूं कर हृदयां तैश खाकर ग़ज़ब में
आकर पांव उधर से खेंच लिया और पुत्लियों से कहने
लगा ॥

क्या देखा और क्यूं हंसियां मुझ से बयान करो क्या मैं
बली या राजा का बेटा या सखी नहीं या क्षत्रियों में काइर
हूं या ना मर्द हूं या बेरहम हूं या और राजा मेरे हुक्म में
नहीं या मैं पंडित नहीं या मेरे यहां पद्मिनी रानी नहीं
या मैं राज नीति नहीं जानता या मैं किसी की मज्लिस में
नीचे होकर बैठा फिर किस बात में ना लाइक हूं मेरे दिल
में शक पड़ा है सो मुझे बताओ ये बातें राजा की सुनकर
उन्हें में से

पहली पुत्ली रत्नमंजरी बोली

राजा दिल लगाकर मेरी बात सुनो और यह किस्मः
मैं तुम से बयान करती हूं तुम गुण गाहक और कद्रदान हो
जो तुम ने बातें कहीं सब दुरुस्त हैं सूरज से भी तुम्हारे
ग़ज़ब की आग का शुज़लः बुलन्द है पर इत्ता दिमाग मत
करो पुराणी कथा सुनो इस दुनिया का अन्त नहीं खुदा ने
इस में किस्म किस्म और रंग रंग के जवाहिर पैदा किये
हैं एक एक कदम पर दौलत का गंज है और एक एक

कोस पर आबि हयात का चश्मः पर तुम कम बख्त हो
 तुम ने नहीं पहचाना अप्ने दिल में क्या समझे हो ॥
 तुम जैसे इस दुनिया में कड़ोइहा पड़े हैं तुम ने इत्ने ही में
 मगूर होकर अप्ने तर्ई भुला दिया और यह जिस का
 सिंहासन है उस राजा के यहां तुम जैसा एक एक अद्रा
 नौकर था ॥

यिह सुन कर राजा को गुस्सः आया और कहने लगा
 इस सिंहासन को अभी मैं तोड़ डाला हूं इत्ने में बररुच
 पुरोहित राजा का बोला राजा यह इन्साफ़ से दूर है
 पुतली की बात कान से सुन लो और जो कुछ कर्नी हो फिर
 कर लीजो राजा ने कहा तू इस का अहवाल कह तब
 पुतली बोली ॥

मैं क्या भाजरा कहूं इत्ना ही सुन तुम जल कर खाक हो
 गये और जब तमाम हकीकत उस राजा की सुनोगे तो
 और शर्मिन्दः होगे अप्ने दिनों को रोओगे लोगों के आगे
 भी हल्के होगे इस कहवाने से नकहवाना भला है हम तो
 उसी रोज़ मर चुकी थीं और सिंहासन फट चुका था जिस
 रोज़ से कि हम राजा बिक्रमाजीत से बिछड़ी थीं अब
 हमें क्या उर है ॥

इत्ने में दीवान राजा का पुतली से कहने लगा किस लिये तू अप्ने राजा का बयान नहीं करती गुस्सः छोड़ दे अब बात कर क्यों वुह भेद छिपा रखा है तब पुतली बोली कि साके बंध राजा बड़ा बली था और नगर अंबावती में राज करती था बड़ा उस का दब्दबः था देवताओं का पूजनेवाला और तमाम दुन्या का दान देनेवाला आगे में उस की कथा कहती हूं राजा कान धर्के सुनो ॥

शामस्वयंबर उस नगरी का राजा था ज्ञात का ब्राह्मण पर बड़ा राजा हुआ तब गंधर्वसैन उस का नाम हर तरफ बजने लगा और उस के घर में चार बरन की रानियां थीं ब्राह्मणी क्षत्रनी बैसनी सूदनी उन में जो ब्राह्मणी थी बहुत अच्छी सूरत और नाज़ुक थी उस के एक बेटा हुआ सो बड़ा पंडित हुआ ब्रह्मनीत उस का नाम रखा ॥

ऐ राजा वैसा कोई दुन्या में पंडित न था जितने इल्म थे सब उस ने पढ़े थे यहां तक कि मौत का भी अहवाल कह देता और क्षत्रनी से तीन बेटे हुए उन्होंने ने क्षत्रियों का धर्म इखतियार किया एक का नाम संख दूसरे का नाम बिक्रम तीसरे का नाम भरत एक से एक बली सब जग में उन का नाम मशहूर था और उन्हें कल्प बुक्ष दुन्या केलोग

कहते थे और बैसनी से बेटा जो हुआ उस का नाम चंद्र
रखा वह बड़ा सखी और रत्न दिल था सूदनी से जो बेटा
हुआ उस का नाम धन्वंतर वैदों में वह बड़ा वैद था छः
बेटे राजा के हुए एक से एक अच्छा ॥

गरज अमरसिंह के घराने में सब के सब खूब हुए
और वह जो ब्राह्मणी से हुआ था वही राजा की दीवानी
कती था उस से जब कोई तक़सीर हुई तब राजा ने
खिन्नत ले ली वह लड़का वहां से निकल कर धारापुर में
आया ॥

हे राजा वहां सब तुम्हारे बुज़ुर्ग थे उसे उन्हें सभी ने
माना बड़ी आवभगत की वहां का राजा तुम्हारा बाप था
कित्ती मुद्दत के बज़द उस ने दगा कर्के उस राजा को मार
डाला वहां का राज लेकर उझैन नगरी में आया और
यहां आकर मर गया ॥

संख जो राजा का बड़ा बेटा क्षत्रनी के पेट का था
वह आन कर वहां का राजा हुआ राज करने लगा और
आगे यह अहवाल है ॥

एक रोज़ पंडितों ने आकर राजा संख से कहा कि
तेरा दुश्मन दुन्या में पैदा हुआ है यह बात सुन कर वह

भैचक रह गया ब्राह्मण कहने लगे हम सब ने शास्त्र देखा है उस से यही अद्भुत निकला है जो हम ने तुम से कहा मगर एक बात और है कि हम उसे मुंह से निकाल नहीं सके तब राजा ने कहा खैर जो तुम ने वुह बात कही यह भी कहो तब उन्होंने ने कहा ॥

हमारे विचार में यह आता है कि संख को मार कर विक्रम राज करे यह बात सुन कर राजा हंसा और कहने लगा ये पंडित बावले हैं इन्हें कुछ ज्ञान नहीं इस लिये ऐसी बात कहते हैं यह बात सुनी अन सुनी जानकर राजा चुप रहा पंडित अपने दिल में शर्मिन्दः हुए कि हमारे शास्त्र को इन्ने झूठ जाना और हमें दीवानः ठहराया ॥

जब कितने एक दिन इस पर गुज़रे पंडित अपने मकानों में बैठ कर नुजूम देखने लगे उन्हीं में से एक पंडित बोला मेरे विचार में यह आता है कि राजा विक्रम कहीं नज़्दीक आन पहुंचा है तब दूसरा उन में से बोला यहां के किसी जंगल में है और एक उन्ह में से कहने लगा उस जंगल में एक तालाब भी है वहीं अखाड़ा कर्के रहा है तब एक ब्राह्मण उन्ह में से उठ खड़ा हुआ और जंगल को चला ॥

वहां जाकर क्या देखता है कि एक तालाब पर राजा विक्रम तपस्या कर्ता है मिट्टी का एक महादेव बनाकर पूजता है और दंडवत कर रहा है ॥

यिह देख कर पंडित उल्टा फिर आया सब पंडितों को लेकर राजा के पास गया राजा से कहने लगा तुम हमारे शास्त्र को झूठ जानते थे और अब हम देख आये फलाने जंगल में राजा विक्रमाजीत आन पहुंचा राजा संख उस रोज़ सुन कर चुप रहा उस की सुबह को उठा और उस बन में जातेही छिप कर देखने लगा कि वुह क्या कर्ता है ॥

जहां राजा विक्रमाजीत बैठा था वहां से वुह उठा और तालाब में नहाकर फिर अप्ने आसन पर बैठा और उसी तरह से महादेव की पूजा करने लगा और यिह राजा भी निकल कर वहां खड़ा हुआ जब वुह महादेव की पूजा कर चुका तब उसी महादेव पर इस ने पेशाब किया ॥

जित्ने राजा के साथ लोग थे कहने लगे इस की अकू मारी गई है कि पूजे हुए देवता पर इस ने मूता एक पंडित उन्ह में से बोल उठा महाराज यिह तुम ने क्या किया तब वुह बोला हम ज्ञात के ब्राह्मण हैं देवता को पूजें

या मिट्टी को तब ब्राह्मणों ने कहा राजा कुछ हम अच्छा नहीं देखते क्यों कि तुम्हारी मत कुमत होगई जब मर्ने के दिन आग्नी के नज़्दीक आते हैं तो उस की मत मारी जाती है ॥

तब राजा बोला तुम दीवाने हो और मुझे भी बावला बनाते हो जो खुदने लिखा है वही होवेगा उसे कोई मिटा नहीं सक्ता सब पंडित आपस में कहने लगे इस राजा ने क्या अप्ना अक्काज किया तब राजा संख ने बिक्रम के मर्ने की यह फ़िक्र की सात लकीरें कोयले से जादू की काढ़ीं और उस पर भुस फैला दिया जो उसे मज़लूम नहो और उन्ह लकीरों का यह गुण था जो उस पर पांव धरे बावला हो जाय और एक खीरा मंगाकर जादू किया और एक कुरी पढ़ कर हाथ में रखी ॥

उस कुरी खीरे का यह असर था जो उस कुरी से वुह खीरा काटे उस का सिर कट जाय पंडितों से कहा उसे बुलाएं उन्ह लकीरों पर पांव धर के जो आवेगा दीवानः हो जायगा बावला होकर यह खीरा जो हाथ से लेकर काटेगा तो सिर उस का कट जायगा जितने क्षत्री राजा के साथ थे अप्ने दिल में फ़िक्रमंद हुए कि इस राजा ने दगा यहां की यह क्षत्रियों का धर्म नहीं ॥

राजा ने बिक्रमाजीत को बुलाया कहा हम तुम बैठ कर एक जागह खीरा खावें वुह राजा जोगी था और सब इल्म जानता था उन्हे लकीरों से बच कर सिंहासन के पास जा खड़ा रहा खीरा और कुरी उस के हाथ से ले ली दाहिने हाथ में कुरी रखी और बायें हाथ में खीरा लिया राजा संख ग़ाफ़िल था फुर्ती कर्के उसे कुरी मारी राजा का काम तमाम किया ॥

यिह बात रत्नमंजरी ने ज़ाहिर की राजा भोज तू इस बात को सुन खुदा जो रहम करे तो तिन्के से पहाड़ करे और ग़ज़ब करे तो पहाड़ से तिन्का किताब में जो लिखा है वुह झूठ नहीं होता जब मा के पेट में इन्सान आता है चार बातें साथ लाता है नफ़्ज़ नुक़सान दुख सुख तीन लोक और चौदः तबक़ में फिरे लेकिन किस्मत का लिखा नहीं मिदता ॥

भाई को मारा दिल में खुश हुआ उस के लहू का माथे पर टीका दिया उढ़कर सिंहासन पर बैठा और चंवर शलवाया उस राजा की रानी उस के साथ सती हुई यिह राजनीति से न्याव करने लगा और जित्ने राजा उस के राज के थे सब सुन्कर खुश हुए मुजरे को आये दोनों वक्त्र

दर्बार में हाज़िर रहने लगे इसी तरह से राजा राज करने लगा ॥

कितने दिनों के बज़द एक दिन राजा शिकार को चला कुत्ते बाज़ बही और जितने शिकारी जानवर थे साथ लिये और जितने साथ में अच्छे अच्छे गुल्चले और तीर अन्दाज़ थे साथ लिये जाकर एक जंगल में पहुंचे हिरन के पीछे राजा ने घोड़ा डाला ॥

राजा आगे बढ़ गया साथ कोई न पहुंचा एक बड़े जंगल में राजा जा निकुा और वहां जाकर सोच करने लगा कि मैं कहां आया राह भी भूला और साथ भी गंवाया इत्ने में जो निगाह की एक बड़ा दरख़्त देखा उस दरख़्त की फुनंग पर चढ़ गया और वहां से देखे लगा जंगल ही जंगल नज़र आता था मगर एक तरफ़ जो देखा एक शहर नज़र आया उस को देख कर राजा को एक ढाड़स सी बन्धी ॥

वुह नगर जो देखा निहायत आबाद है कबूतर वहां उड़ रहे हैं चीलें मंडला रहीं हैं सूरज की झलक से हवेलियों के कलस चमक रहे हैं अप्ने जी में कहने लगा यह नया शहर मैंने देखा कल इसे छीन लूंगा और उस नगर के राजा

यहां को यह शहर मैंने नहीं ॥

का दीवान जिस का नाम लूतबरन था वह कौवे के भेस में रहता था उस तरफ़ से उड़ा हुआ जाता था उस ने यह राजा के मुंह से बात सुनी बहुत दिल में ख़फ़ा हुआ गुस्से से उस के मुंह में बीट कर दी ॥

राजा ग़ज़ब में आया इतने में लोग कुछ उस के वहां आन पहुंचे उन के साथ होकर अपने शहर में दाख़िल हो दीवान को हुक्म किया जहान में जहां तक कौवे हैं पकड़ लावें यह सुन्तेही चारों तरफ़ बहलिये दौड़े और कौवे पकड़ पकड़ लाये और पिंजरों में बंद किये ॥

राजा ने जाकर उन्हें कौवों से कहा हे चंडालो वह कौन सा कौवा था जिस ने हमारे मुंह पर बीट की तुम सच कहोगे तो हम छोड़ देंगे नहीं तो सब को मार डालेंगे यह सुन्कर सब बोले महाराज हम में कोई कौवा नहीं रहा जो पकड़ा नहीं आया और वह काम हम से नहीं हुआ तब राजा ज़ियादः ख़फ़ा हुआ कि तुम सब के सिवा वह कौन कौवा है कि जिस ने यह काम किया ॥

तब उन्होंने ने कहा महाराज सच पूछते हो तो हम कहते हैं बाहुबल एक राजा है मथ्रिक से मथ्रिब तक उस का राज है और उस का दीवान लूतबरन बड़ा दाना बहुत

होशियार पंडित है वह कौवे के भेस में रहता है यह काम उस का हो तो हो क्यों कि कौवे की सूरत एक वह बच रहा है तब राजा ने कहा वह किस तरह आवे उस का कुछ समझ कर मुझे इलाज बताओ कोई तुम्हारे यहां से वकील जाय और उस को लेआय तुम अपने यहां से दो कौवों को भेज दो वे जाकर ले आवें ॥

उन्हीं में से दो कौवे वहीं गये उन्हें की लूतबरन ने बहुत सी आवभगत की और कहा तुम यहां किस लिये आये हो तब वे बोले महाराज तुम्हारे बगैर हम सब कौवे मारे जाते हैं जो तुम राजा बिक्रमाजीत पास चलो तो सभी की जानें बचें तब लूतबरन बोला धन्य भाग जो तुम मेरे पास अपना मतलब समझ कर आये हो जो कुछ काम मुझ से होगा मैं कमी न करूंगा ॥

यह कह कर अपने राजा पास आया और राजा से हुक्म लेकर उनके साथ गया जब सब कौवों ने उस दीवान को देखा तब राजा से कहने लगे जिस का हम नाम लेते थे वह यही है राजा ने देखकर उसे आदर कर्कें आधी गद्दी पर बिठाया और क्षेम कुशल पूछी वह दुआ देकर बोला किस लिये आपने मुझे याद किया और किस वास्ते

इन सब को बन्द में दिया जब लूतबरन ने यह बात पूछी तब राजा कहने लगा मैं एक दिन शिकार को गया था इतिफाकन जंगल में राह भूल गया तब एक पेड़ पर चढ़ कर चारों तरफ देखे लगा कि एक कौवे ने मुझ पर बीट कर दी इस लिये मैं ने सब कौवों को बन्द किया जब तक कि उन्हें में से कोई सच न कहेगा एक कौवा इन में से न छोड़ूंगा बल्कि जान से सब को मारूंगा ॥

फिर लूतबरन बोला महाराज यह काम मेरा है जब तुम्हें मैं ने मगूर देखा तब मुझे गुस्सा आया अकल मेरी उस वक्त जाती रही यह सुनकर राजा हंसा और बिगड़ कर कहने लगा मुझे गुरुर क्यों नहो राजा मैं हूँ दाता मैं हूँ सिपाही मैं हूँ और कौन सी बात मुझ में नहीं तुम कहो तब वह बोला जो नगर तुम ने नज़र भर देखा उस का मैं सब बयान करती हूँ ॥

राजा बाहुबल वहां का कदीम राजा है और गन्धर्वसैन बाप तुम्हारा उस का दीवान था राजा की उस की तरफ से कुछ बे इअतिबारी हुई तब उसे छुड़ा दिया वह नगर अंबावती में आया और उस जगह का राजा हुआ उस का बेटा तू बिक्रम है तुझे जग में कौन नहीं जानता घर

जब तलक राजा बाहु तुझे राज तिलक न देगा तब तलक तेरा राज अचल न होगा और वुह जो खबर पावेगा वोंहीं चढ़ दौड़ेगा और तुझे आकर एक घड़ी में खाक के बराबर कर देगा तुझे जो मैं मसूल हूँ उसे मान और किसी तरह से उस राजा के पास जा राजा को मुहब्बत दिलाकर तिलक उस से ले जिस से अचल राज तू करे ॥

राजा बिक्रम बड़ा अक्ल मन्द था इस बात पर काइम रहा ऐसी सख्त सख्त बातें लूतबरन से सुन्कर कुछ दिल में न लाया हंस्कर कान देकर सब सुनीं फिर लूतबरन ने कहा जो तुम्हें चलना है तो हमारे ही साथ चलो और पंडितों से अच्छी साअत दिखाकर चलने की तैयारी करो ॥

दूसे दिन सुबह के वक्त राजा लूतबरन मंत्री के साथ होकर चला और राजा बाहुबल के नगर में पहुंचा तब उस दीवान ने राजा से कहा यहां तुम बैठो और मैं अप्ने राजा को तुम्हारे आने की खबर दूं यह बात राजा से कहकर अप्ने राजा के मंदिर में गया उस को सलाम किया और सब समाचार और अप्नी हकीकत समेत राजा का अहवाल कहने लगा ॥

महाराज गन्धर्वसैन का बेटा बिक्रम आप के दर्शन के लिये आया है यह बात राजा ने सुनकर तुरंत बुलाया तब वह दीवान राजा को ले गया और अपने राजा से मिलाया राजा उस से उठ कर मिला और आदर कर्के आधे आसन पर बिठाया क्षेम कुशल पूछी बड़ा उस के रहने के लिये मकान बताया राजा उठकर उस मकान में आया वहां रहने लगा जब दस पांच दिन बीत गये दीवान से राजा बिक्रम ने कहा हमें तुम बिदा कर्वा दो तो हम अपने स्थान को जायें ॥

तब मंत्री कहने लगा हमारे राजा का यह सुभाव है जो उन से मिलने को आता है उसे आप से रखसत नहीं कर्ते तुम रखसत मांगो और जिस बात की खाहिश हो सो मुझे कहो अपने जी में कुछ शर्म न करो तब राजा बोला मुझे कुछ नहीं चाहिये जो कोई जो बर चाहे मुझी से ले तब दीवान बोला राजा यह हमारी बात सुनो इस राजा के घर में एक सिंहासन है सो वह सिंहासन पहले महादेव ने राजा इंद्र को दिया था और उस राजा ने इस को दिया उस सिंहासन में यह गुण है जो उस पर बैठे सात दीप और नौ खंड पृथ्वी का अजीत राज करे और बहुत सा

जवाहिर उस में जड़ा है और बत्तीस पुत्लियां भी कि
अमृत देकर उन को सांचे में ढाला है लगी हैं तुम रखसत
होते हुए वह सिंहासन राजा से मांगो कि उस पर बैदकर
आनन्द से राज करोगे ॥

यिह राजा को दीवान ने सलाह दी और सुबह को
राजा के दरबार में दीवान गया खबर दी महाराज बिक्रम
रखसत होता है बाहर खड़ा है ॥

यिह सुन्कर राजा फिलफौर दरवाजे पर आया और
बिक्रम ने देखकर अप्ना माथा निवाया राजा ने बिक्रम से
कहा जो तुम्हारे जी में आवे सो मांगो मैं खुश होकर वोही
दूंगा बिक्रम बोला महाराज जो आप ने मुझ पर दया की
है तो वही सिंहासन मुझे बख्शो ॥

यिह बात सुन्कर राजा बोला अच्छा सिंहासन तो हम
ने तुम्हें दिया पर यिह काम मंत्री का है इसे तुम नहीं
जान्ते थे यिह कहकर सिंहासन मंगाया और पान तिलक
देकर उस पर बिठाया कि तुम अब अजीत हुए किसी
बात की जी में चिन्ता न कनी गन्धर्वसैन मेरा बड़ा दोस्त
था और तू उस के खानदान में बड़ा नाम्बर हुआ ॥

इस तरह से राजा बिक्रम को दुआ देकर रखसत

किया राजा वहां से अपने घर को आया और अपने जी में बहुत सा खुश हुआ और जितने उस राजा के दुश्मन थे उन्होंने के जी में उर हुआ राजा के देश के लोगों ने बहुत खुशी की और दीप दीप के राजा विद्युत् के वास्ते आये और जो राजा गुरुर कर्ता था उस का वह राज जाकर छीन लेता और अपना राज कर्ता ॥

गरज शर्क से गर्ब तक खूब उस ने अपना राज किया सब रड़ेयत आनन्द से उस के राज में बस्ती थी और जो क्षत्री थे उस से उर्ते थे और जो कोई देश ब देश जाता था वहां बिक्रम का धर्म सुन्ता था सब मुल्क आबाद देखता था कहीं दुखी उसे नज़र न आता था डांड और बान्ध उस के राज भर किसी ने कान से न सुना बल्कि घर घर आवाज़ बेद और पुराण की आती और जितने लोग थे अशूनान ध्यान कर्के तीनों वक्त अपने भगवान की याद में रहते थे अपने अपने घर में सब राजा की सी सभा कर्के खुश रहते थे राजा राज और प्रजा सुखी ॥

इस में एक दिन राजा बिक्रमाजीत ने सभा को और सब पंडित बुलाये पंडितों से राजा ने पूछा मेरे जी में है अब मैं सम्बत बान्धूं सो तुम से पूछता हूं कि मैं इस बात के

लाइक हूं कि नहीं तुम शास्त्र देखकर मुझ से विचार कहो तब सब पंडितों ने विचार कर्के राजा से कहा महाराज अब जो तुम्हारा प्रताप है सो तीनों भवन में छा रहा है अब जो कुछ तुम्हें कर्ना हो सो कीजिये दुश्मन तुम्हारा कोई नहीं ॥

राजा ने यह सुनकर पंडितों से कहा कि अब तुम बताओ कि किस विधि से सम्बत बांधें जो कुछ शास्त्र की रीत से मुनासिब हो तिस तरह से हमें कहो तब पंडितों ने कहा पढ़े तो अजीत माला पहनो फिर उस के बज़द देश देश के ब्राह्मण और ज़मीन्दार राजे और अप्पे सब कुम्बे के लोग बुलाओ सवा लाख कन्या दान और गौदान सवा लाख ब्राह्मणों को करो और जित्ने ब्राह्मण तुम्हारे मुल्क के हैं उन की वृत्ति कर दो एक बरस का खज़ानः ज़मीन्दारों को मुज़ाफ़ करो और जो भूखा कंगाल इस बरस में आवे उस की वृत्ति का हुक्म करो ॥

इसी तौर से राजा ने सब काम किया और सिवा उस के जो जो दान पुण्य किया उस का बयान किस से हो एक बरस तक राजा अप्पे घर में बैठा पुराण सुन्ता रहा और इस तरह से सम्बत बान्धा कि तमाम दुनिया के लोग धन्य धन्य कर्ते थे ॥

यिह सब अहूवाल रत्नमंजरी ने सुनाया और राजा बिक्रमाजीत का जस गाया और कहा राजा भोज जो तुम इत्ने हो तो इस सिंहासन पर बैठो मुन्के राजा ने कहा सच है जो कुछ तू ने कहा यिह बात मेरी भी पसन्द आई इत्ना कहकर राजा अपनी सभा में बैठा दीवान मुतसद्दियों को बुलाया कि तुम सब तैयारी सम्बत बान्धे की करो उस दिन की वह साज़त यूं टल गई राजा ने दूसरे दिन फिर सिंहासन पर बैठने की तैयारी फ़र्माई दीवान को बुलाकर कहा तुम सब इस की तुर्त तैयारी करो देर नहो ॥

यिह बात सुन्कर बररुच पुरोहिन बोला राजा अभी क्यूं घब्राते हो यिह एक एक पुतली तुम से बात करेगी उन्ह की बातें सुन्कर जो कुछ कर्नी होगा सो कीजियो यिह सुन्कर राजा ने चाहा सिंहासन पर पांव बढ़ाकर रखे कि

दूसरी पुतली चित्ररेखा बोली

राजा तेरे जोग यिह आसन नहीं है और ऐसो अनोति कोई कर्ती नहीं जैसे तू कर्ने पर तैयार हुआ है इस सिंहासन पर बैठे वह जो बिक्रम सा राजा हो तब

राजा बोला बिक्रम में क्या गुण थे सो मुझ से कह तब वह बोली ॥

एक दिन राजा बिक्रम कैलास को गया और वहां एक जती से मुलाकात हुई उस ने राजा को जोग की रीत सब बताई राजा ने अपने जी में इरादः किया कि जोग कमावें जोग करने को तैयार हुआ राज तिलक भरथरी को दिया राज पाट पर उसे बिठा आप राज काज धन दौलत छौड़ कन्या पहन भसम लगा संन्यासी बन्कर जंगल को निकल गया और उत्तर खंड में जाकर जोग साधने लगा ॥

उस शहर के जंगल में एक ब्राह्मण भी तपस्या कर्ता था धूआं पीके रहता था और भूख प्यास के दुख सूहा था ब्राह्मण की तपस्या देखके देवते खुश हुए बर उसे देने लगे और उस ने न लिया तब आकाश बाणी हुई कि हम अमृत भेजते हैं सो तू ले ॥

एक आग्नी की सूरत में आकर देवता उसे फल दे यह कह गया जो इस को तू खावेगा चिरंजी होगा फल लेकर वह तुरंत चला खुशी खुशी अपने घर को आया ब्राह्मणी के हाथ में वह फल दिया और कहा आज देवतों ने अमृत

फल मुझे देकर कहा जो इसे खावेया अमर होवेगा यह बात सुनकर ब्राह्मणी व्याकुल हो रोने लगी फिर बोली यह अब दुख और पाप हम किस तरह काटेंगे और हमेशा भीख क्यूंकर मांगेंगे खाल भास सब हाड़ में मिल जायगा ऐसे जीने से मर जाना बहिर है मर जानेवाले को इतना दुख नहीं होता ॥

इस फल को वह खावेगा जो हमेशा दुख उठावेगा इस से जोग यह है कि तुम यह फल ले जाकर राजा को दो और उस से कुछ धन लो यह सुनकर ब्राह्मण अपने जी में समझा यह सच है इस संसार में इतना जंजाल कौन सहे इसी तरह आपस में बातें सलाह का कर्के ब्राह्मण वहां से राजा के पास चला जब राजा के द्वारे पर पहुंचा द्वारपाल से कहा राजा की खबर दो ब्राह्मण आप के लिये एक फल लाया है ॥

दरबान ने राजा से जाकर अर्ज़ की महाराज एक ब्राह्मण फल आप की खातिर लाया है और दरवाजे पर हाज़िर है जो कुछ हुक्म हो राजा ने उसी वक्त हुक्म किया उसे अभी लाओ अह्म कारों ने वींहीं हाज़िर किया ॥

ब्राह्मण ने राजा को आकर आसीस दी कि धर्म लाभ हो और वह फल राजा के हाथ दिया राजा ने उस को हाथ में लेकर पूछा इस का वृत्तान्त कहो तब ब्राह्मण कहने लगा स्वामी मैं ने जो तपस्या की थी सो देवतों ने उस का वर अमर फल दिया मैं अमर होकर क्या करूंगा इस फल को तुम खाओ और अमर हो इस वास्ते कि तुम से लाखों जी पल्ले हैं ॥

यिह सुन्कर राजा हंसा उसे लाख रुपै दिये और गांव वृत्ति कर्के बिदा किया फिर जी में बिचार करने लगा मैं तो पुरुष हूं कम ज़ोर न हूंगा यिह फल रानी को दिया चाहिये वह मेरे प्राण का आधार है वह जीती रहेगी तो मैं सुख भोग करूंगा ॥

यिह दिल में ठान्कर राजा महल में दाखिल हुआ फल रानी को दिखाया रानी हंस्कर पूछने लगी महाराज यिह क्या चीज़ है जिसे बड़े जतन से लिये हुए तुम आये हो इस का ब्योरा कहो तब राजा ने कहा सुन सुन्दरी तू जो इस फल को खायगी सदा जोबन्वती रहेगी दिन दिन रूप बढेगा और अमर होगी ॥

रानी ने यिह अहवाल सुन्कर फल राजा के हाथ से ले

लिया और कहा महाराज मैं इसे खाऊंगा राजा फल देकर बाहर गया और रानी का जो एक मित्र कोत्वाल था रानी ने उसे बुलाकर वुह फल दिया और कहा यह हमें राजा ने देकर कहा है जो इसे खावेगा सो अमर होगा तुम मेरे प्यारे हो इसे खाओ और अमर हो तो मुझे बड़ी खुशी हो सुन्ते ही कोत्वाल ने खुश होकर फल हाथ से ले लिया और अपने मकान को गया ॥

एक कस्बी उस की आशूना थी उसे फल देकर कहा यह अमर फल मैं तेरे वास्ते लाया हूं तू इसे खा यह सुन्कर उन्ने हाथ से ले लिया और उसे बिदा किया फिर अपने जी में बिचारा एक तो मैं कस्बी हूं और अमर हूंगी तो कित्ते पाप मैं कमाऊंगी इस से बिहर यह है कि यह फल राजा को जाकर दीजिये जो राजा जियेगा तो मुझे याद करेगा और पुण्य होवेगा पाप सभी कटेंगे ॥

यिह सोचकर राजा के दर्बार में गई वुह फल राजा के हाथ दिया राजा फल को देखकर बेसुध हुआ अपने दिल में कहने लगा कि फल तो मैं ने रानी को दिया था जी में यह बिचारा और हंस्कर उसे पूछने लगा यह फल तुझे किन्ने दिया वुह बेस्वा सब बातें जानती थी पर राजा

से फ़क़त यह कहा कि मुझे कोत्वाल ने दिया है वह सुन्कर यह समझा कि रानी ने बुरा काम किया ॥

उसे कुछ रूपे देकर बिदा किया और आप भैचक रह गया फिर समझकर कहने लगा मैं ने तो मन अप्ना रानी को दिया और उस ने अप्ना दिल कोत्वाल को मन का भेदी कोई न मिला ऐसे जीने को और मेरी बुध को धिक्कार है जो मैं फिर राज करूं और फिट उस रानी के तई और लज़्ज़त उस कोत्वाल को और उस बेस्वा को और धिक्कार है कामदेव को जो यह मत संसार की कती है कि जिस से संसार अहमक हो जाता है बज़द उस के फल लिये हृष्ट महल में गया ॥

अपने चित में कहने लगा यह तन मन और जी और धन सब चंचल हैं और यह संसार जान्हार है इन्हों में से कोई काइम न रहेगा जब ही पैदा हुआ तब ही काल ने खाया और जब मर्ती है तो कुछ साथ नहीं ले जाता और मेरा मेरा कर्के जन्म गंवाता है सुख के सब साथी हैं और दुख कोई नहीं बंटाता यह संसार जो है समुद्र है और माया उस का जल है होखा मछी है ऐसा बधिक कोई न मिला जो उस को मार के खाय ॥

यूं बिचार कती हुआ रानी के पास गया और उस से पूछा तू ने वुह फल क्या किया तब वुह बोली महाराज मैं ने खाया सुन्कर राजा ने वही फल रानी को दिखाया वुह देखकर ज़र्द हो गई तब राजा उस को लेकर बाहर आया धोकर खाया तिस पीछे सोच उस को हुआ निदान बन के जाने का सामान किया राज पाट धन दौलत और रानी की मुहब्बत तज्कर चला न किसी से पूछा न किसी को साथ लिया ऐसा निर्मोही होकर निक्ला कि किसी का ध्यान न किया ॥

देश देश और नगर नगर में चर्ची पड़ा कि राजा भरथरी राज तज्कर जोगी हुआ और यह बात उड़ती उड़ती राजा इंद्र के अखाड़े में पहुंची कि वुह तो देश छोड़के गया और उस के देश में बड़ा हुल्लड़ हुआ तब यह बात सुन्कर सब देवतों ने मिलकर यह बिचार किया कि एक देव को रखवाली के वास्ते राजा भरथरी के देश में भेज दो कि कोई बिद्वज्जत रहेयत पर न करे देव को बुलाकर वहां भेज दिया और कहा वहां की निगहबानी कर ॥

यहां तो वुह रखवाली कती था और वहां राजा बिक्रम

का जोग पूरा हुआ वह अपने मन में मन्सूबः कर्ती था कि मैं छोटे भाई को राज दे आया हूँ चल्कर देखूँ कि वह किस तरह राज कर्ती है यह अपने दिल में कहके चला और रात को अपने नगर के पास आन पहुंचा देव ने उसे आते देखा तब वह पुकारा तू कौन है जो इस वक्त शहर में जाता है या तो अपना नाम बता नहीं तो तुझे मैं मार डालूँ हूँ तब उन ने कहा मैं राजा विक्रम हूँ तू कौन है कि मुझे टोक्ता है ॥

देव बोला मेरे तई देवतों ने भरथरी के राज की रखवाली को भेजा है राजा ने पूछा भरथरी क्या हुआ उन ने जवाब दिया भरथरी को कोई यहां से छल्कर ले गया यह बात सुनकर राजा हंसा और उसे कहा वह तो मेरा छोटा भाई है फिर दैयत बोला मैं नहीं जानता कि तुम कौन हो और जो तुम विक्रम इस देश के राजा हो तो मुझ से लड़ो और मुझे मार्कर जाओ बिना लड़े मैं तुम्हें शहर में नहीं पैदने दूंगा ॥

यह सुन राजा बिगड़के बोला तू मेरे तई क्या उराता है और जो लड़ा चाहे तो तैयार हो इस तरह दोनों बातें कर तैयार हो लड़ने लगे और राजा उस देव को पछाड़कर

छाती पर चढ़ बैठा तब वह बोला राजा तू मुझ से बर
मांग मैं तुझे जी दान दूं ॥

यिह बात उस की सुनकर राजा हंस्कर बोला मैं ने तुझे
पछाड़ा है और चाहूं तो मार डालूं तू मुझे जी दान क्या
देगा तब वह बोला राजा तू मुझे छोड़ दे मैं तेरे आगे इस
का सब ब्योरा कहता हूं ॥

तेरे राज की धूम सब देश में है और सब राजा तुझ से
उर्ते हैं पर मैं जो बात कहूं सो तू कान देके सुन तेरे शहर में
एक तेली है और एक कुम्हार सो तेरे मारने की फ़िक्र में
हैं पर तुम तीनों में से जो दो को मारेगा वही अचल
राज करेगा तेली तो पाताल का राज कर्ता है और वह
कुम्हार जोगी बना हुआ जंगल में तपस्या कर्ता हुआ अप्ने
दिल में कहता है कि राजा को मारके तेली को तेल के
जले कड़ाह में डालूं और देवी को बल देकर मैं निचिन्त
राज करूं और तेली कहा है राजा और जोगी को मारके
त्रिलोक का राज मैं करूं और तू इस बात को न जानता
था मैं ने इस वास्ते तुझे ख़बर्दार किया तू उन्हें से बचता
रहना और आगे जो मैं कहता हूं सो तू सुन ॥

जोगी ने उस तेली को मारकर अप्ने बस किया है सो

तेली एक सिरिस के दरख्त पर रहता है अब वुह जोगी तुझ को नौता देने आवेगा छल कर्के तुझे लेजायगा तू नौता लेकर वहां जाइयो जब वुह कहे कि तू दंडवत कर तब तू कहियो मैं दंडवत कनी नहीं जान्ता मेरे तई एक जहान दंडवत कती है जो तुम गुरु हो और मैं चेला तो मुझे दंडवत कनी बताओ उसी तरह मैं दंडवत करूं जब वुह सिर निहुड़ावे तब तू खांडा मानी कि उस का सिर जुदा होजावे और वहां कड़ाह जो देवी के आगे तेल का खौला होगा उस में उस को और दरख्त से तेली को उतार के दोनों को उसी कड़ाह में डाल देना यह मेरी बात तू गांठ में बान्ध रख इसे हर्गिज़ कभी न भूलना यह बात कहकर वुह देव चला गया और राजा अप्ने महल में आया भोर हुए सारे नगर में खबर हुई कि राजा बिक्रमाजीत आये दीवान मुतसद्दी और सब अधिकार नज़रें लाये तमाम शहर में आनन्द होगया घर घर मंगलाचार होने लगे यहां तो खुशी के नकारे बज रहे थे इत्ने में एक जोगी आया और राजा को आदेश सुनाया एक फल उस के हाथ दिया उन ने हंस्कर वुह फल हाथ में लिया जोगी ने कहा राजा हमारे यहां यज्ञ होता है एक दिन का

तुम्हारा नौता है तब राजा ने कहा हम आवेंगे तुम अप्ने मन में चिन्ता मत करो सांझ हूँ पहुँचेंगे ॥

जोगी यह सुन्तेही ठिकाना बता अप्नी मंढी को गया जब शाम हुई राजा भी खांडा फरी ले तैयार हुआ और किसी से न कहा अकेला चला गया तुर्त जोगी के पास पहुँचा और आदेश कहा जोगी बोला कि देवी के आगे जाकर दंडवत कर जो देवी तुम से खुश हो राजा बोला स्वामी मैं दंडवत नहीं जान्ता कि किस तरह कर्ते हैं जो मुझे बताओ तो मैं करूँ जोगी बताने लगा और जोंहीं सिर झुकाया राजा ने देव की नसीहत याद कर्के एक खांडा ऐसा मारा कि सिर धड़ से जुदा होगया और उसे मारते खत्रः न किया और उस दरख्त से उस तेली को भी उतार दोनों को जल्ले कड़ाह में डाल दिया ॥

तब देवी बोली धन्य है बिक्रम तेरी हिम्मत को मैं तुझ पर बहुत मिहबान हुई तू मुझ से बर मांग और धन्य है तेरे माता पिता को कि जिन के घर में तू ने औतार लिया देवी जब यह कह चुकी तब वे बीर आकर हाज़िर हुए राजा से कहने लगे कि हम आगिया और कोयला दो बीर तुम्हारी खिन्नत को आये हैं जो तुम्हारी

कामना हो सो हम से कहो हम तुर्त पूरी कर दें सब जगह
के जाने की हम कुदरत रखते हैं जल थल मही आकाश में
पवन के रूप होकर जहां कहो हम चले जायें जैसे हनुमान
तुर्त लंका जा पहुंचा वैसे ही हम भी जा सकते हैं ॥

यिह सुन खुश हो राजा ने कहा मुझे तो कुछ काम नहीं
है अगर मेरे तई बचन दो तो मैं देवी से तुम्हें मांग लूं
लेकिन ऐ बीरो जो तुम से बचन देकर निर्वाह किया
जाय तो बचन दो उन बैतालों ने कहा कि अच्छा तब
राजा ने उन्हें को बचन बन्द कर मांग लिया और कहा
जिस जगह मैं याद करूं तुम उस जगह मेरे पास पहुंचना
तब बीर बोले कि राजा तू जिस जगह हमें याद करेगा
वहां हम पवन रूप होकर पहुंचेंगे यिह बात उन्हें से कर्के
राजा घर को गया ये बातें चित्ररेखा पुतली ने राजा
से कहीं कि राजा बिक्रम के ये काम थे इत्ने जोग तो तू
नहीं है ॥

फिर वे बीर राजा के ताबिअ हूए और आगे बहुत
से काम किये जहां बिक्रम को गाढ़ पड़ी वे दोनों आकर
हाज़िर हूए जो कोई ऐसे काम करे तो सिद्ध हो राजा तू
अपने ज़ोर पर गुरूर मत कर तुझ जैसे पृथ्वी में कड़ोड़ो हो

गये हैं इन्ही बात जब पुत्ली ने कही राजा की वुह भी साज़त टल गई तब दूसरे दिन सुबह को राजा ने फिर पाट बैदने की तैयारी की और जोंहीं चाहा कि सिंहासन पर पांव धरे कि

रतिबामा तीसरी पुत्ली

बोली तुम्हारा यह काम नहीं जो इस पर बैठो और मुझ से एक कथा नई सुन लो एक दिन राजा बीर विक्रमाजीत दर्या कनारे एक महल में खल्वत कर्के बैठे थे राग हो रहा था और हर एक रंग की चुहल मच रही थी कि दिल फरेफ़ूतः होजावे और एक से एक सहेली खूब सूरत पास बैठी थी ॥

राजा का दिल वहां बे इख्तियार लग रहा था कि एक पंथी त्रिया संग लिये हुए और उस त्रिया की गोद में एक बालक घर से खड़ा होकर निकले थे दर्या के कनारे पास उसी महल के आकर गुस्से के मारे कूद पड़े मर्द के एक हाथ में हाथ रंडी का और एक हाथ में लड़के का हाथ यों तीनों डूबे लगे तब पुकारे ऐसा धर्मीत्मा कौन है जो इन तीनों आगियों को जानें बचावे उन में से वुह मर्द हाथ कर्के पुकारा जो कोई गुस्सः मार न सके तो इसी

तरह बे अजल मर जाता है और गिर्के बहुत पछताता उस की आवाज़ राजा ने सुन्तेही लोगों से पूछा यह कौन दुखी पुकारती है तब हकीरों ने खबर दी कि महाराज एक मर्द और रंडी लड़के समेत डूबते हैं उन्हें में से वह मर्द चिल्ला रहा है कोई ऐसा पर उपकारी हो कि हम डूबतों को निकाले ॥

यह वह हकीरः कहता ही था कि वह फिर पुकारा हम तीन जी डूबते हैं कोई हमें भगवान का बन्दः पार लगावे यह सुन्कर राजा वहां से धाया और आकर उस दर्या में कूद पड़ा जाकर एक हाथ में रंडी और दूसरे हाथ में लड़के को पकड़ लिया वह मर्द भी राजा से लिपट गया तब राजा घब्राया और आप भी डूबे लगा अप्ने ईश्वर को याद किया और कहा कि हे नाथ मैं धर्म काज के वास्ते आया था और इस में मेरा जी ही जाता है धर्म कर्ते नुक़सान होवे ॥

राजा यह कहकर बहुत ज़ोर कर्ने लगा और ज़ोर उस का कुछ काम न आता था तब उस ने आगिया और कोयला दोनों बीरों को याद किया याद कर्ते ही वे बीर आकर हाज़िर हुए और चारों को उठा कनारे पर रख

दिया तब वह विदेशी राजा के पांवों पर गिर पड़ा कि महाराज तुम ने हम तीनों को जी दान दिया तुम्हीं हमारे भगवान हो क्यूं कि जी दान तुम से पाया ॥

राजा हाथ पकड़कर उन्हें तीनों को रंग महल में ले आया और बिठाकर कहा तुम्हें जो चाहिये सो हम से मांग लो तब वह बोला महाराज हमें हुक्म दीजिये तो हम घर को जायें और जब तलक जियेंगे आप को असीस दिया करेंगे ऐसा कुछ तुम ने हमें दिया है तब राजा ने अपनी तरफ से लाख रुपये देकर उन्हें को घर भिजूवा दिया ॥

इती बात कह पुतली फिर बोली राजा इतने लाइक तुम हो तो इस सिंहासन पर बैठो और यों बैठोगे तो तमाम लोग हंसेंगे वह भी महरत राजा का टल गया दूसरे दिन फिर राजा दिल में सोच कर्ता हुआ सिंहासन पर बैठने को आया तब

चन्द्रकला चौथी पुतली बोली

सुनो राजा तुम मन मलीन क्यूं हो बैठो हमारे पास और सुनो जो मैं कथा कहूं एक रोज़ एक पंडित कहीं राजा बिक्रमाजीत पास आया था और उस ने आकर

बयान किया जो कोई एक महल बनाने की बिना मुवाफ़िक़ मेरे कहने के धरे चैन उठावे और बड़ा नाम पावे तब राजा ने कहा अच्छा ज़ाहिर कर ॥

ब्राह्मण कहने लगा तुला लग्न जब आवे जो उस में मंदिर उठावे जब तलक वह लग्न रहे तब तलक काम उस में जारी रखे और जब तुला लग्न हो चुके तब उस का काम मौक़ूफ़ कर दे इसी तरह तुला लग्न ही में वह सारा मकान तैयारी पर लावे उस का अटूट भंडार हो और लक्ष्मी उस के यहां से कभी न जाय ॥

यिह सुन्कर राजा मन में खुश हुआ दीवान को बुलाया और मंदिर उठाने की इजाज़त दी कि तुम अच्छी जगह ढूंढ़कर महल बनाओ इत्ने में तुला लग्न भी आन पहुंचा उस मंदिर की नेव दी देश देश में यिह आवाई हुई कि राजा तुला लग्न में महल बन्वाता है जितने कारीगर उस में काम कर्ते थे वे उढ़कर तुला लग्न मनाते थे जब लग्न आती थी खुश हो हो बनाते थे कहीं उस में काम सोने का और कहीं रूपे का और कहीं लोहे और काठ का नई नई तरह से बन्ता था ॥

चुनांचि दर्या के कनारे पर वह हवेली बनाई चार

दरवाज़े और सात खंड उस में रखे जगह जगह जवाहिर
अम्बोल उस में जड़े और दरवाज़े पर दो नीलम के बड़े
नगीने लगाये कि किसी की नज़र न लगे वह जड़ाऊ महल
कित्ते बरसों में ऐसा तैयार हुआ कि दुनिया के पर्दे पर किसी
ने दूसा न आंखों देखा न कानों सुना ॥

तब दीवान ने जाकर राजा को खबर दी महाराज
वह मंदिर अब तैयार हुआ आप चल्कर उसे देखिये और
जो कोई उस महल को देखता था मोहित हो रहता था
राजा वहां से भकान देखने को गये एक ब्राह्मण भी साथ
गया महल को जब राजा ने मुलाहज़ा किया तब ब्राह्मण
देखकर और हंस्कर कहने लगा हे राजा ऐसा घर जो मैं
पाऊं तो बैठ यहां पातुर नचाऊं ॥

यिह बात सुनकर राजा ने कुछ मन में सोच न किया
गंगा जल और तुलशी का पत्ता लेकर घर उस ब्राह्मण को
संकल्प कर दिया वह घर पाकर ब्राह्मण को ऐसा हुआ
आनन्द जैसे चकोर रात को पावे है चन्द तुर्त अप्पे वह
कुम्बे को ले आया और वहां आकर रहा रात को खुशी
से पलंग पर सोता था कि पहर रात गये लक्ष्मी आई और
कहने लगी कि बेटा हुक्म दे तो मैं गिरूं और घर बाहर

संपूर्ण भरुं खौफ़ से उस ने कुछ जवाब न दिया तब वह दो
पहर रात को फिर आई और कहा कि हे ब्राह्मण अज्ञानी
मुझे आज्ञा दे ॥

उन्ने चिन्ता कर्के रात गंवाई और सुबह हुए राजा के
पास आया मन मलीन और रात के अहवाल से उरा
हूआ रंग ज़र्द चिहे का और उर से कुम्हलाया हुआ राजा
इस शकु से देख उसे हंसने लगा फिर कहा कि कल की
सी खुशी हम ने आज न देखी हे ब्राह्मण यह अचम्भे की
बात है तब ब्राह्मण बोला सुन स्वामी मेरा दुख और तुम
दाता हो प्रजा के सुख देनेवाले और तुम साके बन्ध नरेश
हो जैसे राजा कर्ण और राजा इंद्र अप्ने वक्त्र में दानी थे
ऐसे इस समें में तुम हो आप ने जो मंदिर मेरे तई दिया
है उस की हकीकत में कूहा हूं ॥

मअलूम नहीं कि उस में भूत है या पिशाच है मेरे तई
उस ने सारी रात सोने नहीं दिया आप के प्रताप से या
लड़कों के भाग से जीता बचके मैं यहां आया हूं इस से
भीख मांग खाना मुझे बिहतर है पर उस महल में न
रहूंगा ॥

यिह बात सुन राजा ने प्रधान को बुलाया और उस

से कहा जो उस मकान में लागत लगी है सो हिसाब कर्के
इस ब्राह्मण को दो राजा की आज्ञा पाय दीवान ने हिसाब
कर तोड़े रूप्यों के लड़ाकर ब्राह्मण के साथ कर दिये और
वुह अपने घर को गया ॥

उस दिन सायंत देख उस हवेली में राजा जा रहा
और बैठकर कुछ बिचार करने लगा इस में हाथ बान्धकर
लक्ष्मी आन खड़ी रही बोली धन्य राजा बिक्रम तेरे धर्म
को इत्ता कह लक्ष्मी उस वक्त तो चली गई राजा ने वहां
आराम किया जब चौथा पहर रात का हुआ तब लक्ष्मी
फिर आई और कहने लगी राजा मैं कहां गिरूं ॥

राजा ने कहा जो तू पड़ा चाहती है तो पलंग छोड़कर
जहां तेरी इच्छा होवे तहां गिर इत्ने में खूब तरह से सोने
का मेंह तमाम नगर में बसी सुबह हुई राजा उठा देखकर
यिह कहने लगा हमारी रड़ेयत पर बहुत सख्ती थी
लेकिन अब कोई दिन निचिन्त हो आराम से रहेगी ॥

इत्ने में दीवान आया और खबर दी महाराज तमाम
नगर में कन्चन बसी है अब जो हुक्म दो सो हम करें
तब राजा ने कहा शहर में ढोल बजवा दो जिस की हृद् में
जो दौलत है सो ले और कोई किसी को मनूँ न करे

यिह राजा का हुक्म पाकर सब रऐयत ने दौलत अप्ने
घर में भरी ॥

ये बातें कहकर पुतली राजा भोज से कहने लगी
सुन राजा बिक्रम के गुण वुह ऐसा राजा था और प्रजा
का हितकारी तू किस तरह उस के सिंहासन पर बैदता
है तेरी क्या जान है यिह सुन्कर बात पुतली की राजा
अज्ञान हुआ और बररुच पुरोहित भी शर्मन्दः वुह साअत
भी गुजर गई ॥

بندہ نواز سلامت

حقیر تراب بیگ کور نشین بجا لاکر گذارش کرتا ہی کہ ان دنوں اس شہر میں
ایک بڑا سا باغ جس میں طرح طرح کی پھول جیسی گلاب یاسمین نرگس
گیندا چنپا شب بو نیلا اور بھانت بھانت کی میوی جیسی سیب ناشپاتی
بھی انار انگور شفتالو پھولتی اور پھلتی ہیں بکاؤ ہی اگر آپ کو خریدنا اُسکا
منظور ہو تو لکھ بھیجی کہ فدوی اُسکی مالک سی قیمت اُسکی فیصل کرکر
حضور عالی میں اطلاع کری

حضرت خداوند نعمت مدظلہ

آپ کی شقی فی شرف وُصول ارزانی فرمایا اور اس فدوی کو سرفراز کیا ایک
پختہ حویلی جو دریا کی کنارے پر بنائی کی لئی حکم ہوا ہی سو بندہ درگاہ
فی نوازش نامہ عالی کی پہنچتی ہی راج مزدور بڑھئی لہار سنگتراش اور چونہ
سرخي اینٹ پتھر و غیرہ لوازم و ضروریات کی لانی اور تیار کرنی کی واسطی
جہان تہان لوگ مقرر کیی انشاء اللہ تعالیٰ تھوڑی دنوں میں حویلی مذکور بن
کر تیار ہوگی زیادہ حد ادب

غریب نواز سلامت

کل بسبب بارش کی مین حضورِ عالی مین پہنچ نہ سکا اور آج مجھی کچھ
ضرور کام در پیش ہی اور کل بھی فرصت نہ ہوگی کیونکہ مجھی کسی
دوست کی یہاں جانا ہی اُمید وار ہون کہ یہ دو دن مجھی معاف رکھیگا
انشاء اللہ تعالیٰ پرسون خواہ مخواہ حاصر ہونگا

زیادہ حد ادب

بندہ پرور سلامت

آپ کا عنایت نامہ مصحوب محمد خان کی پہنچا جو کچھ خانِ مذکور کی
سپارش مین ارقام ہوا ہی سو مفصل اس حقیر کو معلوم ہوا فی الواقع
خانصاحب موصوف نہایت مردِ دانا اور صاحبِ کمال ہیں فدوی انکی ملاقات
سی کمال محظوظ ہوا اس شہر مین کسی شخص سی فدوی کو اتنی انس و
محبت نہیں ہی جتنی ان دو تین ہفتی کی عرصی مین ان سی ہوئی ہی
اکثر ہماری انکی چرچا علمِ ریاضی کا رہتا ہی اور ہر روز باہم تیر اندازی کی
مشق کیا کرتی ہیں انشاء اللہ تعالیٰ یہ خاکسار اپنی مقدور بھر انکی مقدمی
مین قصور نہیں کرنی کا جان و دل سی انکی خدمت کریگا

آپ هي اس بات کا انصاف کيڃي اور دشمنون کي بائون پر دوستون سي
آزرد نهوجي

جداوند نعمت سلامت

کي هفتي هوي که چار هزار ربي اس پرگني کي محصل کي بابت شيخ امام
بخش جمعدار کي معرفت حضور پر نور مين بهيجي هين اور ابتک رسيد
اسکي حضور فيض گنجور سي اس فديو گو نهين پهنجي اس لي کمال
تشويش لاحق حال هي اميد که جلدي سي دو کلمي مبلغ مذکور کي رسيد
مين ارقام فرماي که اس خاکسار کي خاطر جمع هو

ميري مهربان خدا تمکو سلامت رکهي

مدت کي بعد تمهرا خط پهنچا اور اسکي پڙهني سي بڙي خوشي حاصل هوي
شيخ امام بخش کي تقصير معاف کړي کي لي جو کچه که تمنی لکها تها معلوم
هوا اگرچه شيخ مذکور واجب القتل هي اور خيانتين اسکي بيان سي باهر
بهت سا رپيا پرگنون کي آمدني مين سي تصرف کيا هي پر از بسکه تمهاري
خاطر عزيز تهې تقصير اسکي معاف کړي مين آي

بعضي خطون کي نقلين نوسڪھون کي فائدي کي واسطي

دوستون کي نوازش فرمائي والي سلامت

شوق ملاقات کا آيسا نهين هي جو لکھني کي قابل هو خدا کي درگاه مين رات
 دن دعا مانگا کرتا هون که کوي آيسا سبب هو جس سي جلدي خيرو خوي کي
 ساتھ ديدار آپ کا ميسر آي جناب عالي سي توقع يون هي که هميشه ملاقات
 کي حاصل هوني تلک اس دوستدار کو خط لکھا کرين اور جو کچھ کام خدمت
 اس ملک مين هو يي تکلف تحرير فرماوين که مين اپني سعادت جانکر اسکو
 بجا لاؤن

حضرت سلامت

مہینون برسوں گذر گئي که آپ ني کوي خط مجھي نهين لکھا اس لي مين
 حيران تھا که اتني نامهرباني کا سبب کیا هي آخر لوگون کي زباني معلوم هوا که
 بعضي دشمنون ني کچھ افترا لگا کر آپ کي مزاج کو پھيرا هي خدا شاهد هي که
 مين ني کبھي آيسي بات نهين کہي هي تعجب هي که آپ ني آيسي جھوٹي
 بات کو باور کر ليا اور اس قديم دوست کو دشمن تصور کیا اُميد وار هون که

- ایک نقل آري هي مجھي اب ياد “ سچ هو وه يا کسيکا هو ايجاد “
- ایک ملا بعهد شاه جهان “ نه تو عالم تھا وه نه هيچ مدان “
- بين بين اسکو کچھ آتا تھا “ لڙکي مکتب مين وه پڙهاتا تھا “
- بسکه تھا وه شعور سي معذور “ لڙکي اُسي تهي خرم و مسرور “
- اُس سي دهشت کو تهي نه دل مين راه “ صحن مکتب تھا اُنکي باز يگاه “
- ایک جو اُن مين تھا فهم و ذڪي “ مصلحت اُتي لڙکون سي يون کي “
- يارو هم کھيلي سو طرح کا کھيل “ ديکھي هم ني سڀي وه بيجا کھيل “
- کھيل اب مين نيا نکالا هي “ ساري کھيلون سي وه نرالا هي “
- لڙکي بولي که بهائي جي فرماو “ کيا هي وه کھيل تم همين بهي بتاو “
- کها اُن ني که بادشاه و وزير “ لڙکي جو بنتي هين صغير و کبير “
- اُس مين چندان تو يارو لطف نهين “ کھيل اُس سي به خوبتر هي کھين “
- مياڻجي کو کسي طرح بهلاو “ ملڪي شاه جهان سب اُنکو بناو “
- هنسکي وه بولي هوئي به کس طرح “ کها اُتي که تم سُنو اس طرح “
- صبح مکتب مين پڙهني جو آوي “ منهن مياڻجي کا تک کي ره جاري “
- پوچھين جو کيا هي ديکھني کا سبب “ کهي قدرت خدا کي ديکھون هون اب “
- هو گئي شب مين آپ کي صورت “ کچھ سي کچھ حق کي هي به کيا صنعت “

ورنه ڪرڻا پوڄ گوئي هر دڻنگ “ رفته رفته شاعري هو جاتي ننگ “
 تب جو مڻن شلاق کي ٻه خام تها “ اب جو آيا لائق انعام تها “
 قصه ڪوته تهي مميز درميان “ ننگ هي گرم مزابل پر ٻي يان “
 بي تميزي سي هي راڻج اٿري “ جسکو ديگهو خود نمائي خود سري “
 في بيان کا هي سليقه في زبان “ اسپر هي هر ايک سحاب بيان “
 بس قلم وقت زبان بازي نهين “ چپ که دوران سخن سازي نهين “
 کون حرف خوب کو ڪرڻا هي گوش “ بات کي فهميد کا هي کسکو هوش “
 بي تميزون سي بهرا هي سب جهان “ هي دماغ حرف همکو بهي کهان “

ٻه مثنوي انتخاب کي گئي هي کليات مرزا محمد رفيع سودا مين سي

مرزا فاخر مڪين کي هجو مين

لوگ ڪهتي هين که ايک شخص نقل ڪرڻا تها که مرزا فاخر مڪين صاحب اپني تين
 شيخ علي حزين کي برابر جاتي هين اور سب وضع انکي نشست و برخاست کي
 اختيار کي هي بلڪه اپني تين فضل و کمال مين ان سي بهتر جاتي هين اور انکي
 اکثر اشعار پر اصلاح کي هي چنانچه ٻه مثنوي حسب حال مرزا صاحب کي هي

“صُحبت اڪثر رڳھون اُس اُستاد سي “ شايد اُسکي دولت ارشاد سي “
 “پهڻجي اڪ رڻبي ڪو ميري قيل و قال “ هو مڃي اس فن مين يڪ گُونه ڪمال “
 “اڻه ڪي آيا مولوي جامي ڪي “ مشق ڪي يڪ چنڊ اُس نامي ڪي “
 “جب هوا کڄهه شعر ڪا رتبه بلند “ اور مولانا لڳي ڪرني پسند “
 “پهر ڳيا اڪ دن در دستور پر “ حاجب درگاه ني ڪي جا خبر “
 “ڪاي امير اُس روز ڪا شلاق خوار “ آج در اوپر هي پهر خواهان بار “
 “ڪي اشارت سد ره ڪوئي نهو “ قصد هي بر خورد ڪا تو آئي دو “
 “سامني آيا تو ڪي نيچي نظر “ دھوپ مين جلتا رها تو اڪ پهر “
 “بعد از آن ايماي ابرو ڪي ڪه هان “ صحن هي مين سي هوا وه مدح خوان “
 “پهر وهين سي دي صله رخصت ڪيا “ اڪ مصاحب ني جگر ڪر ڪها “
 “اڳلي صُحبت ڪي تهِي عزت اسقدر “ سو هوئي شلاق حد سي بيشتري “
 “ابڪي اُسکو جائزه دي ڪر گران “ تو ني فرمايا مرخص وان سي وان “
 “مين نه سمجها يه ڪه وه ڪيا تها يه ڪيا “ در جواب اُس برگزیده ني ڪها “
 “ايسي هي هوتي هين تصحيڪ سلف “ دست هو تو اُنڪتين ڪرني تلف “
 “اسقدر اُسکا تنبه تها ضرور “ تا ڪه پهڻجي يه خبر نڙيڪ و دور “
 “جو سني سو خود سري سي باز آئي “ تربيت هونيڪو اُستادونڪي جائي “

حکایت

- شایق فن تها وزیر اصفهان “ ایک دن آیا هلالی اُسکی یان “
- حاجبان درسی هو آگاه کار “ کی اشارت تا اُسی دین گهرمین بار “
- عزت و تعظیم کی حد سی زیاد “ پاس لی مسند په بیٹھا شاد شاد “
- اُنی کھینچی اُسکی مرزائی بہت “ بیٹھی بیٹھی رات جب آئی بہت “
- شعر کی تقریب لاکر درمیان “ گرنی لاگا شاعری کا امتحان “
- شعر خوانی کی پڑھا سو تها غلط “ سُنئی ہی بھڑکا وہ سُعلی کی نمط “
- غصی هو بولا کہ هان فراش و چوب “ کھینچ لا میدان مین کی شلاق خوب “
- اس قدر مارا کہ بیدم هو گیا “ سوج دست و پا هر اک تهم هو گیا “
- کھینچ کر ڈلوا دیا دربار مین “ یہ خبر پہنچی جو هر بازار مین “
- وارث اُسکی لیگی آرات کو “ جب بخود آیا تو پایا بات کو “
- یعنی دستور زمان دشمن نہا “ یا وہ کچھ نا آشنای فن نہ تها “
- غالباً پایا غلط اشعار کو “ خوش نہ آیا اُس کرم کردار کو “
- ور نہ شبوہ اُسکا ہی لطف و کرم “ جایزی مین دی ہی دینار و درم “
- مُجکو کیون شلاق کرتا اتنی شب “ گاهی کو بد نام هوتا یی سبب “
- پس مجھی ہی تربیت اپنی ضرور “ جاکي بیٹھون اک سرآمد کی حضور “

ٺٽُ نه استعداد سي ڪي ڳڻڻو “ ڪجهه نرڪي شاعري ڪي آبرو “
 چار سگهيان ڪه ڪي دين ناکس ڪي هاتھ “ پهر اسي مجلس مين لائي اپني ساٿھ “
 آپ بيٺي صدر مين وه دست چپ “ ڪرني لاڳي شاعري سي حرف وڳپ “
 بولي اُنڪو آڄ ڪل سي هي خيال “ ڏهن اُنڪا تيزي رکھتا هي ڪمال “
 هو رهينگي ڪجهه اگر صحبت رهي “ اور همسي بهي انهن اُلفت رهي “
 جب هوا ثابت وه اُنڪا مستفيد “ سب في جانا اُسکو شاگرد رشيد “
 ڪي اشارت تا ڪه وه ڪهولي دهن “ آڳي اُستادون ڪي هو گرم سخن “
 اُنڪي ايماء سي وه ڪجهه پڙهني لگا “ صاحبان فن ڪي منھ جڙهني لگا “
 نيم قد اُٿھ اُٿھ ڪي ي سني لڳي “ جا و بيجا سر ڪي تين دھتي لڳي “
 وه سراپا جهل ناگھ وقت کار “ همسي همسي ڪرني لاڳا اعتذار “
 سر مين رکھ ڪر دعوي طبع لطيف “ مير و مرزا ڪا هوا آخر حريف “
 ڪيسي ڪيسي يون گين طبعين به باد “ آفرين شاگرد و رحمت اُستاد “
 جب تلڪ يان تهئي تميز زشت و نيڪ “ ڪاهي ڪو يون شعر ڪھتا تها هر ايڪ “
 اهل فن ڪي رھتي تهئي سبکو تلاش “ اُنڪي هان ڪرني تهئي جاکر بود و باش “
 جو ڪه خود سر رکھتي اُستادون سي عار “ اُنڪي تين هرگز نهوتا اعتبار “
 زندگي بلڪه انهن پر شاق تهئي “ هاتھ گر لڳ جاتي تهئي شلاق تهئي “

صُحبتين جب تھين تو ٻيہ فن شريف “ کُتب کُرتي جنکي طبعين تھين لطيف “
 تھي مُميز درميان انصاف تها “ خار و خس سي کيا ٻيہ عرصہ صاف تها “
 دُخل اس فن مين نٽها اجلاف کو “ کُچھ بتاتي تھي ٻيہ سو اشرف کو “
 تھي جو اُس آيام مين اُستاد فن “ نا کسون سي وي نکر تي تھي سُخن “
 پھر حُصول اُسي نہ دُنيا هي نہ دين “ کوئي حاجت اُسي وابستہ نہين “
 گر چمار اس کار خاني مين نہ هو “ ٿوڻي جو تي کو کھان ليکر پھرو “
 چار و نا چار اُس کني جانا پڙي “ کوڙيان دي جو تي گُڻھوانا پڙي “
 حاجت اس فرقي سي يان مُطلق نہين “ جو نہو شاعر تو کُچھ نقصان نہين “
 ٻيہ تو دُنيا مين هي اس فن کا کمال “ دين کا اس فرقي کي پوچھو نہ حال “
 کذب هو جس جاي رونق بخش شمع “ ڏھانکي دينداري رڳھو اوردل کو جمع “
 جھوٽ آوي اسقدر جب درميان “ کو يقين ايمان کيسا دين کھان “
 هم تلک تھي ٻيہ وهي رسم قديم “ يعني جنکي هو تي تھي ذھن سليم “
 پيار کُرتي تھي اُنھين اُستاد فن “ اُنکي هو تي رھبر راہ سُخن “
 جلف وان زَنهار پاتي تھي نہ بار “ شاعري کاھيکو تھي اُنکا شعار “
 نڪتہ پردازي سي اجلافون کو کيا “ شعر سي بزازون نذافون کو کيا “
 الغرض يارون في دين قيدين اُڻها “ جو کوئي آيا اُسي دي پاس جا “

پہ مشنوي انتخاب کي گئي هي ڪتاب سحر البيان مين سي

تعريف سخن کي

پلا مڃهه ڪو ساقي شراب سخن “ ڪه مفتوح هو جس سي باب سخن “
 سخن کي مڃهي فگر دن رات هي “ سخن هي تو هي اور ڪيا بات هي “
 سخن کي طلبگار هي عقل مند “ سخن سي هي نام نڪويان بلند “
 سخن کي ڪرين قدر مردان ڪار “ سخن نام ان ڪا رکهي برقرار “
 سخن سي وهي شخص رکهي هي ڪام “ جنهن چاهي سانه نيڪي کي نام “
 سخن سي سلف کي بهلاي رهي “ زبان قلم سي بڙاي رهي “
 ڪهان رستم و گيو و افراسياب “ سخن سي رهي ياد په نقل خواب “
 سخن ڪا صلہ يار ديتي رهي “ جواهر سدا مول لتي رهي “
 سخن ڪا سدا گرم بازار هي “ سخن سنج اس ڪا خريدار هي “
 رهي جب تلک داستان سخن “ الهي رهي قدر دان سخن “

پہ مشنوي مسمل به تنبيه الجہال انتخاب کي گئي هي ڪليات مير تقی

مين سي

سرڪارين آڻهه اور چهتيس تومان آمدني باره ڪروڙ پينسٿه لکھه اور آڻهه هزار
 دام بالجملهه ليکن ايڪ مدت سي ڪابل و ڪشمير مين شاهه دراني ڪا عمل هي
 اور لاهور مين سگھون ڪا چنانچه بالفعل ڪه سن باره سي بايس هجري هين
 صوبه مذڪور ڪا حاڪم رنجيت سنگھ هي اور سن باره سي اٺهاره هجري سي
 صوبه اڪبر آباد و شاهجهان آباد مين بموجب مرضي ظل الله شاه عالم
 بادشاهه صاحبان عاليشان في عمل ڪر ليا سابق اس سي مهاراجا دولت راو
 سيندهيا بهادر ڪا تها چنانچه جرنيل ليڪ بهادر دام اقباله في اسڪي سرداران
 فوج ڪي لڙاين مارين بلڪه قلعي بهي ان سي چهين لئي اور اسي سن سي
 صوبه اڙيسه بهي مواليان ڪمپني بهادر دام ظلهم ڪي قبضي مين آيا آگي
 اسڪي رگھو جي بهونسلي ڪا اس مين عمل تها وهانڪا بند و بست ڪرنيل
 هاڪت بهادر في ڪيا قصه مختصر ولايت هندوستان ايڪ مدت سي طوائف
 الملوك هي جس شخص ڪي جو ملڪ هاتھ لگا اس پر اُسي قبضه ڪر ليا
 بادشاهه ڪا ڪسي في پاس نڪيا هان ايڪ صاحبان عاليشان في اطاعت و خدمت
 ترک نهين ڪي چنانچه اب بهي ڪه سن باره سي بايس هجري هين اور اڪبر
 شاه ابن شاه عالم بادشاهه هي في الجملهه اسڪي بندگان بجا لاي هين اور
 اطاعت سي هاتھ نهين اُٿهائي

لشکرونیکی اور کاروانونکی اسی راہ سی ہی خصوصاً دھکی سی تا بملہ بتیس
 کوس تلک نہایت ہموار اور بملی سی تا کابل چالیس کوس بھی چندان
 دشوار نہیں ہرچند ٹیلی رستی میں پڑتی ہیں پر مسافر بہت تصدیع نہیں
 کھیچتا قصہ مختصر کابل کی چار طرف گھاٹیان ہیں بنابر اسکی فوج غنیم
 کی ایک ایک آ نہیں سکتی اور دفعۃً ملک مذکور کو قبضی میں لا نہیں
 سکتی اگرچہ یہ صوبہ چندان حاصل نہیں رکھتا لیکن عقلمندوں کی نزدیک
 دروازہ ہند کا ہی اسی سبب سرکار والا سی وہاں کی سپاہ کی لپی مبلغ
 خطیر پہنچتی تھی کہ ہر ایک سپاہی و سردار گذران اپنی بجوئی کری اور
 کسی وجہ سی تصدیع نکھیچی کیونکہ بسبب اسکی ایران توران کی فوجیں
 مملکت مذکور پر آتسکتی تھیں سنا ہی کہ اگلی زمانی میں کابل جو ایک
 بادشاہ کی قبضی میں آگئی تھی تو پنجاب بہت آباد ہوئی تھی اور
 ہندوستان مائون طول اس صوبی کا اٹک بنارس سی ہندو کوہ تلک ڈیڑھ
 سو کوس عرض قرا باغ قندھار سی تا چغان سرا سو کوس شرق رو اسکی دریای
 سندھ مغرب رخ غور شمالی اندراب و بدخشان و ہندو کوہ جنوبی قریل و
 نغز اور گردا گرد پہاڑ زمین مسطح و ہموار بہت کم لیکن کھیچیان سب جاگہ

نقیر آرایش محفل In the written

و ملتان کي حدون سي تا سواد که حدود کافرستان و کاشغر سي ملا هوا هي
 تين سي کوس تلک بستي هين اور اشخاص انکي کوهسار دشوار گذار کي
 اترلي سي بادشاهي امرا کي آگي سر نهين جهکاتي بلکه کچه ربي صوبي دار
 سي بطريق انعام اور مسافرون سي گهوڙي اونٺ پيچهي بطور راهداري کي
 لتي هين با وجود اسکي کهي کهي مال و اسباب کاروان و غيره کا لوٺ
 بهي لتي هين اور ايسي ويسي مسافرون کو پکڙکر غلام بناتي هين بلکه بغضي
 اوقات بيچ بهي ڏالتي هين غرض اور اقوام مين چور کمتر هوتي هين اور
 افغان سب کي سب چور اور مٿه مرد لطف يه هي که تمام شهر کابل
 انهن سي متعلق هي اور پيشاور سي تين راهين کابل کو جاتي هين ايک
 راه بنگشات کي پر دور دراز سواي اسکي رستي بهي اوبهت لشکر ادھر سي
 بهت رنج کهيچکر منزل مقصود کو پهچتا هي دوسري کهي کي مگر جلال
 آباد پهچکر شاه راه ملتي هي يه بهي درون کي تنگي نشيب و فراز کي
 صعوبت پاني کي قلت افغانون کي لٿس سي خالي نهين تيسري راه علي
 مسجد و خير کي چشمه جمروڊ سي دهکي تلک نيلاب کي کناري دري سي
 تيره کوس ليکن دره خير سي دو کوس تک بسبب نشيب و فراز کي
 بدشوار طي هوتي هي پر به نسبت اور راهونکي سهيل چنانچه آمد و شد

لاتيان صاحبِ خلاصه آلتوارينج لکھتا هي ڪه مڻن في بعضي رنڌيون ڪو ديکيا
هي ڪه ايڪٽ خصم ڪو چھوڙا آور وٺين ڏوسرا ڪر ليا غرض اٺي مدتِ عمر
مڻن پنڌره ٻيس خصم تڪ ڪر لينا اُن سي دور ٺهين قصه ڪوتاه اس صوبي
مڻن ڪثرت هزاره آور افغان ڪي بهت هي ليڪن هزاره مغل اٺي تين اولاد
جغتائي خان بن جنگيز خان ڪي جانتا هين آور غزنين سي تا قندهار تومار
ميدان سي تا حدود بلخ محال دُشوار گذار و جبال پيچ دار مڻن رھتي هين
اڪثر مڪان اُنڪي بادشاهون ڪي عمل سي خارج آور حاڪمون ڪي احاطه
حڪومت سي ٻاهر آور افغان اٺي تين بني اسرائيل ڪي اولاد ڪھتي هين اُنڪي
جد بزرگ ڪا نام افغان تها اُسڪي تين ٻيئي ايڪ ڪا نام ترين ڏوسري ڪا
غرغشت تيسري ڪا مڻن ان تين ڪي اولاد بڪثرت هوئي آور هر ايڪ اٺي
جد و آبا ڪي نام سي مشهور هوا اُلوش تريني بربخ ميانه خرسين اوڻوڪاسي
جمند شيراني خويشگي داود زِي يوسف زِي خليل مھمند اٺي نسب ڪا
سلسله ترين ڪو پھنجائي هين آور سوراني جيلم ادڪ زِي آفريدي ختڪي ڪراني
ڪاڪري عبدالرحماني غرماني تارن غرغشت ڪو آور شيرزاد خضر خيل غلزي لودي
لوھاني سوري شرواني ڪھڪوري مڻن ڪو آور قومين اُنھين ڪي اولاد هين الغرض بي
سب قومين دريائي سنڌه سي ڪابل تلڪ سو ڪوس ڪي عرصي مڻن آور قندهار

و قیسی و مرزائی خربوزون میں کوک نبات † و ماہتابی و ناشپاتی و عُشری † و
دود چراغ نہایت لذیذ و خوش ذائقہ اور غلی کی اقسام میں جو گیہون
زیادہ لیکن جو زراعت کہ ندي نالون سی متعلق ہی اُسکا تیسرا حصہ سرکار
میں داخل کرتی ہیں اور کاریزی سی دسوان انگور و بادام سی بھی کچھ نقد
بطریق محفہ لیکن سردرختی کا حاصل معاف اور کُسم کی پھولون کی حاصل
سی قدری قلیل بھی نہیں دیتی مگر اُسکی بیجوں سی تیسرا حصہ باشندی
اُس ملک کی سمرقند و بخارا کی ساکنون کی مانند پرگنی کو پنجاب اور
قریبی کو تومان کہتی ہیں با وجود اُسکی ساکن اس صوبی کی گیارہ زبان جانتی
ہیں ہندی و فارسی و مغلی و ترکی و افغانی و لمغانی و عربی و غیرہ اور مغل
خاص نواح کابل میں رہتی ہیں لیکن حاکم کی آگي دست بستہ حاضر اور
مال گذاری میں بی عذر طرفہ تر یہہ ہی کہ عورتیں انکی مردون پر غالب
چنانچہ نکاح کی وقت منجملہ مہر ایک امر محال لکھوا لیتی ہیں کہ مرد
اُسکی عہدی سی کہو نہ نکلی یہہ شیوہ صاحب عصمت بی بیون اور پردہ
نشینون کا ہرگز نہیں سوائی اُسکی اپنی طور پر باغونکی سیر کو اور حمام
میں نہائی کی لپی جاتیان ہیں خاوند کو اصلاً و مطلقاً خاطر میں نہیں

† علی شیري Or † کوکر نبات Or †

غرض یہ تومن سب کا سب مسکن افغانوں کا ہی خصوصاً مہمند و غیرہ
ایک مال گذار ہیں بغي نہیں * پیشاور قدیم شہر ہی کتب قدیم میں
اُسکو پرشاور اور فرشاور بھی لکھا ہے نزدیک اُسکی * گورکھتری ایک
پرستشگاہ جوگیوں کی مشہور تھی شاہجہان کی وقت میں مسمار ہوئی لیکن
پانچ تیرتھ اور نہت دلکشا وہاں عالمگیر کی عہد تلک تھی بیشتر جوگی
سناسی بیراگی سواي انکی اور بھی اتیت وہاں ایک تالاب کی گرد حویلیاں
بیٹھکی بنا بنا رہتی تھی * تومن بنگشات ملتان کی سمت واقع ہے
آبادی اُسکی وسعت کی ساتھ لیکن پٹھانوں کی قومیں اُس دیار میں اکثر
ہیں زراعت بھی کثرت سے ہوتی ہے خصوصاً دھان اس قدر کہ اور اطراف
میں بھی جاتا ہے سواي اُسکی کان نمک و آہن بھی اُسکی نواح میں ہے
القصہ جاڑا اس صوبی میں بہت پڑتا ہے لیکن بی گزند اور گرمی ایسی کم
کہ بدوں اوڑھی سو نسکی برف توران کی مانند افراط سے پڑتی ہے لیکن
میدانوں میں چار مہینی اور پہاڑوں میں ہمیشہ رہتی ہے غرض موسم بہار
نہایت طاوت و شادابی کی ساتھ پھول رنگ برنگ کی بی شمار میوی
گوناگون خوشگوار اگرچہ انگور کی بہت اقسام ہیں پر صاحبی و حسینی
و قندھاری اور ہی لطف و مزہ رکھتا ہے اور زردالو کی اقسام میں محمودی

چھوڑ گیا تھا چنانچہ عالمگیر کی عہد سلطنت تک اُنکی اولاد وہاں رہتی
 تھی اور افغانوں پر بھی اُسکا غلبہ تھا اب خدا جانی ہے کہ نہیں غرض یہ
 مقام پچیس کوس طول میں اور دس کوس عرض میں ہے * تومان سواد
 یہ بھی کاشغر کی طرف ہے بہت سی دریا اس سے علاقہ رکھتی ہیں جاڑا
 گرمی وہاں بہت نہیں لیکن برف بہت پڑتی ہے پر صحرا میں دو تین دن
 سے زیادہ نہیں رہتی مگر پہاڑوں پر سال کی سال جاڑا "بہار کا موسم
 برسات کی رت ہندوستان کی سی" پھول توران و ہند کی وہاں اکثر "بنفشہ
 و نرگس خود رو صحرا صحرا" میوہ خود رستہ بھی علیٰ هذا القیاس لیکن
 شفتالو و ناشپاتی وہاں کی مشہور بلکہ باز و جرہ شاہین بھی وہاں اچھی سی
 اچھا بہم پہنچتا ہے اور کان آہن بھی اُسکی اطراف میں ہے * قصبہ
 منگلور حاکم نشین ہے ساتھ اُسکی اُس تومان کا طول چالیس کوس کا اور
 عرض پندرہ کوس لیکن فقط یوسف زئی اُس میں رہتی ہیں * تومان بگرام
 مشہور بہ پیشاور ہندوستان کی سمت ہے انڈور شفتالو خربوزہ وہاں کا توران
 کا سا اور گرمی جاڑا بسنت رت برسات ہندوستان کی سی چانول وہاں
 کا مشہور ہے فی الواقع ہندوستان میں ایسا کہیں نہیں ہوتا خصوصاً سکھداس
 بلکہ اقسام کی غلی کی بہتایت اور زراعت کی کثرت وہاں رہتی ہے

هِي جَلُوزَه وَهَانِ كَا مَشْهُور لُطْفِ يِه هِي كِه اُسْكَو وَهَانِ بَجَايِ چِرَاغِ جَلَايِ
 هِيَن چُنَاڄَه رُوشَنِي اُسْكَي نِهَايَت نُوْرَانِي هُوتِي هِي اُور اُسْكَي اَطْرَافِ مِيَن
 اِيكَ جَانُوْر هِي اُسْكَو رُوبَاهِ پَرَانِ كِهْتِي هِيَن لِيَكِن اِپْنِي مَسْكَن سِي اِيكَ دُو
 اُزَانِ سِي زِيَادَه نِهِيَن اُزْتَا اُور اِيكَ چُوْهَاهِ بِي وَهَانِ مُشْكُو هُوتَا هِي * تُوْمَانِ
 نِيكَ نِهَارِ اِيكَ مَقَامِ هِي دَارُوغَه نِشِيَن اِگْلِي زَمَانِي مِيَن اَدِيْنَه پُوْر مَشْهُور
 تَهَا اَكْبَرِ كِي وَقْتِ مِيَن جَلَالِ اَبَادِ كِهْلَايَا اَبَادِي اُسْكَي دَرِيَايِ نِيْلَابِ كِي كِنَارِي
 مِيُوِي اُسِ مِيَن اَكْثَرِ هُوتِي هِيَن لِيَكِن اِنَارِ وَهَانْكَ لَا ثَانِي هِي اُور دُو كُوسِ وَهَانِ
 سِي باغِ صَفَا كِه چَارِ باغِ كَرِ مَشْهُورِ هِي اُور اُسِي نَوَاحِ مِيَن باغِ وَفَا بِي اِيكَ
 يَادْگارِ بَابَرِ بادْشَاهِ نِهَايَتِ پُرِ فِضَا وَ دِلْكَشَا هِي بِيْدَانَه اِنَارِ وَهَانْكَ بِي نَظِيْرِ هِي
 غَرَضِ اُسِ مَقَامِ مِيَن بَرَفِ نِهِيَن پُڑِي اُور تِهَنْدِ بِي چَنْدَانِ نِهِيَن هُوتِي وَهَانِ
 سِي كَافِرِ دَرَه بِي قَرِيْبِ هِي اَزِ بَسِ كِه وَهَانِ كَافِرِ رَهْتِي هِيَن اِسِ لِيِي بِي
 نَامِ اُسْكَا تِهَرِ گِيَا * تُوْمَانِ مَخُوْرِ جَانِبِ كَاشْغَرِ قَلْعَه وَهَانْكَ حَاكِمِ نِشِيَن قَدِيْمِ سِي
 هِي اُور هَوَا گَرْمِي مِيَن زِيَادَه گَرْمِ اُور سَرْدِي مِيَن بِيْشْتَرِ سَرْدِ لِيَكِن تَمَامِ نَوَاحِ
 مِيَن كِيَا جَنْگَلِ كِيَا پَهَاڙِ اَفْغَانِ هِي بَسْتِي هِيَن مَگَرِ قَلْعِي كِي اَطْرَافِ مِيَن
 سَكُونَتِ مُغْلُوْنِ كِي هِي لِيَكِن وِي اِپْنِي تِيْنِ عَرَبِ جَانْتِي هِيَن اِسِ طَرَحِ سِي
 كِه سُلْطَانِ سَكْنَدِرِ رُوْمِي جَبِ اُدْهَرِ سِي گُذَرَا تُو كِتْنِي اِپْنِي خُوِيْشِ وَ اقْرَبَا وَهَانِ

آلدين سبڪڙين و سلطان محمود غزنوي و سلطان شهاب آلدين غوري کي اور
 حڪيم ٿنائي بهي ونهين مدفون هي بلڪه اڪثر اوليا اُسي طبقي مين آسوده هين
 جاري کي شدت اور برف کي کثرت کي سبب اُسکو برابر تبريز و سمرقند کي
 جانتِي هين اڙدهات بهي اُسکي اطراف مين بهت پيدا هوتا هي چنانچه
 هندوستان مين بهي ونهين سي جاتا هي نزديڪ اُسکي ايڪ چشمه هي اگر
 بول اُس مين پڙي تو ابر و برف کي آثار نمود هووين غرض يه مقام قندهار
 کي حد سي قرب رکھتا هي اُسکو دروازه ايران کا کهتي هين * لوهگڙهه افغان
 نشين هي نزديڪ اُسکي باده خواب شجينه ايڪ چشمه هي که گنگا اُسکو
 کهتي هين ليکن کتب هندي مين نام اُسکا لوهار گل لکها هي هندو اُسکو پڙا
 تيرتھ جانتِي هين روز معين وهان بهي پڙي بهيڙ بهار هوتي هي پاني اُسکا بهي
 گنگا کي مانند اگر مدتون باسئون مين رکھي بد بو نهين هوتا * تومان مندر اور
 دغلي لاشنگ ايڪ قريه هي وهانکي زميندارون کو کافر کهتي هين اُس جگه قبر
 حضرت نوح عليه السلام کي باپ کي هي نام اُس بزرگ کا لام اور بعضي
 لمگ بهي لکھ گئي هين از بس که وهانکي باشندي گاف کو غين سي بدلا
 کڙي هين اس لي اُس نواحي کو لمغان کهتي هين * تومان بخراد ايڪ مقام

علي written آرايش محفل In the

ایک سردابي کي ٻيچ تابوت مين ايک شخص مانند خفتگان آرام سي سوتا
 تها کھتي هين کي چار سو برس سي کچھ اوپر هوئي کي جنگيز خان کي عهد
 مين ٻيہ بزرگ شهيد هوا تها اب تلک اعضا اسکي جون کي تون هين اور
 مقام اسکا زيارت گاه راقم ني سواي اسکي ايک عجيب و غريب نقل آغا
 محمد تاجر اصفهاني سي اس تومان کي سني هي اتفاقاً وه بزرگ سن باره سي
 بيس مين کلکتی کي ٻيچ وارد هوا تها احيانا حقير سي اور اس سي ايک دن
 ملاقات هو گئي بعضي بلاد کا ٻيہ مذکور درميان آيا جب کابل کا ذکر نکلا
 تاجر موصوف کھني لگا کي سابق اس سي هم کئي شخص شهر مذکور کي طرف
 جاتي تهي ناگاه تومان ضحاک کي سمت جا نکلي جب قلعي کي متصل
 پھنچي اندر گئي جا بجا سي مکانات اسکي ٿوئي پائي بلکہ کتنين ديوارين ٻيہ
 ليکن ايک پتھر کا اندارا نہایت کلان پر خشک بي آب جون کا تون اس پر
 ديکھا جا کھڙي رهي اتني مين نگاه هر ايک کي جو اپني اپني کپڙون پر
 بري انکو زورڊ سي ٻيہ زياده سبز ديکھا حال آنکي سفيد تهي جب قلعي سي
 باهر نکلي پھر جيسي کي تيسي هو گئي اگر ٻيہ آثار طلسم سي هون تو کچھ
 بعيد نهين الغيب عند الله * تومان غزنين ايک قريہ هي زابل ٻيہ اسي
 کھتي هين اگلي زماني مين سلاطين خراسان کي تختگاه تها خصوصاً سلطان ناصر

تومان دامنہ کوہ خورد کابل بھی اُسکو کہتی ہیں پھول پھل اُس میں رنگ
 برنگ کی خوش بو و خوش رنگ و خوش مزہ کثرت سی ہیں خصوصاً لغمان
 و کاهدرہ و فرزہ و اُسترغچ و استالف و غیرہ قابل دید و لائق سیر چنانچہ
 سلاطین اکثر اوقات وہاں سیر کیا کرتی تھی اور دیر دیر رہا کرتی تھی بلخ کی
 طرف * تومان غوربند ایک قریہ ہی وہاں کی لالہ کی رنگت کو لعل نہیں
 پہنچتا اور ریاحین کی بو باس کو عطر نہیں لگتا غرض لالہ وہاں تینتیس قسم
 کا ہوتا ہے چنانچہ ایک قسم تو گلاب کی باس رکھتا ہے بنابر اُسکی لالہ بویا
 اُسکو کہتی ہیں اور کان لاجورد و نقرہ بھی وہاں سی قریب ہی سوای اُسکی
 ایک ریگ زار ہے نام اُسکا خواجہ ریگ روان گرمیوں میں وہاں سی
 ڈھول اور نقاری کی آواز آتی ہے اور لم اُسکی جانی نہیں جانی یہی مقام
 لشکر توران کی رو برو اور حدود بلخ کی سامنے گویا ایک دیوار مستحکم ہے
 * تومان ضحاک و تومان بامیان یعنی پی دونوں مقام قدما کی آثار و نشان
 سی ہیں اور اس نواح کی پہاڑوں میں کھود کر بارہ ہزار سردابی بنا کر گچ و
 نقاشی اُن پر کی ہے سابق اس سی جاڑوں میں وہاں کی لوگ اپنا مال و
 اسباب اُن میں رکھ کر دلجمعی سی اوقات بسر کرتی تھی لطف یہ ہے کہ

پمغان In the آرایش محفل it seems written

صوبه کابل قديم شهر هي نهايت خوب و خوش آب و هوا پشنگ بين تور
 بن فریدون في اسي آباد کیا اور اُسکو آباد هوئي عالمگیر کی سن چہلم جلوسی
 تک دو ہزار اور ایک سو برس کچھ اوپر گذری قلعه اُسکا نپت اُستوار پایدار
 اور اندر کا قلعه ایک چھوٹی سی پہاڑ پر " اُس پر مشرف ایک اور پہاڑ
 نام اُسکا حصار عقابین اور بعضی کوہ صفا بھی اُسکو کہتی ہیں لیکن بلدہ مذکور
 کی بعضی سیاحون کی زبانی یوں سنا ہی کہ وہ پہاڑ قلعه اول کی عمارات پر
 مشرف ہی غرض دامنی میں اُسکی باغ و گلزار اکثر خصوصاً باغ شہلہ کہ بابر
 بادشاہ فی نو سی پچیس ہجری میں بنایا تھا پھر قریب اُسکی جہانگیر فی باغ
 جہان آرا سن ایک ہزار سولہ ہجری میں بنیاد کیا اور لب دریا گذرگاہ میں
 مقبرہ بابر کا اور ہندال مرزا اُسکی خلف کا سوای اُسکی محمد حکیم مرزا
 ابن ہمایون کا بھی تعمیر ہوا ہی اور اُس شہر کی نواح میں دو دریا ہیں ایک
 جلندرہ سی آکر باغ شہر آرا اور جہان آرا و شہر کی گلی کوچون سی گذرتا
 ہی نام اُسکا جوی خطبان اور دوسرا غزنین و لوہگڈہ سی آکر دہ یعقوب کی
 پاس ہوتا ہوا لاہوری دروازی کی آگی جا نکلا نام اُسکا جوی پلستان پانی
 اُسکا شفاف و خوش ذائقہ بلکہ بعضی بیماریوں کی واسطی شربت شفا *

§ In Persian it seems written السندر.

ٺهين هوتا هان ٿانگن ڪثرت سي اور نهايت زور اور چالاڪ رهوار گريوه گذار
 ليگن گائين سياه رنگ پر دوده انکا نپٽ گاڙها چڪنا اور ايڪ قسم کي بهيڙ
 وهان هوني هي لوگ اس شهر کي اسڪو هنڌو ڪهتي هين گوشت اسکا نهايت
 لذيد و خوش ذائيقه “ اور داد و ستد نقد کي بهت ڪم راهين آمد شد کي
 هندوستان مين اور اس مين چهيس ليکن بهنبر و پکلي هوڪر جانا بهتر هان
 اتنا تفاوت هي ڪه پهلې نزديڪ تر اور کي شي رڪهتي هي مگر آمد و
 رفت لشڪر کي پر پنجال کي طرف سي احيانا اگر وهانکي پهڙ پر کوي پيل
 گهوڙا ذبح ڪري وونهين آندهي اور بدلي بڪثرت نمود هو پير برف بهت سي
 پڙي يا مينه برسي طول اس صوبي ڪا قير سي ليڪر ڪشن گنگ تلڪ ايڪ
 سو بيس کوس اور عرض اسي کوس ليکن آين اکبري مين مچيس کوس لکها
 هي شرقي اسڪي پيرستان و چناب شرقي و جنوبي پانهال اور جمو ڪا پهڙ
 شرقي و شمالي تبت کلن غربي پکلي و درياي ڪشن گنگ غربي و جنوبي
 ولايت ڪهڪر غربي و شمالي تبت خورد چو گرد پهڙ متعلق اسڪي چهيليس
 محال آمدني باره ڪروڙ باسٿه لکھ مچاسي هزار دام علاوه اسڪي دو هزار چار سو
 کلگي کي پر بهي اس صوبي کي مداخل مين هين

گل رنگ برنگ کي هزارها "خصوصاً گلاب و بنفشه و نرگس خود رو صحرا
 صحرا" غرض اُس مُلڪ کي طرفه بهار و عجائب خزان هي في الْحَقِيقَتِ
 وَه سرزمين باغ بوستان و لائقي دوستان هي سواي شاه آلو و شهتوت ميو
 بهت هوني هين خربوزه تربوز سيب شفتالو زرد آلو نهايت لذيق و لطيف
 انگور اگرچه کثرت سي هوتا هي ليکن اکثر بي مزه و کثيف با وجودِ که
 شهتوت کي درختون کي بهتاييت هي پر ثمر انکا کم کھاتي هين "مگر انکي
 پتي ريشم کي کيرون کو کھاتي هين" خورش وهانکي باشندون کي مچھلي
 خشکه بلکه باسي بيستر اور ساگ پات اقسام کي چنانچه اسکو سکھا بهي
 رکھتي هين هرچند که دهان کي بهتاييت هي پر اچھا کم هوتا هي گيهون بهي
 نيٺ چهوٿا سياه تس پر قليل اور مونگ وهانکي باشندي کم کھاتي هين
 چنا اور جو تو نظر هي نهين آتي زمين وهانکي سيلابي اور مرطوب جوتني
 کي لبي نهايت خوب با وجودِ خلقت کي بهتاييت کي اور وجه معيشت
 کي قلت کي چوري اور گدائي وهان نهين ساکن وهانکي بيستر کثيف
 الاوقات چنانچه ايک جامه شالي هميشه پھني رھتي هين ليکن قابل
 دينداري و دنياداري مين کامل به غلط هي که سب کي سب نيک ظاهر و
 بد باطن هوني هين مگر اچھي کم اور بري بهت پر اونٺ اور هاتھي وهان

سونا جھڑ پڑتا ھي * کلکت ۽ نام ايک اور دره ھي وہ بهي کاشغر سي متصل
 وهانکي پہاڑون سي دو دن کي راه ولايت داردو ھي مد مني نام ايک درياؤ
 ونہين سي ادھر آيا ھي اگر نياري ريگ شوي وهان بيٿھ کر کرين اپني
 مقہيان سوني سي بهرين کناري پر اسکي ايک سنگين باخانہ ھي نام اسکا *
 ساردا درگا سي منسوب ھنود کا وہ بهي بڑا معبد ھي اور وهانکي پرستش
 کا ثواب انکي نزديک بيحد سرکار پکلي بهي اس صوبي مين داخل ھي
 لبنان اسکا پينٽيس کوس کا اور چوڑان پچيس کوس توران کي طرح وهان
 بهي برف پڑي ھي جاڑا بيستر رھتا ھي ليکن برسات ھندوستان کي مانند
 اور کھيتيون کي شادابي کا سبب تين دريا کشن گنگ بہت سنڌہ زبان
 ملڪ مذکور کي کشمير سي ملتي ھوي ھندوستان و زابلستان سي باھر غلي
 کي اقسام مين چنا اور جو بہت ميون مين زر آلو شفتالو اخروٽ ليکن
 خود رو پر ميوہ توڑني کي رسم کم اسپ و شتر و گاؤ ميش و جانور شڪاري
 نہ تھوڑي نہ بہت بکري اور خرگوش کي کثرت القصہ کشمير ايک ملڪ
 دلکشا اور باغ پر فضا هر موسم مين وهان بهار رھتي ھي “ اور هوا باغ رضوان
 کيسي بہتي ھي “ پاني وهان کا خوشگوار هر گلزار مين جاري انہار و آبشار

کلکت In a Persian manuscript written

ایک اور بڑا تالاب ھی ھڏیان راکھ مردون کی اُس مین بھی ڏالتي ھین اور
 وسیلہ تقریب کا جانتی ھین اُحیاناً اگر اُس مین کسی جانور کا گوشت پتر
 جاوی تو برف شدت سی پڑی اور مینہ بہت برسی * ناردا مین ایک
 چشمہ ھی اگر کوڑھی اتوار کی دن صبح کی وقت اُسکی پانی سی اپنا بدن
 دھونوین اچھی ھو جائین * کوشر نام ایک بُخاڻہ ھی اُتھاکر وھان کا مہادیو
 جو کوئی وھان پوجا کو جاوی تمام باجون کی آواز سنی اور کوئی نجانی کہ
 یہ آواز کھان سی آتی ھی * چھوٹی تبت مین ایک بڑا تالاب ھی اُتھائس
 کوس کی گرد مین دریای بہت جب اُس مین آتا ھی ایک لحظہ ناپدید
 ھو جاتا ھی * کو گانو مین ایک درہ ھی پرسوتم نام وھان دس جریب
 کی مقدار ایک زمین ھی جب مُشتری اسد مین آتی ھی مہینا پھر وہ
 ایسی گرم رھتی ھی کہ درخت وھان ھووی تو جل جائی اور دیگ بھری
 ھوئی جو اُس پر رکھ دیوین کھانا پک آتی قریب اُس سی * کامراج
 ایک آباد قصبہ ھی درہ اُسکا ایک طرف کاشغر سی ملا ھوا غرب رو اُسکی
 پکلی وھان پانی کی گذرگاہون مین درخت کی بکل ڏال کر اُن کی سرون پر
 پتھر رکھ دیتی ھین اِس واسطی کہ بہ نجائین بعد دو تین دن کی اُتھاکر
 دھوپ مین دھرتی ھین اور خُشک ھوئی پر جب جھاڑی ھین دو تین تولی

بِيٽِي رَهِي هِي ڪُلُگِي ڪِي واسِطِي پَر وَنُهِيَن سِي لِيٽِي هِيَن “ اُور خُورِش
 بِي اُسڪو دِيٽِي هِيَن “ * تَاڪامو ۽ مِيَن اِيڪ چِشْمَه چَالِيَس بِيگِي ڪِي عَرَضِي
 مِيَن هِي نِيَلَه نَاڪ نام پَانِي اُسڪا نِهَآيَت صَاف نِيَلُگُون وَه بِي اِيڪ تِيَرَتَه
 هِي گَرْد اُسڪي اڪْثَر هُنود جَاڪر اِيٺِي تِيَن جَلَاٽِي هِيَن “ اُور جِسْم ڪو رَاڪَه بِنَاٽِي
 هِيَن “ سِوَاي اُسڪي شُگُن بِي اُس سِي لِيٽِي هِيَن اِس طَرَح ڪِه جَوَز ڪِي
 چَار حِصِي ڪِرڪِي اُس مِيَن ڌَالَتِي هِيَن اِڪر طَاق اُسڪي پَانِي پَر تَرِٽا رَهِي تَو
 نِيڪ نِهِيَن تَو بَد اِڪلِي زَمَانِي مِيَن اِيڪ ڪِتَاب وَنُهِيَن سِي نِڪَلِي هِي نام
 اُسڪا تِيَل مُنَه + ڪَشْمِير ڪِي حَالَت اُور خَوَاص پَرِستِشگاهون ڪِي اُس مِيَن تَفْصِيل
 وَا رِ لَکِي هِيَن ڪَهِي هِيَن ڪِه پَانِي ڪِي تَلِي وَهَان اِيڪ شَهَر هِي نِهَآيَت آباد و
 مَعْمُور مَدَو شاه ڪِي سُلْطَنَت مِيَن اِيڪ بَرَهْمَن اُس مِيَن گِرڪِي غَايِب هُو
 جَاتا اُور بَعْد دَو تِيَن دِن ڪِي پَهَر نِڪَلَتا بَهَت سِي تَحَايِف لَاتا خَبَرِيَن بِي اڪْثَر
 دِيٽا * لار ڪِي اُتَر طَرَف اِيڪ پَهَار هِي نِهَآيَت بُلُنْد دَامَنِي مِيَن اُسڪي دَو
 چِشْمِي هِيَن اِيڪ گَرَم حَد سِي زِيَادَه اُور دُوسرا سَرْد اِسي مَرْتَبِي لِيڪِن تَفَاوُت
 اُن مِيَن دَو گَز ڪا اُنڪو بِي تِيَرَتَه جَانَتِي هِيَن چُنَآجَه اُسَاخَوَان اِيٺِي جِسْم
 ڪِي وَهَان بِي اِسي جَلَاٽِي هِيَن ڪِه رَاڪَه هُو جَاتِي هِيَن اُور وَنُهِيَن پَهَار مِيَن

هي ڪه جو ڪوئي پهچانا چاهي ڪه خصوصيت مين حق ڪسڪي طرف هي اور
 ناحق پر ڪون هي تو دونو ڪو دو مرغ يا دو بگري ديگر اس معبد مين بهاجي
 اور انڪو زهر ڪهلاڪر پهر هر ايڪ شخص اپنا هاتھ پھيري جو شخص ڪه حق پر
 هوگا اسکا جانور جيتا رهيگا اور دوسري ڪا مر جاينگا * ڊيو سر ايڪ حوض
 هي بيس گز ڪي طول و عرض و عمق مين پاني اسڪي اندر هي اندر ڪهولا ڪرتا
 هي جو ڪوئي اپني سال ڪا احوال نيڪ يا بد دريافت ڪيا چاهي ايڪ
 هاندي سفالي ڪي چانولون سي بهر ڪر نام اپنا اسڪي ڪناري پر لکھ ڪر منھ
 بند ڪري اور اس مين ڌال دي ڪتني دير ڪي بعد وه خود بخود پاني اوپر تر
 آويگي اسڪو ڪهول ڪر ديگهي اگر چانول اس مين سي گرم اور خوش بو نڪلين
 وه برس اسڪو خير و خوبي سي گذري اور جو اس سي ڪوڙا ڪرڪٽ نڪلي تو وه
 شخص خراب احوال رهي * گونهار مين ايڪ چشمه هي گياره سال سوکيا
 پڙا رهتا هي جب مشتري برچ اسد مين آتي هي پنجشنبه ڪي دن پاني
 اس مين جوش ماري لکٽا هي پهريسات روز تلڪ خشڪ رهتا هي جب
 پهر روز مذکور آتا هي پر آب هو جاتا هي سال بهر ٻيهي طور چلا جاتا هي *
 سلھاني ۽ مين ايڪ مقام هي ڪه وهان بهت سي درخت هين عقاب ان پر

ھوئي ھي اور جو پاڻي پر تر ٿا رهي بد سُکڻي ڄاڻي ھين تبت مين ايڪ
 ٻڙا غار ھي اُسکي اندر برف کا ايڪ جسم ھي نام اُسکا * امر ناتھ اُس
 مقام کو بهي معبد بزرگ ڄاڻي ھين جب ماہ تحت الشعاع سي نڪلتا
 ھي اُس غار مين ايڪ برف کي لات نمود ھوئي ھي اور تھوڙي تھوڙي روز
 بڙھتي ھي يھان تک کہ پندرھين دن دس گز کي ھو ڄاڻي ھي جب
 ڇاند گھڻي لڳتا ھي وہ بهي گھڻي لڳتي ھي ماوس تلڪ اُس کا نشان
 بهي نہين رھتا ھندو اُسکو مھاديو کا پيڪر قياس ڪري ھين اور حاجت بر آر
 اُسکو ڄاڻي ھين * شڪر ناڪ ايڪ چشمه ھي تمام سال آب اُس مين
 نا ياب ليکن جس مھيني مين نوين تاريخ جمعي کي دن ھو صبح سي شام
 تلڪ پاڻي اُس مين بھتا ھي “ اور دن بھر ايڪ عالم وہان جمع رھتا
 ھي “ * پائھال ايڪ بٽخانه ھي دُرگا سي منسوب جو کوئي اپنا احوال اور
 دشمن کا ڄانا چاھي دو ھانڊيون مين ڇانول بھرڪر ايڪ اپني نام پر اور
 دوسري دشمن کي نام اُس بٽخاني مين رکھ دي اور دروازہ اُسکا بند ڪري
 دوسري دن عاجزي سي احوال کي تجسس ڪري جسکي نام کي ھانڊي زعفران
 اور پھلون سي بھري نڪلي اُسکا احوال نہايت رونق پکڙي اور جس کي نام
 کي خس و خاشاڪ سي بھري نڪلي اُسکا احوال تباہ ھو ڄاڻي عجب تربيه

بيساڪھ ڪي آخر سي لي سارا مهينا جيئھ ڪا ڪشت ڪار هل چلا زمين ڪو نرم
 ڪر ڪڍالون سي هر ايڪ قطعہ اُسڪا قابل بوني ڪي بنا زعفران ڪي گتھي بو ڏيتي
 هين ايڪ مهيني ڪي بعد لھلھا اُتھي هي اور ڪاٽڪ ڪي آخر مرتبه ٺھو ڪا
 تمام هو چڪتا هي ليڪن ايڪ بالشت سي زياده نهين بڙھتي اور جب پوري
 هو چڪتي هي تب پھولتي هي ليڪن هر پوڏهي مين آتھ پھول بتدریج پھولتي
 هين پنڪڙيان هر ايڪ مين ڇھ ” رنگت ان مين سوسني ” درميان انڪي
 ڇھ تار بيشر تين زرد اور تين لال زعفران انھين ڪي هوتي هي جب ڪه
 پھول نيز چڪتي هين تب تنه انڪا سبز هو جاتا هي پر پھولني سي پھلي سفيد
 رھتا هي اور ايڪ مرتبي ڪا بوا ڪھيت ڇھ برس پھولتا هي پھلي برس ڪم ڪم
 دوسري برس بهتايٽ سي تيسري برس ڪمال ڪو پھنچتا هي اگر ڇھ برس
 ڪي بعد اُسڪي گتھي وهان سي اُڪھاڙڪر اور جاگھ ٺھيئن تو پھولنا ڪم هو جائي
 اسي واسطي اُڪھاڙڪر اور جاگھ لگائي هين * ريون مين ايڪ چشمه هي اسي
 بڙا تيرتھ جاتي هين انڪي گمان مين پھ هي ڪه زعفران ڪي بيچ اسي سي
 نڪلي هين چنانچھ اُسڪي شروع مين ڪشت ڪار اُس چشمي ڪي پاس جاڪر
 بهت منت و زاري ڪرتي هين اور گاڻي ڪا ڏوڏھ اُس مين ڏالتي هين اگر
 وه پاني تلي بيٺھ جاتا هي تو فال نيڪ ليني هين اور زعفران پھي خاطر خواھ

بیشتر رھتي ھي اور زبان وھان کي باشندون کي خاص ٻھي ھي ليکن ھندي
 کتابين ٻيشت سنسکرت کي ٻولي مين تصنيف کرتي ھين اور ناگري مين لکھتي
 ھين بلڪه ٻيشت پوتھيان ايک درخت خاص کي پوست پر چنانچھ اکثر پرائي
 پوتھيان اُسي پر ثبت ھين نام اُسکا توز اور سياهي ٻھي اُسي بنائي ھين کتنا
 ھين دھويي پر نھين چھڻي ھرچند کہ اھل ھند اس ولايت کي عجيب و
 غريب قصي کہتي سٺي ھين اور سب کي سب تيرتھ ڄاڻي ھين ليکن
 بعضي مکانون کو بہت مانتھ ھين چنانچھ سندھيا براري کي قريب ايک
 چشمہ ھي چھ مھيني تلک خشک پڙا رھتا ھي روز معبود کسان اُس
 سر زمين کي جاکر عجز و الحاح کري ھين بلڪه ٻيڙين بگريان چڙھائي ھين ندان
 پائي اُس مين جوش ماري لگتا ھي اور پاڻچ موضع کي زراعت کو سيراب کر
 ديتا ھي احياناً جو کٻو زيادتي اُسکي ديکھتي ھين اُسي طرح پھر گڙگڙائي
 لگي ھين في آلفور پائي ٿھڪائي پر آ جاتا ھي متصل اُسکي * کوکر ناک § نام
 ايک چشمہ ھي پائي اُسکا نپت خنک و شيرين و سبک اگر ٻھوڪھا پئي
 سير ھو جائي “ اور اگھانا پئي ٻھوڪھ لگ آئي ” * مين پور مين بارہ هزار
 بيگھي زمين زعفران کي کھيتون کي ھي في الواقع قابل ديد و لائق سير غرض

§ In the Persian, this place seems written کوک نال.

ليجائي هين “ اور فائدي اُتھائي هين “ بانات شهرِ مذکورِ کي بهي نيٽ ملايم
 خوش نما “ پٿو وغيره بهي نفاست و لطافت مين مانند هوا “ بازار مين
 خريد و فروخت کي رسم کمتر “ اور گهرون مين اڪثر “ اور گهر سب جهوٽي
 بڙي چوبي بنائي هين درجي اُنکي چار يا چارسي زياده رکھتي هين نيچي کا چار
 پاڻ اور کچھ اسباب کي ليئي دوسرا آسائش کي خاطر تيسرا چوٽها اسباب خانگي
 کي واسطي ليکن بهوئچال کي شدت کي سبب حويليان خشتي اور سنگين نهين
 بنائي بلڪه چار ديواري بهي جهتون پر لاله بوتي هين چنائچھ بهار کي دنون
 مين هر شخص کا بام خانه رشڪ گلزار و بهتر از لاله زار هو جاتا هي غرض
 شهرِ مذکورِ مين با وجودِ اس لطافت کي ايڪ ٻيھ خوبِي هي که وهان سانپ
 بچھو وغيره گزندِي جانور کمتر هين ليکن مچھر مکھي اور جوئن اڪثر نزديڪ
 شهر کي ايڪ تالاب بهت بڙا کڻي فرسخ لنبا ايڪ جانب اُسکي پرگنه
 بهماڪ لاسي متصل وهانکي لوگ اُسکو دال کھتي هين سال و ماه لبريز رھتا هي
 اور پاني اُسکا نهايت لطيف و شيرين مزا ٻيھ هي که برسون نهين بگڙتا اگرچھ
 لوگ بارِ گران کو پُشتاري باندھکر گھاٽيون سي چڙھتي اُترِي هين پر بارِ برداري کي
 واسطي اڪثر وهان کشتيان هين اس سبب سي بڙهيون اور ملاحونکي خواهش

بهاک may perhaps be the true reading.

میں جُصُوصاً دریایِ بیاہ اور بہت کی کناری پر اگر ریگ شُوی کرین تو سونا
 ہاتھ لگی اور شمالی پہاڑوں پر بعضی مقاموں میں روپی تانبی جست کی
 کمان بھی ہی نکالنی والوں کو بعد محضول دینی کی بھی نفع مل رہتا ہی طول
 اس صوبی کا دریایِ ستلج سی تا دریایِ سندھ ایک سو اسی کوس عرض بہنبر
 سی چوکھنڈی تلک ستاسی کوس پورب طرف اُسکی سرھند چچم طرف ملتان
 اتر رخ کشمیر جنوب رو دیبال پور متعلق اس سی پانچ دواہی یعنی پانچ
 سرکارین تابع اُنکی تین سو سولہ محال آمدنی نو اسی کڑوڑ تینتیس لاکھ ستر ہزار
 دام صوبوں میں بی نظیر

صوبہ کشمیر دار الحکومت اس ولایت کا مدت سی سري نگر ہی آبادی
 اُسکی چار فرسخ کی دریایِ بہت و غیرہ تین دریاؤں شہر کی اندر بہتی ہیں
 علما و فضلا بھی یہاں بکثرت رہتی ہیں بلکہ برہمنوں پنڈتوں کا بھی شہر
 میں نہایت وفور اور یہاں کی کاریگر ہنرمند جہاں میں مشہور چنانچہ
 پشمینہ طرح بطرح کا نہایت نفاست کی ساتھ بنا جاتا ہی بیل بوٹا اُسکا
 عالم باغ کا دکھاتا ہی خصوصاً شال تو بیمثال ہوتی ہی بناوٹ اُسکی
 دیکھنی والوں کی ہوش کھوتی ہی ملک بملک اُسکو بطریق تحائف

افغان خٽڪ و غيره سي نڪل ڪر سنڀل ڪي پٽهانون ڪي حد مين پهتچا اور وهان سي بلوچستان و ملتان مين جا نڪلا غرض پانچ دريا پنجاب ڪي اتر طرف ڪي پهتچا سي نڪلي اور اس طرف ملتان ڪي ايڪ دوسري سي جدا بلوچون ڪي حد مين اس درياو سي ملي نام مجموعي ڪا سنڌه ٿههرا پهروهان سي ايڪ درياي ڪلان هوا اور قلعه بهڪر ڪو دو گنگ ڪي بيه مين لي ليا بنا براسي ڪي وه قلعه بي لگاؤ و محفوظ هي بعد اسڪي درياي مذڪور ولايت سيوستان سي هوتا هوا ٿهههي مين آيا پهرو بندر لاهري ڪي قريب درياي شور سي جا ملا بندر مذڪور شهر مسطور سي تيس ڪوس پر هي حاصل يه هي ڪه صوبه لاهور نهايت خوش آب و هوا و بهرتبه فرحت افزا ”گرميون مين وهان گرمي اور سري مين سري هندوستان سي زياده خربوزه انگور وهان مانڊ ايران و توران“ اور آم مثل هندوستان ”چانول وهان ڪا بنگالي سي بهتر“ اور گني دڪن سي اعلي تر ”اڪثر مدار زراعت آب چاه پر چنانچه تين سو ساڻه جهوڻي بڙي لڪريان اور سو سي ڪجهه اوپر لوڻي رسون مين باندھ ڪر ايڪ بڙا چرخ بنائي هين اور اسڪو جر ثقييل ڪي صنعت سي جوڙي بيلون ڪي ايڪ گردش مين ڪوي سي پاني بهر نڪالتي هي دفعتا ڪي سو من پاني ڪهتي ڪو پهتچا جاتا هي“ اور زراعت ڪو سبز ڪر لاتا هي ”ليڪن مدار فصل خريف ڪا بارش پر هي اور بعضي مڪانون

طرف وہاں جلالیہ نام ایک سیاہ پتھر ہی کبھو کبھو ناو اُس سی ٹکر کھا کر پھٹ
جائی ہی بنابر اُسکی ملاح ہمیشہ اُس سی کشتی کو بچاتی ہیں اور حتیٰ
الْمَقْدُور اُسکی طرف نہیں لاتی وجہ تسمیہ اُسکی بقول عوام یہ ہی کہ اُسکی
اوپر ایک بزرگ کی قبر ہی نام اُسکا جلالیہ تھا لیکن خواص اس امر میں یوں
کہتی ہیں کہ اکبر کی وقت میں ایک پٹھان جلالیہ نام نہایت مفید و شور
پشت تھا اتفاقاً پادشاہ سیر شکار کی واسطی اُس دریاؤ سی پار اُترتی تھی یک
بیک جواہر خانی کی ناو اُس سی ٹکر کھا کر ٹوٹ گئی فی الفور حضرت کی
زبان مبارک سی نکلا کہ یہ پتھر بھی جلالیہ ہوا تبھی سی یہ نام اُسکا ٹھہرا
نزدیک اُسکی راجہ ہودی کی عمارات ہیں نہایت سنگین و رنگین اگلی
زمانی میں وہی وہاں کا راج کرتا تھا اور اُسی کی کناری شرق کی طرف قلعہ
اٹک ہی ہر وارد و صادر اُس میں ہو کر آتا جاتا ہی کیونکہ سواي اُسکی اور
رستا نہیں عمارات بھی اُس میں نہایت پُر فضا و دلکشا لب دریا خصوصاً
مکان حاکم نشین کہ بمرتبہ فرحت افزا و نہایت اعلیٰ ہی آب و ہوا بھی
نہایت اعتدال کی ساتھ گویا ہندوستان و کابلستان میں یہ ایک برزخ واقع
ہی اس طرف اُسکی روٹی اور چلن ہندوستان کی اور بولی بھی و نہیں کی
اور اُس طرف طور و آئین پٹھانوں کی اور زبان بھی اُنکی القصہ یہ دریاؤ کوہستان

سي پکلي مين ملا پهر وهان سي دانکلي کي تلي آ نکلا قصبه مذکور کهکون
 کي سرگروه کا دار الحکومت هي پهر اُسکي حدون سي اور ميرپور سي گذرتا
 هوا جهيلم کي تلي پهنچا اور شاه راه مين واقع هوا نام اُسکا موضع مذکور کا
 تهر پهر وهان سي کرچهاک و نندي و غيره سي گذرتا هوا جنگ سيال مين
 جاکر چناب کي ساڻه ملا هم نام اُسکا هوا * جهڻها درياؤ سنڌه ما بين اُسکي
 اور درياؤ بهت کي ولايت بونهوار اور سنڌه ساگر کا دوايه مشهور هي اور
 بهي هندوستان و کابلستان کي بيچ حائل ليکن سرچشمه اُسکا ظاهر نهين وهان
 بعضي ستياح کهتي هين که قلماق کي کسي مقام سي نکل کر حدود کاشغرو
 کافرستان و تبت و کشمير و پکلي و دهمثور مين پهنچا پهر وهان سي يوسف زئي
 کي اولکي مين جا نکلا اور درياي نيلاب کي نديون سميت قلعه اٺک
 بنارس کي تلي درياي مذکور سي ملا از بس که پاٺ اُسکا وهان جهوتا هي
 نهايت زور شور سي بهتا هي يهان تک که ديکهنهي والون کي نگاه خيرگي
 کرتي هي مطلقا و اصلا نهين تهرتي تموج کي شدت سي نهنگون کا جگر آب هو
 جاتا هي اور پهاريون کا سينه موجون کي صدمي سي ٽکري ٽکري مگر درياي
 مذکور اُس جگه شاه راه مين واقع هي گذاري کي ناوين پاني کي تيز روي کي
 سبب اس کناري سي اُس کناري طرفه العين مين پهنچين هين مغرب کي

دیہات سی گذر ساڈھوري کي تلي هوتا هوا وزیر آباد مین جا پھنچا سالکي
 لکڑی سوداگر کوہستان جنبہ و غبرہ سی اُسی دریا کي راہ سی وزیر آباد مین
 لای ہین “ اور بہت سی انتفاع اُٹھاتی ہین “ پھر اُسکي کشتیان بناکر
 بطور تجارت دریا کي راہ سی تھپھی بھر کي طرف لیجاتی ہین بعد اُسکي
 وہ دریا جاکوتار و لوڈھیانہ و بھونہ منزل اور ہزاری مین آ پھنچا چار کوس
 پری ہزاری سی قبر ہیر رائجھا کي اُسی دریاؤ کي کنارے پر ہی عشق اُنکا
 مشہور پنجابیوں نی اُنکي محبت و یقاری کي بیان مین سیکڑوں سدیوں
 کہیں ہین چنانچہ گوئی وہانکي اُنکو اکثر گاتی ہین “ اور اہل درد کو رولانی
 ہین “ پھر وہان سی چند لوت کي نزدیک دو چھوٹی پہاڑوں مین سی ہو
 نکلا شہر مذکور مین مزار شاہ بُرہان کا ہی اکثر لوگ اُس بزرگ سی بھی
 اعتقاد رکھتی تھی پھر وہان سی بہتا هوا جنگ سیالی مین آکر دریای بہت
 سی مل گیا * پانچوان دریاؤ بہت مابین اُسکي اور چناب کي جونٹھے ایک
 دواہہ مشہور ہی غرض دریای مذکور کوہستان تبت مین ایک حوض سی
 نکلا اور کشمیر مین آکر کوچہ و بازار مین بہتی لگا چنانچہ شہر مذکور مین
 جابجا پل بندھی ہین اکثر باغات و عمارات و سیرگاہیں اور مکانات اُسکي
 کنارے پر ساتھ ایک قرینے کي واقع ہین پھر کشمیر سی نکل کر کشن گنگ

اُن سي فيض پهنچتا هي پهر درياي موصوف قصبه مذکور سي بهتا هوا پرگنه
 بستمان و کانھو و کلانور و پٿالھ و امن آباد و غيرہ کي اطراف مين جا پهنچا
 اور وهان سي لاهور مين آ بادشاھي عمارت کي پاين بهني لگا پهر وهان
 سي سنڌھوان و فرید آباد و غيرہ مين هوتا هوا سنڌہ سراي کي قريب
 ملتان سي بیس کوس پري چناب سي جا ملا * چوتھا چناب اُس مين
 اور راوي مين رچناو ايڪ دواآبه مشهور هي ليکن هندي ڪتابون مين نام
 اُس درياو کا چندر بهاگا لکھا هي ماجرا اسکا يون هي کہ درياي چندر چين
 کي طرف سي آکر جنبہ سي گذرتا هوا ڪشتوار مين کہ زعفران جهانکي مشهور
 هي پهنچا اور درياي بهاگا تبت کي طرف سي آکر اُس سي ملا اس لي نام
 اسکا چندر بهاگا ٿهرا پهر وهان سي نيپال و بهونپال مين هوتا هوا نرڪتا کہ تابع
 جمون اور بهواني سي منسوب هي اسکي قريب آ نکلا اور وهان سي انبار
 آبان و اکھنور کي تلي پهنچا پهر ايڪ پهرا مين جاکر نهايت آب و تاب
 سي بهني لگا چنانچھ مکان مذکور طرفہ سيرگاه و نادر تماشاگاه هي پائي بهي
 وهان کا بهتر از شربت نبات و پياسون کي حق مين آحيات هي القصه درياي
 مذکور وهان سي کچھ آگي بڙه کر اٿھارہ ٽکري هوا ليکن بهلول پور پهنچتي
 پهنچتي باره کوس کي مسافت پر پهر اڪٿا هو گيا بعد اسکي سيالکوٽ کي

اڪڻهي هو فيروز پور آور ممدوت مين جا نڪلي آور وهان سي سرڪار ديال پور
 كي محالون مين پهچ دو ٿڪري هوني ايڪ سوتا تو دکن كي طرف گيا نام اسکا
 ستلج هوا دوسرا اتر كي سمت گيا نام اسکا بياھ ٿهرا بعد ڪي فرسخ كي پهر دونون
 ملڪ فتح پور ڪرور و غيره كي اطراف مين جا پهچي نام اس مجموعي کا اس
 مقام مين ڪهلوڪھارا هوا پهر بلوچون كي حد مين پهچڪر سنڌه و راوي و چناب
 سي ملي اس مقام مين هيٺ مجموعي کا نام سنڌه ٿهرا * تيسرا راوي اس
 مين آور بياھ مين ايڪ دوابه بازي مانجها مشهور هي درياھ مذکور من مھس
 پھار سي نڪلا مڪان مذکور قديم تيرتھ هي ٿاڪر وهان کا مھاديو آور وهان سي
 شھر جنبه ڪه دار الحڪومت وهان كي حاڪم کا هي اسڪي نيچي گذرا ملڪ
 مسطور كي هوا برف كي پڙني سي ڪابل و ڪشمير كي سي هي ميوي بهي اڪثر
 لطيف و شيرين وهان پيدا هوني هين حاڪم وهان کا مملڪت كي وسعت سي
 جميعت كي ڪثرت سي آور پھارون كي بهتايت سي بي پروا هي بادشاهون
 ڪو ڪجهه نهين ڄاڻتا اور مطلقا انکا حڪم نهين مانٿا الغرض بسوهلي كي بهي
 حدون سي گذر شاه پور كي تلي جا نڪلا آور وهان سي چار نهرين اس سي
 نڪلين ايڪ تو لاهور مين شالامار كي بيج آهي دوسري پرگنه بستان مين
 تيسري پٿالي مين چوٽهي پرگنه هيبت پور مين اڪثر محالون كي زراعت ڪو

کي باعث باشندي اُس ولایت کي بادشاهي امپرون سي بغي رهندي هين پهر
 درياي مذکور پهڙ سي نکل دو گنگ هو ماکورال و کيرت پور کي تلي آيا اور
 قصبه روپر تلک پهڙي پهڙي پهر ايگ هو گيا اور اُسي هيٺ سي ماڇهي
 واري کي قريب هوکر لودهياني مين پهڙا بلڪه شاه راه مين واقع هوا پهر وهان
 سي قصبه تلون و تهاره کي قريب گذر متصل موضع پور که متعلق پرگنه هيست
 پور پهڙي کا هي درياي بياھ سي جا ملا اور دوا به جو ان دو درياون کي درميان
 هي اُسکو جالندهر و شهر وال کهي هين * دوسرا بياھ وه بهي بهونٺ کي پهڙ
 کي ايک تالاب سي نڪلا اور قصبه کلو کي تلي بهتا هوا منڏي مين جا
 پهڙا پهر سوکھيت اور مملوري کي حدون مين گذرنا شهر نندون مين که
 کوهستان کي فوجدار کي بود و باش کا مکان هي جا نڪلا پهر وهان سي اطراف
 دهوال و سينه و گواليار مين آيا گو که گواليار کچه بڙا ملڪ نهين ليکن راجا
 وهان کا اُس دريا کي هائل هوني سي اور پهڙ کي اتصال کي سبب امرای
 بادشاهي سي اکثر اوقات بگڙا رهندي هي بعد اُسکي درياي مذکور نور پور کي
 ديهاٽ سي گذرنا هوا ايک پهڙا پر گيا پهر وهان سي زمين پر اتر گانواهن که
 ايک شکارگاه بادشاهي هي اُسکي پايُن آ نڪلا پهر قصبه رهله کي تلي هوتا هوا
 شهر گوبندوال مين پهڙا اور وهان سي کوه کي قريب ستلج سي ملا پهر دونون

بڙي بڙي آدميون کي مڪانات مين چونا ونهين کي پتھرون کا بناکر پهيرتي هين
 يا رکابي پيالي آبخوري نفيس نفيس انکي بناکر بيچتي هين اور متصل اسکي
 مکھيالي کي حدون مين * کتاچھ ايک تالاب هي که اسکي تهاہ کسيکي هاتھ
 نهين لگي هندوون کا قديم تيرتھ هي جب سورج مين کا دوتا هي يعني آفتاب
 برج حوت مين آتا هي هر ايک چھوٹا بڑا انکا وھان نہاني کو جاتا هي يھان
 تک کہ چند روز ايک مجمع رھتا هي غرض اعتقاد اس قوم کا يھ هي کہ
 زمين کي دو آنکھين هين داھني آنکھ تالاب پھکر اجمير کي متصل اور باين
 آنکھ يھ تالاب اور اُسي پہاڑ پر سات کوس پري * رھتاس گڈھ ايک قلعه
 هي بالا ناتھ جوگي اُسي مين تپشا کيا کرتا تها چڑھائي اسکي چار کوس کي
 ليکن آيام معبود مين خصوصاً شيو برت کي دن وھان بڙي بھيڑ هوتي هي بہت
 سي جوگي اتيت بھي جمع هوتي هين اور پوجا کرتي هين القصہ تھوڑا سا
 احوال اماکن مشہورہ مين سي پانچ دوابي کا لکھني مين آيا اب احوال چھ
 درياون کا بھي کچھ کچھ لکھنا ضرور هوا کيونکہ وي بھي اُسي صوبي سي علاقہ
 رگھتي هين * پہلا ستلج کوہ بھونٹ سي نکلا اور کلو کي حدون مين پھنچکر
 شہر مين آيا بعد اسکي شير گڈھ کي پہاڑ مين هوتا کھلور کي حدود مين گذرا
 اور ملک مذکور کو تين طرف سي احاطہ کيا بنا بر اسکي اور پہاڑون کي قرب

کوس سي ڪُڇھ زياده بتاتي هين نام اڪبر نامي مين ڪوڙ جوڏھ لکھا هي اسواسطي
 ڪه جوڏھ نام ايڪ ريس ڇهڻواهي ڪي قوم کا تها يهه پهڙ اسيڪي نام پر
 مشهور هوا اولاد اُسڪي اورنگ زيب ڪي وقت تلڪ ڪرڇهاڪ و نندنه و
 مڱهيالي و غيره پرڳنون مين سڪونت و رياست رڱهتي تهي اور وه جماعت ڪه
 لون وهان سي نڪالتي هي نام اُسکا لاشه ڪش هي الغرض پهڙ ڪي دامني مين
 ڪتني لاشه ڪش ايڪ نقب تين سوگز ڪي گهري ڪهود ڪر ننگي مادر زاد ايڪ
 ڪڍال ڪنڏهي پررڱه ڪر چراغ هاتھ مين لي اُس انڏهيري سُرنگ مين جاتي هين
 اور دو تين من کا ايڪ لون کا ڏلا ڪهود ڪر نڪال لاتي هين “ ناظمون سي
 مزدوري بهي منھ مانگي پاتي هين از بس ڪه مشاق هوئي هين اُس انڏهيري
 سُرنگ ڪي آمد و رفت سي اور لون ڪي ڪهوڏني اور لاني ڪي رنج و صعوبت
 سي خوف و تڪاھل نهين ڪرتي ليڪن هوا اُس نقب مين هر ايڪ موسم ڪي بيچ
 معتدل رھتي هي هرچند ڪه لون نڪالني ڪي اور بهي مقام هين پر ڪهوهره اور
 ڪهيوه دونو بڙي سُرنگين شمشاد آباد ڪي متصل واقع هوئن هين هر سال ڪي
 لاکھ من نمڪ وهان سي نڪلتا هي اور محصول پرڳنون ڪي حاصل سميت سرڪار
 اعليٰ مين ضبط هوتا هي اڪثر ڪاريگر وهان لون ڪي طبق رکابيان سرپوش چراغدان
 بنا بنا بيٺچتي هين اور نفعي اُٿلاني هين قريب اُسڪي دودھيا پتھر ڪي ڪهان هي

پهنجا اُنکي نظر توجّه اُس پر پڙ گئي في الفور ايڪ حالت تازي هُئي اور
 چشمِ باطن في روشني پکڙي پهر سيالڪوٽ سي گجرات مين جاکر مُقيم هُوا اور
 بهت سي مڪان بنواي پل بندھواي خصوصاً امن آباد سي پانچ کوس دريائي
 ڏيک پر لاهور کي سمت شاه راه مين ايڪ پل بڙا محکم بندھوايا ايڪ خلق
 کو آرام پهنچايا سخاوت بهي اُس مين اسقدر تهي که حاتم کا اگر مُعاصر هوتا تو
 کوي اُس کا نام بهي نه ليتا جسقدر خلايق دُور نزديڪ کي اُسکي حضور نقد
 و جنس و غيره بطريقِ نذر ايجائي “ اُس سي دُونگا چوگنا انعام پائي “ آخر
 وه بزرگوار عالمگير کي سترهوين سن جلوسي مين جان بحق هُوا قريب شهر
 اُسکي درگاه آج تلک زيارت گاه ايڪ عالم کي هي قصه مختصر هر طرح کي
 آدمي وهان رهي هين اور هر ديار کي اجناس بهم پهنچي هي بلکہ تحائف
 روزگار اگر درکار هون تو ميسر هونوين چنانچه تلوار جمدهر وهان بهتر سي بهتر
 بنتي هين اور کام چکن کا بهي وهان کي کاريگر سيالڪوٽ والون سي بوجّه
 احسن کڙي هين سواي اُسکي ملڪ مذکور مين گهوڙا عراقي کي مانند پيدا
 هوتا هي بعضاً تو دس هزار روپي قيمت پر بکڻا هي اور * سنڌه ساگر کي دوابي
 مين نمک سنگ آيسا لطيف لکڻا هي که روي زمين مين اُسکي لطافت کا
 شور هي قدرتِ الهي سي سارا پهڙ کا پهڙ لون کا خلق هُوا هي طول اُسکا سو

کی کناری پر ہی شاہ جہان کی وقت میں نواب علی مردان خان فی متصل
 اُسکی ابراہیم آباد ایک بڑا شہر اپنی بیٹی کی نام پر بسایا " اور ایک بڑا
 باغ پر فضا رشک شالامار بنایا " سوای اُسکی اور بھی عمارات و مکانات
 عالیشان تعمیر کی اور ایک نہر بھی دریای لوهی سے اُس باغ کی واسطی
 لایا غرض چھ لاکھ روپی اُنکی تعمیر و ساخت میں خرچ ہوئی اور ساڈھوری کی
 دیہات میں سی ایک گاؤں سرکار اعلیٰ سی باغ و شہر مذکور کی مرمت و
 تعمیر کی واسطی بطریق انعام آل تمغا نواب موصوف کی نام پر مقرر ہوا اور
 دوآبی میں * چھوٹی گجرات ایک قصہ ہی کہ اکبر بادشاہ کی سلطنت میں
 بسا اور سیالکوٹ کی علاقہ سی کچھ گاؤں نکالکر اُس سی متعلق کی اور ایک
 پرگنہ جدا قرار دیا لیکن ابتدا میں یہ قصہ چندان رونق نہ رکھتا تھا جب سی
 خلاصہ عرفا شاہ دولانی اُس میں رہنا اختیار کیا اور تالاب کوئی مسجدیں بنائیں
 بلکہ دریا پر بھی پل بندھوایا تب سی آبادی اُسکی زیادہ ہوئی اور رونق
 بڑھی " کہتی ہیں کہ شاہ صاحب مذکور اوایل میں کماپندھر سیالکوٹی کا غلام
 تھا لیکن محبت فقرا سی بدل رکھتا خصوصاً سید نادر کی خدمت اکثر بجا لاتا
 اور بیشتر اُنکی حضور حاضر رکھتا جب سید موصوف کی رحلت کا وقت

چھوٹی بڑی وہاں بھی اکثر زیارت کو آیا کرتی ہیں * دھونکل ایک مکان ہے کہ
 اُسکو سلطان سرور سی منسوب کرتی ہیں اگرچہ وہ ہمیشہ زیارت گاہِ خلائق
 ہی لیکن گرمیوں کی موسم میں اکثر ملکوں سی زن و مرد کی غول کی غول
 غٹ کی غٹ وہاں زیارت کی لئی آتی ہیں بہتیری نذرین چڑھاتی ہیں دو
 مہینی تلک خلق کا وہاں انبوهہ رہتا ہے اور پندرہ کوس شہر مذکور سی *
 پور مندل ایک مکان جموں کی پہاڑوں میں ہے ٹھاکر اُسکا مہادیو بیساکھی
 میں وہاں ایک دنیا دہاتی لا ہے "اور بہت سی خلقت آتی ہے" یہاں تلک
 کہ ایک بڑا انبوهہ ہو جاتا ہے پھر پہاڑ کا راجا بھی ایک دھوم دھڑلی سی آتا
 ہے "اور اپنی تیر اندازی کی کرتب اور کمال اُس دنگل کو دکھاتا ہے" اور
 مقام مذکور سی ایک دریاؤ بھی نکل کر ظفر ڈال و غیرہ کی دیہات و حدود
 میں ہوتا ہوا شاہ دولا کی پُل تلی جا پہنچا پھر دولت آباد و فرید آباد و غیرہ
 سی گذرتا ہوا راوی سی جا ملا اور جموں میں قلعي کی کھان بھی ہے پتھریان
 لوهي † ندي سي لاکروڻنھن آئچ ديتي ھين ايسي قلعي سفيد و پاڪيزه و صاف و
 پايدار بنتي ھي ڪه ويسي ڪھنن ڦھين ملتي * ساڏھورا ‡ ايڪ بڑا قصبہ چناب

‡ Seemingly the same as دھنکدھرا a ceremony in honour of *Mahādeva*.

† In a Persian MS. written تروهي. ‡ In a Persian MS. written سودھره.

وہ بھی نہایت سفید و صاف و خوش قماش و پایدار ہوتا ہی چنانچہ اُسکو
 بھی بعضی اطراف و نواح میں بطریق تحائف بھیجتی ہیں اگرچہ دستکاری
 کی طریقہ وہانکی اہل حرفہ اکثر طرح کی رکھتی ہیں خصوصاً ریشم و کلابتون
 کی چکن کی تھان پٹکی چیری سوزنیاں دسترخوان ادقچی خوانپوش وغیرہ
 نہایت صفائی و خوبی کی ساتھ بناتی ہیں “ فایدی بھی اُسکی بیع و شرا
 میں اُٹھاتی ہیں “ چنانچہ اورنگ زیب کی وقت تلک ہر سال میں چکن
 دوزون کو لاکھ رپی کا انتفاع ہوتا تھا اور ہتھیاروں میں وہان کٹاری برچیہی
 نہایت آبدار و خوش قطع بنتی ہی باغ بھی اُس شہر کی اطراف میں بہت
 سی ہیں خصوصاً نذر محمد بھونی کا باغ نہایت پر بہار و میوہ دار ہی رنگ
 برنگ کی پھول اُس میں بہتایت سی پھولتی ہیں ایک خلق وہان سیر کو
 جاتی ہی اور حظ اُٹھاتی ہی متصل اُسکی ایک نالا بہتا ہی کہ سرچشمہ اُسکا
 جموں کی پہاڑ میں ہی غرض وہ نالا شہر سی آگے بڑھ کر دس دس کوس
 کی عرصی میں پھیلا ہی اور اطراف میں متفرق ہوا ہی لیکن جب موسم
 برسات میں خوب چڑھتا ہی تب شہر کی باشندی لنگیان باندہ باندہ مسکین
 لی لی وہان آتی ہیں “ اور آب بازی کی کیفیتیں اُٹھاتی ہیں “ اور اس
 خطہ برک افزا میں حضرت امام زین العابدین کی کسی فرزند کا مزار ہی

اب تلک یادگار هي ايک زماني مین دار الحکومت پنجاب کا بھی تھا تین
 کوس کی عرصی مین اُسکی آبادی تھی غرض عالمگیر کی وقت سی سیالکوٹ
 مشہور ہوا جمیع قصبات سی یہ صوبہ زیادہ آباد تھا جب سلطان شہاب
 الدین غوری فی پانچویں مرتبہ سن پانسو اسی ہجری مین آکر لاہور کو گھیرا اور
 فتح یاب اُس پر نہوا تب سیال کوٹ کی طرف آیا اور وہانکی پُرانی قلعی کی
 پھر تعمیر و مرمت کی بلکہ کچھ فوج بھی اپنی وہان چھوڑی بعد ایک مدت
 کی راجا مان سنگ اکبر شاہی جمون کا فوجدار اور سیالکوٹ کا جاگیردار قلعی
 کی مرمت اور شہر کی آبادی پر متوجہ ہوا مین بعد اُسکی صفدر خان
 جہانگیری جب کہ فوجداری قصبہ مذکور کی اُسکو ہوئی اور پرگنہ مسطور
 اُسکی بھی جاگیر ہوا خان موصوف فی تو قلعی اور برجوں کو نیی سر سی بنایا
 بعد اُسکی بھی اکثر حاکم مرمت کرتی رہی غرض یہ شہر فیض بنیاد دین بدن
 آراستہ و آباد ہوتا رہا چنانچہ وی قانون گو جو قوم بدھرہ سی تھی انہوں فی
 بھی عمارتین نہایت مطبوع و دلچسپ بنائیں بلکہ بعضی اور بھی اشخاص
 اکثر اوقات تعمیر مین مشغول رہی اس سبب رونق مدام بڑھتی گئی اور
 آراستگی اُسکی مرتبہ اعلیٰ کو پہنچی کاغذ بھی شہر مذکور مین خوب بنتا
 ہی خصوصاً مان سنگی اور حریری ایک کاغذ کہ جہانگیری فی فرمائیشتی بنوایا تھا

مین اتر طرف کی پہاڑون کی بیچ * گڑھ کانگرہ ایک قلعہ ہی حصانت و
 متانت اُسکی شہرت رکھتی ہی اور نیچی اُسکی نگر کوٹ ایک قدیم معبد
 ہی ٲھکراين وهانکي بهواني برس مین دو مرتبي وهان بهي خلايش کا هجوم هوتا
 هي لوگ ايک برس کي راه سي بهي پوجا کو آتي هين “ اور اپني مرادين
 پاتي هين “ بعضي اپني حاجت رواي کي لي زبان کاٹ ڈالتي هين کسيکي
 تو کي ساعت کي بعد جون کي تون هو جاتي هي اور کسي کي دو تين دن
 کي پيچهي عجيب تر اسي به هي که بعضي اشخاص اپني سرتن سي جدا کر
 ديتي هين اور رفيق اُنکي اُٲاکر دھڑ پر دهر ديتي هين رام کي ديا سي بدستور
 لگ جاتي هين اور وي پهرکر جي اُٲهتي هين نگر کوٹ سي دو کوس پر *
 جوالا مکهي ايک مکان هي وهان کي جاگه آگ کي شعلي بهڑکتی هين اکثر
 هنود پوجا کو اُس مقام مین بهي آتي هين “ اور طرح بطرح کي اشيا اُن شعلون
 مین ڈال کر جلاتي هين “ اور راکھ هونا اُسکا اپني حق مین اُکسیر جاتي
 هين * رچناو بهي دواي مین قدیم شهر هي راجا شل ني اُسي آباد کيا تھا
 چنانچہ کتاب مہابهارت مین که اُسکي تصنيف کو پانچ هزار برس سي کچھ
 اوپر هوئي یوں لکھا هي اور سیالکوٹ بهي اُسي کہتي هين اس وجہ سي که
 بعضي اُسکو راجا سالباھن سي منسوب کرتی هين چنانچہ ايک ٲکا قلعہ اُسکا

خرید فروخت کي جابجا دھوم دھام “ کسي مجلس مين قصه خوانون کي
 للکار “ کسي مجمع مين نقليون کي پکار “ کسي سمت دو چار گوئي طنزوري
 لي گاتي هين “ کهين دس پانچ فقير نقاري هي بجاتي هين “ کسي رستي پر
 تين چار بهنگي زنگي جهگڑ رهي هين “ ايک دنگل مين پهلوان کشتي هي
 لڑ رهي هين “ (آبيات) کهين ناچتي هين بهولي کي “ کهين نثوي ليتي
 هين ايک گت نيي “ دکھاوين کسب بهان متيان اُدھر “ اُدھر کو چڑھين
 نثيان بانس پر “ غرض چي چي پر ايک نيا تماشا اور قدم قدم پر ايک
 اچنبهي کا رولا رات دن رھتا هي “ کان پڑي آواز سني نهين جاتي “ خلق
 کو کھاني کي بهي سرت نهين آتي “ اگر عالم علوي بهي وهان آتا “ تو ايک
 نظاري مين عجائب سماوي کو بهول جاتا “ القصه ربع مسکون کي سياحون
 ني اور بحر و بر کي مسافرون ني اس طرح کا ميلا کسي سرزمين مين نهين
 ديکھا اگر پتالي کي باشندي سيکڑون کوس کي مسافت پر کيسي هي جمعيت
 و حکومت و دولت سي هون پر اسکي ديد کي خواهش اُنکو کیا معني جو نهو
 ناظرين کو معلوم هو راقم ني پتالي کا احوال اتنا طول و طويل جو لکھا وجه اسکي
 محض خلاصه الهند کي مطابقت تهي اور اسکي مؤلف ني جو اس قدر بڑھايا
 بجا کیا کہ مقام مذکور اسکا مولد تھا اور پچاس کوس پتالي سي اسي دوابي

خدمت بھي ڪرينگي پٿالي سي دو کوس * اچل نام ايڪ مڪان هي سيام
 ڪارٽڪ مهاديو کي بيٺي سي منسوب قديم پرستشگاه وهان ايڪ بڙا گڙها هي
 آگ سي معمور ليڪن آگ اُسکي تاثير آب سرد کي رکڻي هي موسم بهار مين
 هزارون ايت جوگي اور بڙي بڙي تپشي رياضي آڪروهان اُترتي هين سواي
 انکي اور بھي هندو جهوڻي بڙي زن و مرد اطراف و اکناف سي آتي هين
 ڪثرت خلايق کوسون چھ دن تلڪ رھتي هي ايڪ جماعت کو فقط فقرا هي
 کي زيارت سي سرور ”ايڪ گروه دوستون آشناون کي ملاقات سي سرور“
 ڪٿني اشخاص قسم قسم کي لوگونکا انبوه ديگھڪر خالق کي قدرت کي ندرت
 کي حيران ”بهتيري پري وشون اور خوبروون کي حسن و جمال پر نظاره
 گنان“ بعضي مهمان دوست لوگون کي ضيافتون سي شاد و خرسند ”بهت
 سي مريض فقرا کي دوا دارو سي سودمند“ ايڪ طرف دورسته بازار لگا هوا
 رستا زن و مرد کي ڪثرت سي جهان تھان بھرا هوا ”دوکانون مين انواع و
 اقسام کي جنس رنگ رنگ کي پھول طرح طرح کي ميوي بھانت بھانت
 کي مٿيا جي سوقت چاهو مھيا“ جڏھر تڏھرديد ڪرو ايڪ عالم نظر آئي نيا
 ڪسي دوکان کي ديوار رنگ رنگ کي تصويرون سي لپي هوي ”ڪسي جاگھ
 مٿي کي مورتون کي ايڪ قطار لڳي هوي“ ليني ديني والون کا ازدحام

مُريدون مُعتقدون ڪو ستره برس راه بتاتا رها اُسڪي پڇهي گروهرڪشن اُسڪا بيتا
 خورد سال تها تين برس تلڪ جوگ ڪي مسند پر بيٺا رها ليڪن اُسڪي بعد
 ايڪ چيوڻا بيتا گرو هر گو بند هي ڪا تيغ بهادر نام پهر جا نشين هوا اور گياره
 برس تلڪ اپني جد و آبا ڪي طريقي ڪو بدستور اُسنِي جاري رکها آخر الامر
 بادشاهي اميرون ڪي قيد مين پهسا قصه کوتاه سن ايڪ هزار اڪاسي هجري مين
 ڪه مطابق اُسڪي ستره سن عالمگيري تهي حسب الحكم بادشاه ڪي شاه جهان
 آباد مين مارا گيا ليڪن خلاصه الهند ڪي تصنيف ڪي وقت گرو هر گو بند راڻي
 گرو تيغ بهادر هي ڪا بيتا اپني باب ڪا جا نشين تها اور بايس برس اُسڪي
 سجاده نشيني ڪو گذري تهي القصه مريد بابا نانڪ ڪي اڪثر صاحب حال و قال
 هوتي هين اور اُنڪي خاص عبادت يه هي ڪه اپني مُرشدون ڪي دوهري راڳ
 مين گائين “ اور لوگون ڪي دلون ڪو لبهاين ” دوست و دشمن ڪو ايڪ سا
 جانين “ سواي اپني هاديون ڪي ڪسي سي علاقه نرڪمين “ في الواقع جونانڪ
 پنٿيون ڪا فرقہ اپني مُرشدون سي اعتقاد رکها هي ايسا ڪوئي اور ڪم هين رکها
 هوگا چنانچه وارد صادر ڪي خدمت اپني مُرشد ڪي نام پر عبادت عظيم جانتِي
 هين هرچند ڪه ڪيسا هي اجنبي هو بلڪه چور اور رهزن تلڪ جب بابا نانڪ
 ڪا نام اُسنِي ليا پهر بي اُسڪو اپنا بهائي هي سمجھينگي اور موافق مقدور ڪي

بملڪ پهنجا ايڪ عالم اطراف ممالڪ سي آڪر اُسڪا مريد هوا چنانچہ ايڪ
 گویا مردانه نام اُسڪا بڑا مقرب تھا وہ اُسڪي اڪثر دوهري اس لطف سي گاتا
 کہ ايڪ عالم ريجہ جاتا “ بلکہ اُسڪي کمال کا اعتقاد لاتا “ ندان وہ تپشيون
 و رياضتيون کا پيشوا سليم شاه افغان کي عهد سلطنت مين ستر برس سي کچہ
 اوپر هوکر بيڪنٿہ باسي هوا اگرچہ لکھميداس اُسڪا بيٺا سپوت تھا ليکن جوگ
 کي دولت جو اُسڪي قسمت مين نہ تهي انگد نام کهڙي کوکہ اُسڪا خاص
 صاحب تھا گروانگد خطاب ديگر مرئي وقت اپنا قائم مقام کرگيا وہ تيره برس
 اُسڪا جا نشين رها جب مرئي لگا لا ولد تھا بنا بر اُسڪي اپني داماد کوکہ اُسڪا
 امرداس نام تھا خليفہ کیا ان بي بايس برس تلک سرشته فقر کا جاري
 رکھا “ اور ايڪ خلق کو گرويده کیا “ پھر بيڪنٿہ کا رستہ ليا “ اگرچہ اولاد
 اُسڪي تهي ليکن آخري وقت اُسني بهي اپني داماد رام داس کو اپني جاگہ پر
 بٿلایا اُسني سات برس تلک زندگي کي اور وھي راہ چلي “ آخر هستي کي
 بستي تيجي “ بعد اُسڪي گرو ارجن اُسڪا بيٺا اُسڪي مقام پر بيٺا آخر پچيس
 برس کي بعد اُسڪا بهي انتقال هوا پھر گرو هر گوبند اُسڪا خلف خليفہ هوا اٿتيس
 برس تلک جيا اور اُسي چلن پر چلا اُسڪي بعد گرو هر راي اُسڪا پوتا جا نشين
 ٿھرا ڪيونکہ بيٺا اُسڪا اُسڪي آگي هي مر چڪا تھا قصہ کوتاه وہ بهي اپني گھرائي کي

چنانچہ چندرَبھان مَنشی شاہجہانی فی طرفین کی جواب و سوال کو جمع کرکے ایک کتاب عبارتِ فارسی میں نہایت مربوط لکھی ہے بارہ کوس پتالی سی راوی کی کناری * بابا نانک کا مکان ہے عالمگیر کی وقت تلک اُسکی اولاد و نہین رھتی تھی غرض اپنی وقت میں وہ بڑا جوگی تپشی دھرمی تھا ہندوؤں کی اکثر فرقی اُسکی کرامات کی قایل ہیں خصوصاً سکھ اُسکو بہت مانتے ہیں اور اتیتوں میں ایک فرقہ نانک پنٹھیوں کا جو ہے اُسکا سلسلہ اُسی کو پہنچتا ہے بہت سی دھرمی اُسکی جن سے وحدانیت و معرفت ٹپکی پڑتی ہے مشہور ہیں چنانچہ اکثر اہل مذاق اُنکو ذوق شوق کی حالت میں پڑھتی ہیں "اور آنسو اُنکی ٹپک پڑتی ہیں" قصہ کوتاہ پندرہ سو چھتیس بیربکرماجیتی میں مطابق جسکی آٹھ سو چورائوی ہجری میں تلونڈی کی بیچ یہ تپشی پیدا ہوا اور و نہین اپنی نانا کی گھر میں پلا لیکن لڑکائی سے اُسکو چپ تپ کا دھیان تھا رام سے دن رات لو لگائی ہے رھتا چنانچہ آثار فقر کی اور کشف و کرامت کی اُسی سن میں اس سے ظاہر تھی اور اکثر اشخاص اُسکی معتقد آخر بہت سی ملکوں کی سیر کرکے پتالی میں آیا و نہین کدخدا ہوا اور قصہ مذکور کی ایک کاؤں میں دریا کناری رھنا اختیار کیا از بس کہ شہرہ حق شناسی اور خدا پرستی کا اُسکی ملک

سر سبز هوا اس واردات ني اطراف مين شهرت پکڙي “ اور خلق کي رجوع
 زياده هوي “ غرض ابتلاک بهي اُسکي درگاه چهوڻي بڙون کي زيارت گاه هي
 هر جميرات کو وهان بهيڙ هوني هي خصوصاً نو چندي جميرات کو تو زن و مرد
 بکثرت دور دور سي بهي آتي هين “ اور نذرين قسم قسم کي چڙهاتي هين “
 بلڪه اپني مطلبون پر نذرين مانتي هين اور مرادين پاتي هين پر اچنبها زياده
 په هي که اُس بزرگ کي درگاه کي خادم هندو هين ديپالي کي اولاد سي هر
 چند اهل اسلام ني چاهي که اُس جماعت کو وهان سي دفع کرين اور اس
 خدمت کو چهين لين پر کچه پيش رفت نهوا چنانچه عالمگير کي وقت تلک
 تو مجاور وهي لوگ تهي اب کي خدا جاني قريب اُسکي * دهيان پور ايک
 مکان هي وهان بابا لال ايک درويش بڙا موحّد صاحب کمال رهتا تها با وجود
 اُسکي سليقه تقرير کا بهي اُسکو خوب تها چنانچه وحدانيت و معرفت الهي
 اس خوبی سي بيان کرتا تها که سامعين حظ وافر اُتھاتي تهي “ اور اُسکي کلام
 کي سني کو اکثر اوقات آتي تهي “ اور نظم هندي بهي اُسکي اس مضمون
 کي بهت هي بلڪه اکثر اشخاص اُسکو ورد وظيفي کي طور سي پڙھتي هين اور
 بهت سي خاص و عام اعتقاد اُسي رکھتي هين کھتي هين که دارا شکوه کي اُس
 بزرگ سي بيشتري ملاقات تهي اور کلمه و کلام عارفانه بهي باهم اکثر رھتي تهي

کي ايڪ سرگذشت ٻي هئي ته ايڪ هندو ديپالي نام بڙا راسخ الاعتقاد تها
 جب گنگا کي نهان کا موسم آيا اور هندوونکي گروه کي گروه جاني لڳي ديپالي
 في ٻي اس بزرگ سي رخصت مانگي انني فرمايا ته جب روز معهود آوي
 مڃهي ياد دلايو چنانچه جب وه دن آيا ديپالي في عرض کي فرمايا ته آنکهن
 بند کر جونهن کين اپني تين گنگا کي کناري پر ديکها اور بهائي بندون سي
 ملاقات کرکي انکي ساڻه نهايا انهن في ٻي اسي ديکها پهر جونهن آنکهن
 کھول دين اپني تين اس هادي کي مجلس مين پايا نهايت حيران هوا جب
 ته اسکي بهائي بند اپني اپني گھرون مين آئي اور اسکو وطن مين ديکها هر
 ايڪ في کها ته ديپالي همارا شريڪ تها چنانچه باهم گنگا مين نهائي ٻي تهي
 ليکن مراجعت کي وقت هم سي پيش قدمي کرکي ٻي پھلي پننچا هم پيچهي
 آئي آخر الامر حقيقت حال سي واقف هوي ” اور ايڪ مدت دريائي حيرت
 مين غرق رهي ” نادر تر اس سي ٻي هئي ته اسکي انتقال کي چند سال بعد
 بڙهيون في کلانور کي حاڪم کي حڪم سي سرس کا درخت ته اسکي قبر کي
 نزديڪ تها اسي کات کر عمارات کي واسطي ٿگري ٿگري کيا ايڪا ايڪي ايڪ
 آواز هيبت ناڪ آئي اور زمين وهانکي کانپني لڳي پهر اس درخت کا تنه
 خود بخود اٿه کھڙا هوا بڙهي اس سانحي سي ٿر کر بهاگ گئي وه ٿنڻه پهر

بعد اُنکي گنگا دهر هيرانند کي ٻيٽي تي ايڪ پکا کوا شهر کي بازار مين ڪهايا “
 ساٿه اُسکي ايڪ باغ معه باولي سواد شهر مين لاهور کي رستي پر بنايا “ غرض
 دونون مقامون کو آبرو بخشي “ اور وهانکي باشندونکو بلڪه مسافرون کو راحت
 ڏي “ از بس که دونون کا پائي آب گنگا سي مساوي هي بسبب اُسکي اُنکي
 پائي کا نانوَ گنگادهر مشهور هوا اگرچه اطراف شهر مين باغ بي شمار و گلزار پر
 بهار هين ليکن امر سنگ قانون گو تي ايڪ باغ شالامار کي مشابه نهايت
 مطبوع و دلچسپ بنايا اور اُسکي تين درجي رکهي اوپر کا درجه شمشير خان
 کي تالاب پر مشرف هي القصه اُسکي سير کوي غم نهين جسي نهين ڪهوتي “
 اور اُسکي ڏيد سي طبيعت کسيکي ڪهي سير نهين هوتي “ سواي عمارات و
 باغات کي اندر شهر کي اور باهر اُسکي اطراف مين بهت سي مردان خدا
 آسوده هين انهن مين سي شهاب الدين بخاري و شاه اسماعيل و شاه نعمت
 الله و شيخ الله داد هين که هرايڪ اپني عصر مين اهل کمال و صاحب
 حال تها اور وهان سي دو کوس پر موضع * مسالي اُس مين مزار شاه بدر
 الدين کا هي سلسله اُس عزيز کا پير دستگير کو پهچتا هي چار کوس پتالي
 سي * ديپال ڌال اُس مين درگاه شاه شمس الدين دريائي کي هي اُس بزرگ
 کي بهي کرامات و خرق عادات زبان زد خلایق هين چنانچه اُسکي حين حيات

گهتي هين اس واسطي قصه مذکور کا پي نام رکھا پھر بہت سي جنگل کٹواکر
 گاؤں بسائي کھيت بوائي آخر ايک پرگنه مقرر هو گیا چنانچہ تحصيل اسکي
 اورنگزیب کي وقت مين تو گنج قارون سي بهي کچھ افزود تھي القصه قصه
 مذکور ابتدا مين چندان آباد نه تھا شمشير خان خوجه اکر کي وقت جو
 وهان کا کڑوڑا هوا اُسنی ايک مکان حاکم نشين اور تالاب لطيف و باغ وسيع
 وهان بناکر رونق اسکي دو چند کر دي “ پھر دن بدن آبادي بڑھتي گئي “
 يهان تک کہ ايک شهر معقول هوا بعد اسکي شيخ المشايخ کڑوڑي ني ايک
 عمارت نيٹ انوٹھي اور پهلوري بہت خاصي بناي اُسنی آبادي کو اور ترقي
 دي “ اور بهار تازہ بخشي “ پھر اورنگ زیب کي وقت وزير خان عرف
 مرزا محمد خان جب امين هوا اُسنی عالم گير کي بارھويں سن جلوسي مين
 تمام دکانين بازار کي پختہ کر دين اور بانکي راڻي اور سجان سنگ دونوں
 قانون گوون ني بلکہ اُنکي بيتون ني بهي کُشي مکانات پر فضا بناي سواي اُنکي
 ايک کاروان سراي اور پره بهي بنا کيا بعد اسکي قاضي عبد الحّي ني عمارتين
 سنگين و رنگين بنائين ساڻھ اسکي ايک بازار کاروان سرا بهي نہایت وسيع اور
 ايک مسجد جامع بمرتبہ رفيع بنوائي بلکہ ايک باغ بهي بہت بڑا دلگشا
 بنوایا پھر تو شهر کي رونق چوگني هو گئي “ اور آبادي حد سي زيادہ بڑھي “

اُس شهر کا رائي رام ديو بهتي هي ڪه ڪپور تهل ڪا زميندار اور اپني قوم ڪا سردار تها مشهور هي ڪه سابق اس سي ايڪ مرتبه پنجاب مين اس طرح ڪا طوفان آيا ڪه سٽلج سي چناب تلڪ تمام زمين سطح آب هو گئي بسبب اسڪي عمارتين ڏهه گين اور بستيان خراب هوين بلڪه هزارون دي حيات بهي ٿوب ڪر هلاڪ هوئي چنانچه طوفان ڪي جانڪي بعد بهي ايڪ مدت يه سرزمين ويران پري رهي بعد ايڪ عمر ڪي بعضي بعضي جاگه آباد هوئي ليڪن مغل بلخي و ڪابلي از بس ڪه هر سال پنجاب پر ڏوڙا ڪرڻي تهي اس جهت سي يه ولايت مدتون خراب رهي زراعت اس مين بهت ڪم هوتي تهي حاصل بهي چندان نه تها جب سلطان بهلول لودي ڪا وقت آيا تب تاتار خان صوبه دار لاهور ڪا هوا اور اس سي رائي رام ديو بهتي في تمام پنجاب ڪو نو لاکھ ٽڪي پر اجاري ليا اتفاقا ايسي واردات در پيش هوئي ڪه رائي مذكور مسلمان هوا اور يه هي اسڪي پيش آمد ڪا باعث ٿهرا بعد اسڪي آڻه سو ستهتر هجري اور پندرہ سو بير بگرام جيتي مين خان موصوف ڪي اجازت سي پٽالي ڪو ڪه محض ايڪ جنگل تها آباد ڪيا وجه تسميه اسڪي يه هي ڪه شهر ڪي بنياد ڪي وقت بد شڪني هوئي تهي بسبب اسڪي جاگه بدلي قريب هي اسڪي ايڪ پستي پر بنا اسڪي پهر ڏالي اور پٽالا پنجابي زبان مين مبادلي ڪو

نذرین اُسکي قبر پر چڙهائي هين ” ڪهڙي هين ڪه شيخ مرحوم اپني وقت مين
 صاحبِ ولايت و خلاصه اهلِ رياضت تها اور مزار شيخ عبد الله سلطان پوري
 ڪا بهي اُسي کي نواح مين هي ڪمالات و حالات اُسکي مشهور و معروف
 خطاب اُسکا سليم شاه کي سلطنت مين شيخ الاسلام تها پهر همايون و اڪبر کي
 عهد مين مخدوم الملڪ ٿهرا اور اُسي دوابي مين * بجوازه بهي ايڪ پرانا
 قصه هي سرِ يضاف و بافته ڏوريه پڇتوليه جهونه سفيد چيره پٿڪا سنهري آنجل
 دار وهان ڪا هند مين مشهور هي ليڪن چيهنت سلطان پور هي مين خوب
 جهڙي هي بلڪه بادل بهي ونهين ڪا نهايت چمڪ کي ساڻه هوتا هي اور
 دوابي مين * هيبت پور بهتي ايڪ پرگنه هي وهانکي گهوڙي عراقي کي مانند
 هوتي هين چنانچه بعضي بعضي دس دس پنڌره پنڌره هزار رُپي ڪو بکتي هين
 اور بهتي هيبت پور کي متعلقات سي جگ گوردهر گوبند ايڪ مقام هي
 اُس مين ايڪ باغ نهايت پُر فضا ” اور ايڪ تالاب نيٺ خوشنما ” سير
 کي قابل اور ديد کي لائق هي چنانچه بيساڳهي کي دن وهان هزارون آدمي
 جمع هوتي هين اور اُس سي دو تين کوس پر * رام تيرتھ ايڪ ٻڙي پرستشگاه
 هي هوند وهانکي بهي پرستش ڪا نتيجه ثواب عظيم ڄاڻتي هين گهي کوس وهان
 سي * پٿاله ايڪ قصه دلڪشا اور معموره خوش آب و هوا هي بساني والا

مفقود “ اجناس هفت کشور بلکه اشیای بحر و بر با فراط موجود “ خرید
 فروخت لیل و نهار “ لین دین کا همیشه گرم بازار “ اگرچہ کوچہ و بازار
 مسجد سی خالی نہ تھا لیکن دریا کی کناری مقابل دولخانہ عالمگیر کی ایک
 مسجد سنگین عالیشان ایسی تعمیر ہوئی جسکی بنا پر پانچ لاکھ روپی صرف
 ہوئی سوای اسکی شہر کی بیچون بیچ وزیر خان عرف حکیم علم الدین
 شاہجہانی فی ایک جامع مسجد ایسی خوش قطع بنا کی کہ شہر کی رونق
 دو چند ہو گئی مزار بھی اکثر بزرگوں کی شہر مین ہیں خصوصاً پیر علی
 خجوری کہ جامع فصیلت و ولایت تھا وہ بھی ونہیں آسودہ ہی اور مقبرہ
 جہانگیر بادشاہ کا دریای راوی کی اُس پار شاہ دری کی متصل واقع ہی لگا
 ہوا اُس سی مقبرہ آصف خان ابو الحسن جہانگیری کا اگرچہ حواشی شہر
 مین باغ اکثر پر فضا ہیں لیکن باغ شالامار کہ شاہ جہان فی نقل باغ کشمیر
 کی بنایا ہی اسکی سیر سی اکثر خاطر بستہ کو شگفتگی اور دل پڑمردہ کو تازگی
 ہوتی ہی جب کہ احوال دار السلطنت کا قدری لکھنی میی آیا لازم ہوا کہ
 کچھ کچھ قصبات کا بھی تحریر کیجی * جالندھر ایک قصبہ قدیم دواہی مین
 ہی شاہ ناصر الدین ونہیں مدفون ہوا “ اور مزار اسکا زیارت گاہ خلایق تھہرا “
 خصوصاً گرمیوں مین اکثر اشخاص وہان زیارت کو جاتی ہیں “ اور نیازین

آلدین محمد جهانگیر فی بڑی بڑی عمارتیں بنا کر ایک مدت نزلِ اِجلال فرمایا “
 اور رونق کو اسکی زیادہ بڑھایا “ چنانچہ وی عمارتیں عالمگیر کی وقت تلک
 بھی موجود تھیں سوای اسکی کچھ کچھ عمارتیں حویلیان شہزادوں فی بھی شہر
 مذکور میں بنیاد کیں بلکہ امرای والاشان فی بھی خصوصاً عمارت ابو الحسن
 آصف خان بن اعتماد الدولہ کی نہایت زینت بخش ہوئی اور شاہجہان کی
 بھی بادشاہت میں آبادی اسکی دن بدن بڑھا کی جب عالمگیر کا وقت آیا
 تب دریای راوی ایسا چڑھا کہ شہر کی اکثر باغات و عمارات کو صدمہ
 عظیم پہنچا تب بادشاہ فی چوتھی سن جلوسی میں ارشاد کیا کہ ایک باندہ
 مستحکم بنائیں کہ عمارات کو بار دیگر اس طرح کا صدمہ نہ پہنچی فرمان
 برداروں فی بھی ویسا ہی باندہ مضبوط کوس بھر کی طول کا باندھا اور اکثر
 جاگہ سپڑھیان پگی دریا میں بنا کر کناری کو خوش اسلوب کر دیا بلکہ عمارتیں
 پگی پگی اور حویلیان اچھی اچھی لب دریا بنا کر شہر کو بھی صفحہ تصویر
 بنا دیا غرض چوتھی سال کی شروع سی چالیس برس تلک ہر سال مرمت
 و تعمیر اسکی سرکار والا سی ہوتی رہی اور مبلغ کثیر خرچ ہوا کیی پھر تو
 یہ مجستہ بنیاد یک دست آباد ہوا لوگوں کی کثرت اور ہنرمندوں کی بہتایت
 ایسی کم کسی شہر میں ہوئی ہوگی مفلسی و تنگدستی کی دروازی یک لخت

صوبہ لاہور“ قدیم شہر ہی راوی کی کناری کہتی ہیں کہ راجا راسچند کی بیٹی بلو فی اُسی آباد کیا اور بعضی تاریخوں میں نام اُسکا لہور و لہاور لکھ گئی ہیں جب کہ آسمان کی گردش سی بعد گزرنی کتنی دوروں کی آبادی اُسکی ویران ہوئی اور تھوڑی سی نشان کہیں کہیں رہ گئی تب دار الحکومت اس ولایت کا سیالکوٹ ٹھہرا بعد اُسکی جس وقت سلطان محمود غزنوی فی ہندوستان کو فتح کیا ملک ایاز کہ اُسکا منظور تھا اس شہر کی آباد کرنی پر متوجہ ہوا یہاں تلک کہ ایک پکا قلعہ بنا کر نیی سر سی شہر آباد کیا پھر سلطان محمود کی فرزندوں میں سی خسرو شاہ و خسرو ملک دونوں باپ بیٹوں فی تازہ اس ولایت کو فتح کرکے لاہور کو دار السلطنت کیا غرض اٹھتیس برس تلک دار الحکومت سلطان محمود کی اولاد کا رہا بعد اُنکی کسی ہند کی بادشاہ فی اس شہر میں استقامت نہی بسبب اُسکی بی رونق پھر ہو گیا آخر ایک مدت کی بعد تاتار خان سلطان بھلول کی ایک امیر فی دار الامارہ اُسکو مقرر کیا اُسکی بعد بابر بادشاہ کی بیٹی کامران مرزا فی وہاں بود و باش کی پھر تو آبادی اُسکی زیادہ بڑھ گئی بعد اُسکی اکبر فی اپنی عہد سلطنت میں اُسکی آبادی پر توجہ فرمائی اور ایک شہر پناہ خشتی اُسکی گرد بنائی بلکہ ایک دولتخانہ بھی تعمیر کیا وہ اُسکی رونق کا موجب زیادہ تر ہوا پھر نور

اُطراف مین مشهور هِي هرچند فوج کثیر هو پر اُسي لي نسکي گرمي کي اُس
 ديار مین افراط اور بارش کي قلت ميوه بهي اقسام کا پاکيزه و لطيف هوتا هِي
 ليکن ايک جنگل لق و دق بهکرو سيوي کي ما بين واقع هِي گرميون مین
 تين مهيني تلک باد سموم وهان چلتي هِي جب دريائي سنڌه کي برس کي
 بعد دکهن کي طرف سي شمال کي جانب آتا هِي ديهات ادھر کي خراب هو
 جاتي هين بنا بر اسکي چهپر کي گهرون مین باشندي وهانکي اوقات گذارتي
 هين رواج پکي عمارتون کا کم هِي طول صوبي کا فيروز پور سي سيوستان تلک
 چار سو کوس و عرض خطر پور ۹ سي جلَمير† تلک ايک سو پچيس کوس اور
 جو ٿهڻهي کو اُس مین ملاين تو طول کچ مکران تلک چه سو ساڻه کوس کا
 ٿهڻتا هِي شرق رو ملا هوا سرکار سرهند سي غرب رو اُسکي کچ مکران شمال
 کي طرف پشور جنوب کي سمت صوبه اجمير ملتان و ديپال پور و بهکرتين
 سرکارين تابع اُنکي چهپانوي محال آمدني چوبيس کٿوڙ چهپاليس لاکھ پچين
 هزار دام

خط پور Or ۹

† Perhaps the place written in our maps Jesselmere.

کي اور امر صوبه دار کي بخوبي بجا لوي تغافل شعاري وسهنگاري کا شیوه اختیار
 نڪري غرض ولایت بلوچونکي نيٺ آباد اور زراعت دونو فصلون کي اُس مين
 بافراط هوتي تهي حاصل بهي علي هذا القياس سواي اسکي چورون اور رهنزون کا
 وهان گذر نهين ” کهتي هين که ملتان کا ملڪ سلطان علاء الدين ثاني کي سلطنت
 مين دھلي کي علاقي سي نکل گیا تھا اور اُس پر قوم لنگاه لا مُصرف هوتي تهي پھر
 سلطان حسين لنگاه لا حاکم ملتان في اپني حکومت مين جب ملڪ سهراب و
 غيره بلوچون کو کُمت کي لئي کچ مکران سي بلوایا کزور کوٽ سي دھنکوٽ
 تلک اُنکي جاگیر مين دیا بلکہ اکبر کي عهد سلطنت مين بهي راجا توڑل
 مل دیوان بادشاهي في اُس ولایت کو بلوچون هين پر متعین رکھا اور خراسان
 و هندوستان کي ما بین ایک لشکر جرار متعین کیا سواي اسکي اُنکي حدون
 مين ایک دیوار مُحکم بنا کي جنوب رخ ملتان کي * بھر ایک قلعه
 نہایت متين اور نيٺ سنگين هي کُتب توار مخ سابق مين نام اُسکا منصوره
 لکھ گئی هين طرفه اتفاق هي که دریاي سندھ پنج رود پنجاب سي ملکر
 قریب اُسکي پہنچا پھر دو تُکڑي هوکر بقدر ایک حصي کي قلعه مذکور کي
 اتر طرف گیا اور بقدر دو حصہ دکن طرف غرض مُحکمي اور مضبوطي اُسکي

وقت دریاو هت جاتا هي رطوبت و طراوت كي باعث ايسا گنگان جنگل هو
 جاتا هي كه پياده بهي راه نهين چل سكتا سوار كا تو كيا مقدور اسي سبب اس
 ديار كو لكهي جنگل كهتي هين اور مفسد مذکور اسيكي پناه كي سبب اور اس
 باعث كه درياو كيي تكتري هوكر انكي مساكن مين بهتا هي رهنري و دزدي ندهرك
 كرتي هين امرا و حكام بادشاهي سي انكي تنبيه قرار واقعي هو نهين سكتي جاڙا
 اس ديار مين ميانه گرمي بشدت خريف مين زراعت جوآر كي ربيع مين
 گيهون كي بخوبي هوتي هي اور ملتان كي پچهم طرف پانچ كوس كي تفاوت
 سي درياي چناب پر بلوچونكا ملك هي اس مين انكي دو سردار ايڪ تو
 داودي كه تيس هزار سوار اور پچاس هزار پياده اپني ساٿه ركهتا هي دوسرا هوت +
 كه بيس هزار سوار تيس هزار پيادىكا سردار تها دونو آپس مين مخاصمت كي
 سبب اپني اپني سرحد پر آكر اكثر لڙا بهڙا كرتي تهي ليكن بادشاه كي جاده
 اطاعت سي قدم باهر نهين دهرتي چنانچه پيشكش معمولي هميشه حضور
 اعليٰ مين پهتچاتي تهي اور اپني اپني ملك كو تصرف پادشاهي سي بچاتي وكيل
 بهي هرايڪ كي طرف سي صوبه ملتان كي حضور حاضر رهتا تها كه احكام پادشاه

داوري In a Persian MS. this word is written

هوب In a Persian MS. the word seems written

ديار کي کارِ يگرون کو خوب هي چنانچہ بندر کي چيٿون کي نقل ايسي بنائي
 هين “ که اصل کر دِکھاتي هين “ قلعه وهانکا خشتي اور مزار مخدوم بهاء الدين
 ذکريا کا بهي ونهين هي سواي اُسکي بهت سي بزرگون کي مزار پر انوار اُس شهر
 مين زيارت گاهِ خلائق هين اور شهر مذکور سي چار کوس کي تفاوت سيد زين
 العابدين کي درگاه سلطان سرور بيٿا اُسي بزرگ کا هي وهان بهي گرميون مين
 چار طرف سي لوگ زيارت کو آتي هين کي روز بهتر بهار رهي هي اور
 چالیس کوس وهان سي پري مغرب رو دريا کي اُس پار ايکٿ بهار کي دامني
 مين بلوچون کا شهر سلطان سرور ونهين مدفون هي * اور قصبه اُچ مين قبر شيخ
 جلال ابن سيد محمود ابن سيد جلال بخاري کي هي مخدوم جهانيان اسيکو
 کهتي هين * شهر پٿن که اجودهن بهي اسيکو کهتي هين ديال پور کي وه سرکار
 هي ملتان کي پورب طرف وهان شيخ فرید شکر گنج ابن شيخ جلال الدين
 سليمان فرخ شاه کابلي کي اولاد قصه کوتاه سرکار ديال پور مين دو قوم ڏوگر
 و گوجر سواي انکي اور بهي قومين که تمر و رهزي انکي شهرت رکهي هي
 ماکن هين جب برسات آتي هي ستلج و بياہ دونو درياو کي فرسخ پهيلي هين
 سرکار مذکور کي محالون کي زمين پر اکثر اوقات ايک سطح آب هو جاتي هي
 غرض هر سال وهان طوفان آتا هي “ اور طوفان نوح کو ياد دلانا هي “ پهر جس

سوداگر ملتان اور بھکر سي اسباب و اجناس دريا کي راه سي کشتيون پر ٿيڻي
 مين ليڃاتي هين يهان تلک کي جميع مسافر بلڪه بڙي بڙي لشکر ٿيڻي کي
 طرف غير از راه دريا نهين جاتي ايسا وقت کم هوا هوگا کي خشڪي کي راه سي
 لوگ اُڏهر کو جائن ” اور پاني کي نا يابي و راه کي دشواري سي رنج نه
 اُٿهائين ” طول صوبي کا بھکر سي کچ مکران تلک اڙهائي سو کوس عرض قصبه
 بدین سي تا بندر لاهري سو کوس شرق رو اسڪي گجرات احمد آباد غرب رخ
 کچ مکران شمال رو بھکر جنوب رخ درياي شور سرڪارين اسڪي ٿيڻه سيوستان
 نصير پور امرکوٽ چار متعلق انکي ستاون محال اور پانچ بنادر آمدني نو ڪروڙ
 انچاس لک ستر هزار دام

صوبه ملتان ” قديم شهر هي هر صنف کي اشخاص اُس مين آباد اشيا بهي
 هر ملڪ و هر قسم کي بيشتر موجود خريد و فروخت کا بازار مدام گرم رهتا
 هي عراقي گهوڙي قندهار کي راه سي سوداگر لاتي هين ” اور وهان بيچ جاتي
 هين ” جاڙون کي هوا معتدل گرمي کي موسم مين گرمي شدت برسات کم
 زبان وهانکي باشندون کي لاهوري ليکن سنڌهي اُس مين ملي هوي شطرنجيان
 اور قالينين بهي گلزار وهانکي مشهور هين سواي اسڪي سليقه تقليد کا اس

تو ٺٻين ڏوٻين اور آگ مين جلا ديوي تو ٺٻين جلتين * هنگلاج ايڪ
 مڪان هي ٿهڻهي سي سترڪوس ڏرگا سي منسوب اتر اور پڇم مين درياي شور
 كي نزديڪ ليڪن پاني كي نا يابي اور راه كي خرابي بمرتبہ هي علاوہ اسڪي بهيلون
 كي رهنري كا خوف اس ليي هر ڪوي وهان جا ٺٻين سڪتا مگر بعضي ايت
 خصوصاً سنڀاسي بهوڪه پياس ڪو گوارہ ڪرڪي وهان جاتي هين اور پرستش ڪرتي
 هين غرض اتي جاتي پنڌره ڏن سي ڪم ٺٻين لگتي * سرڪار سيوستان تابع اس
 صوبي كي درياي سنڌه كي ڪناري نزديڪ اسڪي ايڪ بڙا تالاب هي طول اسڪا
 دو ڏن كي راه ڪتني ماهي گير اس پر ايڪ سطح خاڪي بناڪر ساڪن هوي هين
 هر روز مڇلياڻ مارتِي هين “ اور اپني اوقات گذارتي هين “ اور اس صوبي
 مين ملتان و اوچ كي حدون سي ٿهڻهي و ڪچ مڪران تلڪ شمال رو بلند بلند
 پتھر كي پهڙ هين اڪثر بلوچون ني اور بعضي پٽھانون ني اپني ٻوڏ و باش
 وٺين مقرر كي هي اور اوچ سي تا گجرات جنوب رخ ريتل كي پهڙ بهتيون
 كي گروه ني استقامت اپني وهان ٿهڙائي ليڪن انڪي ريسون كي سڪونت جلمير
 مين هي اور راجپوتون كي اڪثر قومون ني بهڪر سي نصير پور و امرڪوٽ تلڪ
 سڪونت كي سواي انڪي سوڌه و جارجھ بلڪه بهتيري اشخاص وهان آڪر ساڪن
 هوي درياؤ بهي اس صوبي مين ڪئي هين ليڪن بڙا دريا سنڌه چٽاڇه اڪثر

دُور دُور تلک جاتي هي “ بلڪه بعضي مُلڪون کي خبر لاتي هي ” اور جو
 کوئي عامل چاهي ڪه اُسکو اس چلن سي باز رکهي تو اُسکي ڪنڀڻيان داغي
 اور آنڪھون مين لون بهرڪر چاليس ڏن تلک لڻا رکهي ڪهانا بي نمک ڪهلاي
 ساٿه اُسکي پڙهنت بهي اُسکي بڙلان عمل کي لڀي پڙهي تب وه اپنا منتر
 بهول جايگي ” اور اُس چلن سي باز آيگي ” ليڪن بيشتر اس پيشي کي
 رنڊيان هوتي هين اور مرد ڪم صاحب خلاصه لکها هي ڪه مين ني بچشم خود
 ايک لڙکي کا ڪلجا ايک ڏاڻن کو ليجاتي ديکها هي هرچند ڪه عقل مين نهين
 آتا ڪه جنس بشر مين اس طرح کي عورت يا مرد هو ڪه جگر ڪسيکي سيني
 سي بدون چاڪ ڪي نڪال ليجائي اور کوئي نديکهي ليڪن خدا کي قدرت
 معمور هي اُسکي صنعت سي گجه دُور نهين بعض انسان کو به بهي قوت
 دي هو اگر هماري مدرکي ني ادراک نڪيا تو به لازم نهين ڪه وه حقيقت مين
 بهي نهووي يا اُسکي نظر مين مؤثر حقيقي ني ايسي تاثير دي هو ڪه جس
 لڙکي کي طرف نگاه بد سي ديکهي اُسکي جگر کو صدمه عظيم پهچي يا کوئي
 افسون اُسي ايسا ياد هو ڪه جس مين اس طرح کا اثر هو مجازا اگر اهل عرف
 ني ڪلجا ليجاتا يا ڪها جاتا ڪها تو مضايقه نهين سواي اُسکي ڏاڻين اور ايک
 منتر ايسا جاتي هين اگر کوئي چکي کا پاٽ اُنکي گلي مين ڌال ڪر ڏبو دي

کي بهتايٽ اقسام کي ميون کي کثرت خصوصاً آم بهت خوش مزه هوتا هي
 لطف يه هي كه خربوزي کي رينديان جنگلون مين خود رو پيدا هوتي هين
 ديکھني کي لائق بلڪه کھاني کي قابل " ڏاينين بهي تهڻهي کي مشهور هين كه
 لڙڪون کي کلبجي منتر کي زور سي تڙت ليجاتي هين " اور اُنکي ماون کي
 دلون مين داغ دي جاتي هين " کھانا تو اُن کي حضور کسيکو کھانا لازم نهين
 ڪيونڪه اُس وقت اُنکا تيرِ نظر جس پر چلي اُسي مار هي رکھي سواي اسڪي
 کھو کھو ايسي حالت اُن پر طاري هوتي هي كه اُس وقت جسکو ديکھتي
 هين هوش مين وه نهين رهتا پھر کي داني اناڙ کي مانند اُسکي پاس سي
 اُسکي هاتھ لگتي هين کسي حڪمت سي ايڪ لمحہ اُنکو اپني پنڌليون کي
 اندر رکھ ڇهوڙتي هي تب تلڪ وه بيچاره بيھوش پڙا رهتا هي ندان آگ پر
 اُنکو رکھ ديتي هي جب وي پھيل ڪر طباق کي صورت پکڙتي هين تب اپني
 همجنسون مين حصي ڪرکي کھا جاتي هي وهان اُسکا ڪام تمام هو جاتا هي اتفاقاً
 اگر وه بد ذات پکڙي جائي تو لازم هي كه اُسکي پنڌليون ڪو چير ڏالين فوراً
 وي داني نڪل پڙينگي چاهيي كه جسکي جگر ڪو صدمہ پھنچا هي اُسي کھلا
 ديوين خدا کي قدرت سي وه شفا پايگا " اور کلبجا اُسکا بچ جاڳا " اور يه
 پلشت چرغ ڪو بهي منتر کي زور سي ايسا رام ڪرتي هي كه اُس پر سوار هوڪر

تَحْتَ هُوَ بِالْفِعْلِ تَهْتَهُ دَارُ الْحُكُومَتِ هِيَ دِیْل بَیْ اُسِیْکُو کَہْتِی هِیْن فِی
 اَلْوَاقِعِ اِیْکُ شَہْرِ کَلان و عَظِیْمُ اَلْشَّانِ هِيَ دُنْیَا کِی چِیْزِیْن اُس مِیْن مِلْتِی هِیْن
 خُصُوصًا مَوْتِی سِوَايِ اِسْکِی اَکْثَر بِنَادِرِ کِی اَجْناس پَر دَسْتُورِ اِس مُلْکِ کا بِہ
 هِی کَہ زَمِیْنْدَار تِیسرا حِصَّہ زِراعت کا سِرْکار مِیْن داخِل کِری اُور دو آب
 لَیْوِی لَیْکِن کَانَ نَمْکِ و آہِن سِی مَحْصُولِ بَہْت سا ہاتھ لَگتا هِی اُور چَہ
 کُوس شَہر سِی پَری زَرْد پتھر کِی کَہان هِی جِس اَنْدازِی کا سَنگ چاہِیْن اُسی
 نِکال کَر تَرشُوائِیْن اُور عِمَارَت مِیْن لَگوائِیْن لَیْکِن مَدَارِ کار بَیْشْتَر کِشْتِیُون پَر
 چُناؤچَہ وِی اَنواع و اَقْسام کِی چَہوْٹِی بَڑِی چالِیْس ہزار کِی قَرِیْب وِہان کِی
 دَرِیا مِیْن تِیار رَہْتِی هِیْن اِگرچَہ اُسْکِی نَواح مِیْن شِکار اَقْسام کا ہاتھ لَگتا هِی
 لَیْکِن گورْخَر و خَرگُوش و کُوتاہ پاچَہ و خُوکِ صَحْرايِ و ماہِی کا شِکار بَکْشَرْت
 اُور خُوراکِ وِہان کِی لوگوں کِی اَکْثَر دَہِی خُشْکا مَچھَلِی بَلْکَہ مَدَارِ خُورِش کا
 اِسی پَر هِی پِہان تَک کَہ مَچھَلِیُون کو سُکھا تیل مِیْن ڈال کِشْتِیُون مِیْن بَہر اَکْثَر
 بِنادِر و اطراف مِیْن اِیْجَاتِی هِیْن اُور لوگ اُنکو مَول لَیْکَر کَہانِی هِیْن پَہر تیل کو
 وِی ناوون کِی کَام مِیْن لَگاتِی هِیْن اُور پَلوہ اِیْکُ مَچھَلِی نِہایت لَذِیذ هُوتِی
 هِی لَیْکِن خَاص اُسی مُلْکِ مِیْن وَہ بَہِی نِپُت مَزی دَار و با حَلَوْت ساٹھ
 اِسْکِی چار مَہِیْنِی تِلْکِ بَگْڑَتِی نِہِیْن اُور باشون مِیْن رَنگِ بَرَنگِ کِی پَہولون

آتا هي اور پھول بهي هر رُت کا اس کثرت سي هوتا هي که بازار گلزار بن
 جاتا هي اگرچه درندي اور بهي اس نواح مين هين ليکن چيتونکا اس قدر
 وفور هي که هر سال صياد سيکڑون پکڑ لاتي هين اور صيد افگني اُنکو سکھلاني
 هين بيل بهي وهانکي خوش ظاهر قوي فربه گران قيمت چنانچه ايک جوڑي
 اگر پان سي رُپي سي کچھ زياده کو آي تو سستي هي اور چالاک بهي ايسي
 هوتي هي که تمام دن مين مچاس کوس طي کري مطلق نه تهکي دريا چپوئي
 بڑي اس صوبي مين بهت هين ليکن نامي سا برمتي با ترک مهندري نربدا تپتي
 سرستي هن طول اسکا برهان پور سي دوارکا تلک تين سو دو کوس عرض جالور
 سي تا بندر دامن دو سو ساٹھ کوس شرق رو اسکي خاندیس غرب رو دوارکا
 شمال رو جالور اور ايدر جنوب رو بندر دامن اور کنهايت احمد آباد پشن
 نادوت بهڑونچ بروده چانپانير کودهره سورٲه اسلام نگر نو سرکارين تابع اُنکي
 ايک سو اٹھاسي محال تيره بندر آمدني اٹھاون کڑوڑ اٹھتيس لاکھ نوي هزار دام

صوبه "ٲٲٲه" اگلي زماني مين برهمن آباد ايک بڑا شهر يهان کي تختگاه تھا
 قلعي مين اسکي چوده سو برج تهي تهوڑي تهوڑي تفاوت سي چنانچه اب
 تک اسکي برجون اور ديوارون کا کچھ نشان باقي هي بعد اسکي ديور پائي

جب بارش موقوف ہوتی ہے پانی گھٹنی لگتا ہے آخر زمین نکل آتی ہے اور
 لون بہت سا ہاتھ لگتا ہے * کچھ ایک جُدی ولایت ہے عرض طول اسکا
 اڑھائی سو کوس کا سِندھ اسکی پچھم طرف زمین وہاں کی بیشتر ریٹلی اونٹ
 وہاں کثرت سی پیدا ہوتی ہیں اور بکریوں کی بھی افراط ہے سواي اسکی
 تازی گھوڑی وہاں کی مشہور و معروف وجہ اسکی یہ ہے کہ کسی زمینی
 ایک سوداگر کتنی عربی گھوڑی دریا کی راہ سے لے جاتا تھا اتفاقاً اسکا جہاز
 ٹوٹ گیا کئی گھوڑی ایک تختی پر بہتی ہوئی کنارے پر آ لگی اور اُس
 ملک میں پہنچی آج تلک اُنکی نسل اُس نواح میں باقی ہے القصہ ہوا
 اس صوبی کی اعتدال پر رہتی ہے جوآر باجری کی پیدائش بیشتر جنانچہ
 مدار خلائی کی خورش کا اُسی پر ہے اور زراعت ربیعی کمتر گیہوں بلکہ
 بیشتر غلی مالوی اجمیر سی اور چانول دکن سی آتی ہیں اور جنگلون میں
 یہاں کی درخت اس کثرت سی ہیں کہ لذت شکار سی لوگ اکثر محروم
 رہتی ہیں آم کی بھی یہ افراط ہے کہ پٹن سی تا بروڈہ سو کوس کا عرصہ ہے
 یک لخت اُسکی درخت نظر آتی ہیں ساتھ اسکی آم بمرتبہ میٹھی اور
 خوش ذائقہ بلکہ کیریاں بھی حلاوت سی خالی نہیں انگور و انجیر بھی علی
 هذا القیاس عجیب تر یہ ہے کہ خربوزہ گرمی اور جاڑی میں بافراط میسر

وَنهين اِيڪ صياد کي هاڻه ڪا تير لڳا اور سرستي کي ڪناري پيپل کي درخت
تلي بيڪڻهه ٻاسي هوا ٻنابر اسڪي اُس مڪان ڪو معبد ڄاڻي هين اور اُس
درخت ڪو پيپل سر ڪهتي هين * قصبه مَول مين اِيڪ معبد هي مهاديو
سي منسوب هر سال برسات سي پهلي روز معين اِيڪ پرند ڪبوتر سي
چوٽا پر چوٽي اسڪي موٽي رنگت سياه سفيد اُس ديهر کي ڇهت پر آ
بيٺهتا هي اور اِيڪ دم ڪلولين ڪرکي پهان تلڪ لوٽا هي ڪه جي سي گذر
جاتا هي اُس دن شهرن کي لوگ وهان جمع هوتي هين اور طرح بطرح کي
بحور ڪرتي هين پهر سياهي و سفيدي سي اسڪي انداز ٻارڻ ڪا يعني سياهي
سي تفول ٻارڻ اور سفيدي سي خشڪي “متصل اسڪي” * دوار ڪا هي جگت
بهي اسڪو ڪهتي هين ٻڙا معبد هي جب سري ڪشن متهرا سي ٻاهر نڪلا ونهين
آکر اُسني ٻاسا ليا اس ليئي اسڪو بهي پرستش گاه ڄاڻي هين نزديڪ اسڪي *
گاڻهي اِيڪ قصبه هي اهيرون ڪا مسڪن وي هندوون کي طريقي سي خارج هين
پرن و مرد حسين هوتي هين جب نيا حاڪم وهان آتا هي اُس سي قول
ليني هين ڪه عورات سي بد ڪاري ڪا مواخذ ڪري تب بود و باش اختيار ڪرتي
هين و الا وطن چهوڙ ديتي هين نزديڪ اسڪي اِيڪ زمين هي طول مين نوي
ڪوس برسات سي پهلي سمندر اُبلتا هي اور پاني مين وه تمام ڏوب ڄاتي هي

انگور خرٻوڙي سي تاڪين اور فاليزين معمور ليڪن اُس مُلڪ کي نو حصي
 هين اور هر ايڪ مين اُنس جدا سبب اسکا درختون کي فراواني اور گنجائي
 ساڻه اسڪي پهاريون کي باهم پيچيدگي مسڪن اُنکي نهايت مائون و محفوظ
 هين فوجين اڪڻهي وهان جا نهين سگهين جو تنبيهه قرار واقعي ڪرين * جوان
 گڏه ايڪ سنگين قلعه هي نهايت متين حصان و مٿان مين ويسا دوسرا
 نهين سلطان محمود گجرات کي بادشاهه في بهت سي لڙايان لڙڪر بزور اُسي ليا
 اور پاس اُسڪي ايڪ اور قلعه بنا ڪيا * ڪرنال ايڪ قلعه هي پهاريون پر هندو
 ڪا بڙا معبد اُس مين بهت سي چشمي هين قريب اُسڪي اڪثر درياي بنادر
 درياي شور سي ملي هين اور اُس مقام مين مڇهليان ايسي نازڪ هوتي هين
 اگرايڪ دم دھوپ مين رڳهي تو پڳهل جائن اطراف مين اُسڪي اونٽ گهوڙا
 نهايت قوي و چالڪ هوتا هي * سومنات قديم بڻخانه هي نهايت مشهور
 شور دريا اُس سي تين ڪوس تابع اُسڪي پانچ بنادر سرستي بهي قريب اُس
 سي نڪلي هي هندو اُسڪو بڙا تيرتھ جاني هين مشهور هي ڪه پانچ هزار برس
 اُس سي آگي پانچ جه ڪڙوڙ آدمي جادوگرون کي قوم سي سرستي اور هرن کي
 درميان هنسي خوشي آپس مين لپٽ لپٽ ڪر ڪري اور ڏوب ڏوب ڪئي
 سومنات سي اڏه ڪوس * سانگها ايڪ مڪان هي سري ڪشن کي پاڻ مين

بَرنگ کي بَهتائيت سي پھولتي هين ساڻه اُسکي پھليل بهي کيئي طرح کا بمرتبہ
 خوشبو کھچتا هي اور اهل فارس مين سي ايک قوم ني آکر وهان بود و باش
 اختيار کي هي رات دن هنگامه آتش پرستي کا گرم رھتا هي سورت و ندر بار
 کي بيمچ ايک کوھستان خوب آباد هي * بگلانا اُسکو کہتي هين واقعي بمرتبہ
 معمور و آب و هوا اُسکي نہايت خوب ميوي بهي وهان بہتيري هوتي هين
 ليکن شفتالو انگور سيب اناس انار ترنج آم هر ايک لا ثاني هي اور سات
 قلعي نامي اُس سي متعلق هين انھين مين سي ساليں اور مولير بهي
 ليکن شہرت ان کي زيادہ هي اور زميندار وهانکي راڻھور * بہروچ ايک بڑا
 محکم قلعه هي نربده اُسکي نيچي سي گذرڪر سمندر سي جا ملي هي کتني
 بنادر اُسکي بهي تابع هين اقسام کا کپڑا وهان بنا جاتاھي ليکن الاچا وهان کا
 مشہور سوداگر شہر شہر ليجاتي هين اور فايدتي اُتھاتي هين * سرڪار سورڻھ
 ايک جدا ملڪ تھا حاکم وهان کا پچاس هزار سوار و لاکھ پياديڪا مالڪ پر
 احمد آباد کي فرمان روا کا فرمان بردار تھا ليکن خانخانان اکبرشاھي ني اُس
 کي ملڪ پر قرار واقعي قبضہ کر ليا طول اُسکا بندر گھوگه سي بندر ارامرا
 تلڪ سوا سو کوس عرض ابتدائي دھار سي بندر ديو تلڪ بہتر کوس آب و هوا
 اُسکي مزاجون سي موافق پھل پھول کي بهي اپني اپني موسم مين بہتائيت

مین آفرین کھی ایک پُری کا ناؤن رسول آباد هِي شاه عالم بُخاري وَهین آسوده
 هین اکثر اُس بُزرگ کی کرامت ولایت کی قایل اور بهتیری اُسکی مرید و
 معتقد احمد آباد سی تین کوس * بتوه ایک قصبه هِي نہایت دلکشا اکثر
 اولیا وهان بِي مدفون هین لیکن قُطْبُ آلعالم شاه بدر عالم بُخاري کی باپ کی
 قبر پر هاتھ بهر کا ایک کپڑا هِي کوهی اُسکو سنگ کوهی چوب کوهی آھن
 خیال کرتا هِي اور عجیب و غریب حکایات اُس سی منسوب کرتی هین *
 پشن ایک پُرانی بستی هِي اگلی زمانی مین وهانکی سلاطین کی تختگاه تھی قلعي
 بِي اُس مین دو هین ایک سنگین اور ایک خشتی لیکن نہایت مستحکم
 اور گائی بیل اُسکی نواح مین نہایت خوب هوتی هین * چانپانیر ایک قلعه
 هِي پہاڑ کی ایک بلند ٹیکری پر چڑھائی اُسکی اڑھائی کوس کی دروازی بِي
 کِي لیکن راه نپت اوبھت اسی واسطی ایک طرف سی ساٹھ گر کی قریب
 پہاڑ کو کات کر تختون سی پاٹا هِي وقت پر اُٹھا لیتی هین پر موضع مذکور
 چند مدت دار الحکومت رها هِي * بندر سورت نامی ایک شهر هِي
 بعضی بنادر اُسکی تابع هین دریای تپتی اُسکی قریب سی بہتا هوا سات
 کوس پر جاکر دریای شور سی ملا میوی اُس مین اقسام کی بکثرت خصوصاً
 انناس نپت رسیلا خوشبو خوش ذائقه پیدا هوتا هِي اور پھول بِي رنگ

سِوایِ اُسکي تَقْلیدِ بَہي اُن پَر خَتَمَ هَي کيُونکہ رُوم و فرَنگ و اِيران مِین جو کَپڑا کہ اَعْلٰی هَي يي اُسکي مُقَابِل بُن ديتي هَين سِرِ مُو فِرَق نَہيِن پَڙتا دُور دُور اُس کو بِطَرِيقِ تُحَفَہ لِيَجَاتِي هَين “اور صَاحِبَانِ نِعْمَت سِي اِنْعَام پَاتِي هَين “ تَلوار بَہي وَہانکي دَم خَم مِین مَغْرِبِي تَلوار سِي مُقَابِلَہ کَرَتِي هَي “ کُتَارِي کِي اَبَدَارِي سِي بَجَلِي بَہي ڏَرَتِي هَي “ اور تِير و کمان بَہي زَمَانہ سَابِق مِین وَہان قَابِلِ تَعْرِيف بَنتا هُوگا چُنائِجَہ صَاحِبِ خُلَاصَہ و مُصَنِّفِ آئِيِن اَکْبَرِي دُونو مُعَرَفَہ هَين لِيکِن اِيک مَدَت سِي کمان لاهور کِي اِس دِيَار مِین مَشْهُور هَي اور اُس سِي اُتَر کَر فَرِيد آباد و کَہجوي کِي مَگر رُوپا وَہان عِراق و رُوم و غَيرَہ سِي لَاتِي هَين اُسکي نَوَاح مِین پيدا نَہيِن هُوتا اور جَوَاهِر کِي بَہي خَرِيد فروخت بيشتر رَہَتِي هَي غرض شَہرِ مَذکور نِہايَتِ خُوش آب و هَوا اور اَجْناس و مَتاع کِي بَہم پَہنچَني مِین بي هَمَتا هَي باهر بَہي اُسکي تِين سَو سائِہ مَعْمُوري خَاص خاص وَضَع پَر آباد هُوي کہ ہر اِيک کو پُرا کَہَتِي هَين شَہرون کِي ضَرُورِيَات ہر اِيک مِین مَہِيَا “ لَشکرون کِي اَسباب تِيَار جا بجا “ چُنائِجَہ چوراسي پُري تو عَالَمِگير کِي وَقت تِلک آباد تَہي سِوایِ عِمَارَات و باغات ہزار مَسْجِدِين سَنگِين دو دو مِينار کِي اُن مِین تَہيِن کِتَابِي بَہي اُنکي اِيسِي نادر اور خُوش خَط کہ اُنکو دیکھ کر اِنسان دُرود بَہجِي اور کُندہ کار کِي حَق

ڪناري ايڪ قلعہ متين بنا ڪيا بلڪہ عمارات بهي نئي نئي وضع ڪي سنگين و
 رنگين بناڪر ايڪ شهر نهايت وسعت ڪي ساڻھ آباد ڪيا نام اسکا احمد آباد
 رکھا اور دار السلطنت اُسي قرار ڏيا سواي اسڪي بتيس برس اور ڇھ مهيني
 اپني حڪومت ڪي ايام آبادي ڪي انتظام مين جو اُس ني صرف ڪئي ايڪ
 شهر عظيم بس ڳيا ليڪن شهر مذکور مين ديوارين تو گهرون ڪي خشتي اور چوني
 ڪي پرجهت ڪي جاگه ڪهڙيلين هان بعضي دور انديش نيوين پتھر ڪي چوڙي
 چوڙي قائم ڪر ڪي ديوارين کاواڪ بناتي هين اور ان مين مخفي راه رکھتي هين
 کہ وقت ضرورت وهان سي نڪل جائن اور بعضي مالدار تمام عمارت چوني گچ
 ڪي بناڪر اس طرح ڪي ته خاني اُس مين بناتي هين کہ مينھ کا پاني نھرا اُس
 مين جائي اور بهرا رھي ڪيونکہ تمام سال اسيڪو پيتي هين باشندي وهان ڪي
 اُس کو ٿانڪھ ڪھتي هين اور نقاش و خاتم بند سواي انڪي اور بهي ڪاريگر
 وهانڪي سيپ ڪي نقشي قلمدان اور صندوقچي نهايت خوش اسلوب و خوش
 قطع بسھولت بناتي هين “ اپني هنر مندي و دست ڪاري ڪي طرزين ڏکھاتي
 هين “ اور ڪمخواب و زربفت و خارا و مخمل و زربافي چيري پٽڪي وهانڪي
 عديم المثل هين ان ڪاريگرون چھت ڪسڪي تاب و طاقت جو اُس قماش کا
 ايڪ وصلجھ بن سڪي “ مگر حيرت سي نا چار هوڪر اپنا سر دھن سڪي “

جوار موٽھ بڪثرت سائون يا آٿڻون حصہ غلي کا ديوان کو ديتي هيں مال
گذاري کا رواج کم هي جاڙي مين وهان جاڙا قريب باعبدال “ اور گرمي مين
گرمي کمال “ اڪثر مقامون مين جنوب کي طرف کوهسار “ اور بيشتري زمينين
دشوار گذار “ بنا براسکي کچهواهي اور راڻهوڙ سواي انکي اور بهي راجپوت سلاطين
سي چندان دٻتي نهين لشکر بادشاهي ايڪٽ بار وهان جا نهين سکتا علاوه
اسکي کوسون پاني نهين ملتا طول صوبي کا آنبير سي بيگانير و جلمير تلک
ايڪٽ سو اٺه سٺه کوس عرض نهايت سرکار اجمير سي بانسواڙي تڪ ڏيڙه
سو کوس پورب طرف اسکي اڪبر آباد پچهم طرف ديپالپور تابع ملتان
اُتر طرف قصبات دهلي دکن طرف گجرات اور سرڪارين اسکي اجمير چيتوڙ
رنتپور جوڏهپور ناگور و غيره سات متعلق ان سي ايڪٽ سو تيسر محال
آمدني پچين کٽوڙ تين لاکه ساڻه هزار دام

صوبه گجرات “ ڪتب تاريخ سي خصوصاً وه تاريخ جو سلطان بهادر والي گجرات
کي تصنيف هي اس سي به ظاهر هوتا هي که شهر پشن اور چندي چانپانير
به تختهگاه تهي جب سلطان احمد بن سلطان محمد بن سلطان مظفر شاه
سن آٺه سو باره هجري مين تخت سلطنت پر بيٺا اور درياي ساير متي کي

لڙڪر اُسي ليا قصه اُسکا مشهور و معروف هي اور زمانه سابق مين يهان كي
 رئيسون كو راول كهتي تهي اب ايڪ مدت سي رانا كهتي هين قوم انكي
 كهلوت ليڪن اپني گروه كو اولاد نوشيروان عادل كي جانتی هين اور اس وجه
 سي كه انكي دادا ني اپني بود و باش موضع سيسوده مين كي تهي سيسوديه
 كهلاتي هين سواي اسكي ايڪ برهمن جو اُنکا غمخوار هوا تھا اُس جهت سي
 اپني تين برهمن بهي تهراتي هين اور انكي خاندان كا يه دستور هي كه رانا
 جب مسند حڪومت پر بيٺهي قشقه آدمي كي لهو سي اپني مائهي پر
 كهچي * قصه سانبهرون وهان كا نهايت مشهور هي اور بيشتري كهاني مين
 بهي وهي آتا هي شهر كي نزديڪ چار كوس لڻا كوس بهر چوڙا ايڪ
 چشمه هي پاني اُسکا نيٺ كهاري ليڪن تاثير اُس كي يه هي جهان زمين
 كهوڏڪر پاني سي اُسي بهر ديا اور زمين ني جذبِ كيا تمام قطعہ اُسکا نمڪ
 آلود هو جاتا هي جهان كهوڏڪر اُسكو كناري پر ڌال ديا اور پاني چهڙڪا لون صاف
 اُس مين سي نڪل آتا هي هر سال ڪي لاکھ رُپي كا لون وهانكي بيپاري بيچتي
 هين اور محصول سرڪار والا مين داخل ڪرتي هين الغرض تمام زمين صوبه
 مذکور كي ريتلي پاني دور تلڪ جو كهودي تو نڪلي بوني جوتني كا مدار بارش
 پر اسي سبب زراعت ربيعي بقات هوتي هي اور فصل خريف مين باجرا

جنوبي بگلانا اُجين و رايسين و چنديري و سارنگ پور و بيجا گڏه و منڏو وغيره
 باره سرڪارين متعلق اُن سي تين سو نو محال آمدني چهتيس ڪروڙ نوي لک
 ستر هزار دام

صوبه دار آلخير اجمير ”قديم شهر هي نهايت خوش آب و هوا بيٺل گڏه
 سي لگا هوا سواد اسکا صاحبان طبع کا مرغوب“ اور آبادي اسڪي نهايت
 خوب ”درگاه خلاصه عارفين خواجه معين الدين چشتي کي بستي کي اندر
 جهاري کي ڪناري هي اور قريب اسڪي اسي نواح مين سيد حسين شهدي
 بهي آسوده عوام اسکو خنگ سوار ڪهتي هين اجمير سي تين کوس پري *
 پهر هي عمق اس تالاب کا آج تلڪ کسي في نهين پايا ته کو اسڪي پاڻ
 کسيکا نهين لگا هئود کا قديم تيرتھ هي بلڪه ساري تيرتھون کا گرو عقيدة
 انکا يه هي ڪه انسان اگر ساري تيرتھون مين پھري اور روي زمين کي
 منڊرون کي پوجا ڪري جب تلڪ اس مين نه نهاويگا ثواب ڪجهه نه پايگا *
 چيتوڙ مشهور قلعه هي اسي صوبي کي متعلقات سي اور ڪوکنده ڪه تابع اسکا
 هي وهان جست کي ڪهان اور چين پور مين تانبي کي ليکن يه مقام علاقه
 مانڊل سي رگھتا هي سابق رانا کي تصرف مين تها اڪبر بادشاه في ايڪ مدت

اُوڻجي هي اور سب کي سب قابل زراعت دونو فصلين بخوبي هوتي هين
 غله سب طرح کا بهتايت سي خصوصاً گيهون خشخاش اور ميوون مين گنا آم
 خربوزه انگور لطف يه هي که حاصل پور مين انگور دو بار پهلتا هي اور پان
 بهي اچهي سي اچها هوتا هي بارش چار مهيني تلک هوا اکثر اعتدال پر
 چنانچه جازون مين روي دار کپڙي کي حاجت اور گرميون مين شوري کي
 پاني کي نهين هوتي ليکن برسات مين کبهي کبهي بالا پوش کي احتياج پڙتي
 هي جهوڻي بڙي وهان کي تين برس کي عمر تلک لڙکون کو افيون ديتي هين
 اگرچه درياو صوبه مذکور مين بهت هين ليکن بهترين دريا نربدا شيرا کالي
 سنڌه و بيتوه و کوڙي اور کناري هر ايک دريا کي دو دو تين تين کوس تلک
 هموار و صاف علاوه اسکي ان پر پهول بهي اقسام کي رنگين و خوس بو “ بلکه
 سنبل و درخت سايه دار هر ايک سو “ اور جنگلون مين بهي بيستر تالاب و
 سبز ڏهڏها “ درخت سهاوني سهاوني هزارها “ طول صوبي کا کوڙي لاکي تلي سي
 بانسواڙي تلک دو سو پينتاليس کوس اور عرض چنديري سي تا ندربار † دو سو
 تيس کوس جانب شرقي اسکي باندھو غربي گجرات و اجمير شمالي نرور

§ Perhaps the place on our maps written Gurra Kota.

† Written on our maps Nandoorbar.

ٻارها لوگون تي ديکھا اور ٻيھي عمل ڪيا * چنڊيري ايڪڙ قديم شهر هي بهت
 ٻڙا نيت دلکشا بود و باش اُس مين اقوام کي بازار تين سو چوراسي سرائين تين
 سوساڻھ اور مسجدن باره هزار * تومن ايڪڙ قصبه هي بيتوه ندي کي ڪناري ايڪڙ
 آد جل مانس ٻيھي ڪٻهو ڪٻهو درياي مذکور مين نظر آ جاتا هي ” اور تماشاين
 کوگرداب حيرت مين غوطي کھلاتا هي ” سواي اسڪي قصبه مسطور مين ايڪڙ
 بئخانه اتنا ٻڙا هي اگر نقاره اُس مين بجي تو باهر آواز کوي نه سني * منڏو
 ايڪڙ ٻڙا شهر هي باره کوس کي عرصي مين چنڊ مدت حاکم نشين ٻيھي تها
 قلعي مين اسڪي ايڪڙ مينار هشت منڌري بي نظير ” ساڻھ اسڪي تعميرات
 قدما کي نهايت کلان و دلپذير ” اور مزار سلاطين خليج کي ٻيھي اڪثر ليکن
 عجيب ٻيھي هي ڪه سلطان محمود ابن سلطان هوشنگ کي گنبد سي گرميون
 مين پاني ٿپڪا ڪرتا هي نادان اسکو مدتون سي ڪرامت سمجهتي هين پر دانا
 اسڪي حقيقت حال کو ادنيٰ تامل مين پا جاتي هين ڪهتي هين ڪه اُس ديار
 مين پارس پتھر ٻيھي ڪٻهو ڪٻهو نڪل آتا هي ” لوها تانبا و غيره جو اُس سي
 لڳي سونا هين بن جاتا هي * دهار ايڪڙ قصبه هي اگلي زماني مين راجه
 بهوج کي تخت گاه تها بلڪه اور ٻيھي راجاون کي وقت مين وھي چنڊ گاه
 دار الحڪومت رها القصه زمين اس صوبي کي بنسبت بعضي زمينون کي ڪجهه

اُتھاتي هين “ قصه کوتاه طول صوبي کا پور گاؤں ۴ سي که هنديا کي متصل هي تا
 تلنگ که احمد آباد سي قريب هي پچھتر کوس اور عرض جامودہ سي که
 قريب برار هي پال تلک اور وہ مالوي سي نزديک هي پچاس کوس شرق کي
 طرف اُسکي برار غرب کي طرف کوہ جنوبی جنوب رخ جالنا شمال رو مالوا
 سرکارين اُسکي پانچ اور متعلق اُن سي ايک سو بارہ محال آمدني چواليس
 کڑوڑ چھتيس لاکھ نوي هزار دام

صوبہ مالوا “ دار السلطنت اُسکا اُجین راجا وہان کا بير بکرمجيت اوصاف
 اُسکي قياس سي باهر اهل سلف اُنکو تحریر کر گئي هين “ بلکہ دفتر کي دفتر
 بهر گئي هين “ واقعي اس دهن کا راجا هندوستان مين پهر نهين هوا “ اور
 محتاجون کا کام کسي في اس خوبى سي نهين کیا “ سن اُسکي هند مين آج
 تلک لکھتي هين ساتھ اُسکي شهر مذکور کي بهي وسعت مين بهب سا
 مبالغہ کیا هي بلکہ کتابون مين لکھا هي دريائي شہر اُسکي تلي موج مار رھا
 هي عجيب تر يہ کہ کہو کہو ايک آد موج دودہ کي بهي اُس مين آجاتي
 هي “ اور ايک خلق تھيليان هانڈيان بهر لاتي هي “ کہتي هين کہ يہ اچنبھا

کي بازار مين بيشمار “ صندل و اگر کي دکانون مين جڏهر تڏهر انبار “
 گرميون مين آندهيون کي شدت “ اور برسات مين کيچر کي بهتايت “
 کهيتيان جوآر کي اکثر “ اور دهان کي کمتر “ ليکن چانول وهان کا نهايت
 اعلي اور خوش ذائقه پانون کي فراواني اور ترڪاريون کي ارزائي بيشتري رهي
 هي ڪيترائي موٽا مهين اقسام کا بهم پهچتا هي ليکن الاچھه سرير صاف سرون ۽ وهان
 کا نهايت خوب هوتا هي آگي يه ملڪ غريب خان حاکم کي نام پر تها
 جب شيخ ابو الفضل ني آسير کا قلعه ليا صوبه مذکور اکبر بادشاه ني اپني
 دوسري بيٺي کو جس کا دانيال نام تها ديا اور نام اسکا دان ديس رکھا زميندار
 اسکي اکثر بهيل کولي گوئد * چانگ ديو ايک گاؤن هي اسکي قريب تپتي
 اور پورنا باهم ملي هيں هندو اس مقام کي پرستش کرتي هيں اور چکر تيرتھ
 اسکو کہتي هيں قصه مختصر درياؤ اس صوبي مين بهتيري هيں ليکن اعليٰ ان
 مين تابي اور وه گوئدواني و برار کي بيسچ سي نکلي اور پورنا بهي وهين سي
 ليکن گرني اور تپتي ني چوپري کي متصل اتصال پایا اس مقام کو بهي هئود
 معبد جانکر دور دور سي پوجا کو آتي هيں “ اور اپني گمان مين بهرہ کامل

Or , but what sort of cloth is it?

قریب بعد اُسکی یہہ ندي احمد نگر میں ہو برار میں آئی " اور وہاں سے
 سرکار تلنگانا کی طرف جا نکلی " جب مشتری بڑج اسد میں آئی ہی دور
 دور سے سیکڑوں ہندو وہاں آتی ہیں " اور ثواب جانکر نہاتی ہیں " یہہ میلا
 اکثر ملکوں میں مشہور ہے تابی و تپتی کو بھی صدق دل سے مانتی ہیں
 اور پرستشگاہ جانتی ہیں لیکن پورنا دیول گائون کی متصل جاری ہے پر ایک
 سرا اُسکا بارہ کوس بالاتر تابی سے اور دوسرا نزدیک گائون مذکور کی القصہ طول
 اس صوبی کا پٹیالی سے بیراگڈہ تلک دو سو کوس اور عرض بندر سے ہندیا
 تلک ایک سو اسی شرق رو اُسکی بیراگڈہ غرب رو مکھراباد لا شمال کی طرف
 ہندیا جنوب کی طرف تلنگانا سرکارین دس متعلق اُن سے دو سو محال آمدنی
 ساٹھ کڑوڑ بہتر لاکھ ستر ہزار دام

صوبہ خاندیس " دار الخلافت اُسکا برہان پور تپتی کی کناری عرض و طول
 میں بہت بڑا " آبادی اُسکی حد سے زیادہ " باشندی وہاں کی بیشتر
 صاحب ہنر " اور اطراف میں باغات اکثر " میوی بہانت بہانت کی جہان
 تہاں " پھول قسم قسم کی اپنی اپنی رت میں فراوان " اجناس قیمتی ہر ملک

§ Perhaps Nasirābād may be here intended.

بِدُونِ اَہْلِ قَلْعِي کِي سازشِ اُمَرِ مَحَال * کھڑا سَطْحِ زَمِينِ پَر پتھر کا ايک گڈھ
 هِي بُلندي ميں فَلَکِ فر سا " اور اُسٹواري ميں پھاڑ سا " اندر اُسکي ايک
 چھوٹی سي پھاڑِي هِي قَرِيب اُسکي جاکر مَدَت و زاري کُرتي هين " اور
 دُعائِيں مانگ مانگ ماتھي رگڑتي هين " چار کوس وھان سي ايک کُوا هِي
 جس جاندار کي هڏي اُس ميں گرّتي هِي سَنگ بن جاتي هِي اور ميل گڈھ
 کي پاس جو ايک چشْمه هِي اُس ميں تو کُوي چيز گري سَنگ هِي بني *
 بيراگڈھ ميں هيري کي کھان " اور کپڑا بهي وھان کا مَصَوَر حيرت افزاي جھان "
 * اندرو و * نرمِل ميں کانِ فُولاں اور ظُرُوفِ سَنگين وھان کي نادرِ روزگار بيل
 بهي وھان کا نِهايَت خوب سِواي اُسکي کرک ناتھ مرغ ايسا کہ جسکي هڏي
 تلک سياه " اور اُسي صُوبي کي مُتعلقات سي * بَشَن گيا ايک بڑي پَرستش
 گاه هِي کُندھ اُسکا کوس بھر کي طُول و عَرْض ميں چار طرف اُسکي اوڻچي اوڻچي
 پھاڑ اور بندر وھان بيشمار پاني اُسکا کھاري ليکن مائِه صابُون و شوري کا اُس
 سي حائل هوتا هِي بلکہ آيني کا بهي " اگرچہ اس صُوبي ميں درياؤ بہت هين
 ليکن گونمي کو سب پَر تَرَجِيح جيسي گنگا کو مهاديو سي علاقه هِي اُسکو گوتم
 مَني سي عَجيب و غَرِيب نقلين حِکايَتين اُسکي بهي لکھ گئي هين اور آج
 تلک پَرستش کُرتي هين نِکاس اُسکا کوہ سبھا سي اور جوش مارنا ترنبک کي

لڳا ڪرڻا هئي “ ساڻه اسڪي غلي کي فراواني اناج کي اُرزائي هميشه “ ڪپڙا
خوش قماش قسم قسم کا “ جواهرِ گران بها چوڪها هر وقت موجود سڀاي
اسڪي تحفه جات هر ملڪ کي اور نادرات هر جزيري کي جس وقت چاهو
لو باشندي بهي وهانکي خوش لباس و خوش معاش و اهلِ دولت و صاحب
ثروت بيشتر “ اور خوب رو بهي حسن و ادا مين بي مانند يگسر “ طول
صوبي کا ڏيڙه سو کوس کا اور عرض سو کوس آڻه سرڪارين متعلق ان سي اسي
محال آمدني اڪاون ڪروڙ باسڻه لاکه اسي هزار دام

صوبه برار “ ايڪ ملڪ هئي دکن کي طرف کي دو پهاريون مين ايڪ کا نام
بندا کاويل نرناله و ميل کڏه اسي پر هين اور دوسري کا سبها لا ماهور و رام گڏه
اسڪي اوڀر آب و هوا وهانکي بد نهين اطراف مين اسڪي زراعت کي بهتايت “
اور جنگلون مين هاتهيون کي ڪثرت “ پر ملڪ مذکور مين چوڏهري کو ديس
مڪه قانون گو کو ديس پانڌ مقدم کو پٿيل پٿواري کو ڪل ڪرني ڪهتي هين *
پنار ايڪ قلعه هئي نهايت مستحکم و سنگين بلند پستي پر اسڪي تين طرف
کو دو نديون في احاطه ڪيا هئي مفتوح هونا اسکا نهايت اشڪال “ اور لینا اسکا

§ Perhaps the Seshāchal range, as the foregoing word *Bindā* seems to denote the Vindhya range.

سو کوس سرکارين جليسر کڻڪ و غيرہ پنڌرہ آور محال انکي تعلقي کي دو سو
بتيس آمدني چاليس کڙوڙ اڪتاليس لاکھ پانچ هزار دام

صوبہ مبارڪ بنياد اورنگ آباد “ بعضي تاريخون سي معلوم هوتا هي کہ اگلي
زماني مين اس شهر کو دھارنگر کہتي تھي بعد اسکي نام اسکا ديوگير هوا جب
سلطان محمد فخر الدين جونان دھلي کي بادشاہ ني تمام دکن چھين ليا نام
اسکا دولت آباد رکھا اور قلعي کو دار السلطنت بنایا بعد سلطان موصوف تمام
دکن دلي کي سلاطين کي قبضي سي نکل گیا جب تين سو برس گذري
شاھجھان ني قلعه مذکور پر پھر قبضہ کیا اور عالم گیر کو صوبہ مسطور کي
صوبہ داري عنايت کي شاھزادي ني قريب اسکي ايک شهر بساکر اورنگ
آباد نام رکھا رنگ ڏھنگ اسکي آبادي کا ديگھکر آنکھين حظ اٿھائين “
کشادگي سي اسکي دل بسته يک لخت کھل جائين “ هوا اسکي باد بهاري
کي طرح خوش آيند “ عمارات وھانکي هر ايک صاحب طبع کي پسند “
پاني مين وھانکي شراب انگوري کا اثر “ هر فصل اس مقام مين مانند ربيع
تازہ و تر “ شروع جوتا سي سنبھلہ کي آخر تک مينہ برسا کرتا هي “ اور
باغ و جنگل مين پھل بھي هر ايک قسم کا بکثرت خوش ذائقہ و خوش رنگ

نہایت نازک خوشبو اور کپوڑا تو جنگل جنگل پھولتا ہی پان بھی اقسام کی
 پیدا ہوتی ہیں وہاں کی کھیت اکثر اور خوراک وہاں کی لوگوں کی خشکا
 مچھلی بینگن بیشتر پر رات کو پکاتی ہیں صبح کو کھاتی ہیں سوای اسکی خط
 و کتابت تار کی پتوں پر فولاد کی قلم کو مٹھی میں پکڑ کر لکھتی ہیں کاغذ
 سیاہی کا استعمال بہت کم اور وہاں کی ایک گاؤں میں ہیجڑی بہت ہوتی
 ہیں اس لٹی وہ ہجڑا گاؤں کہلاتا ہی کپڑا بھی اُس مُلک کا برا نہیں ہوتا
 اور چلن اکثر کوڑیوں کا ”دکھن طرف دریای شور کی کنارے شہر * پرسوتم
 پور ہی بُخانہ جگناتھ کا راجا اندرسین فی وہیں بنیاد کیا کچھ اوپر چار ہزار
 برس اُسی گڈری قریب اسکی ایک اور دیہڑا ہی اُسکو آفتاب سی منسوب
 کرتی ہیں بارہ برس کا حاصل اُس مُلک کا اُس میں لگا ہی دیواروں کی
 اُچان ڈیڑھ سو ہاتھ اور چوڑان اُنیس ہاتھ اکثر جہاں دیدہ اُسکو دیکھ کر
 مقام حیرت میں آتی ہیں بلکہ نقش دیوار بن جاتی ہیں * تریا راج بھی
 وہاں سی نہایت قریب ہی مرد اُس نواح کی رنڈیوں کا سا بناؤ کرتی ہیں اور
 گہنا بھی ویسا ہی پہنتی ہیں لیکن عورتیں فقط ستر عورت پر اکتفا کرتی ہیں
 اور پوشش بیشتر پتوں کی وہاں رائج ہی باہر کا کاروبار بھی رنڈی سی تعلق
 رکھتا ہی اور اندر کا مرد سی ”طول اس صوبی کا ایک سو بیس کوس اور عرض

صوبہ بنگ نہایت وسیع و بمرتبہ آباد ہے بہترین دریا یہاں کی دریاؤں میں گنگا اور برہمپتر "طول صوبی کا چانگام سی تیلیا گڑھی تلک شرقاً و غرباً چار سو کوس اور عرض کوہستان شمالی سی تا سرکار مدارن دو سو کوس مشرق کی طرف اُسکی دریای شور مغرب کی سمت صوبہ بہار اور جانب جنوب و شمال کوہسار پر ریاض السلاطین میں یہ ہے کہ دریای شور جانب جنوب اور کوہستان جانب مشرق و شمال اور متعلق اُسی ست ستھ سرکار تابع اُنکی ایک ہزار ایک سو نو محال آمدنی اگلی زمانی میں چھیالیس کڑوڑ اُنٹیس لاکھ دام لیکن صاحب ریاض السلاطین اٹھائیس سرکار و ستاسی محال لکھتا ہے اور آمدنی موافق زمانہ سابق کی پچاس کڑوڑ چوراسی لاکھ اُنستھ ہزار تین سو اُنیس دام جسکی ایک کڑوڑ اُنستھ لاکھ ایک ہزار چار سو بیاسی رہی سکی پندرہ آتی کسری زیادہ " سپاہ دایمی تییس ہزار تین سو تیس سوار اور اکاسی ہزار ڈیڑھ سو آٹھ پیادی توپین چار ہزار دو سو ناوین چار سو

صوبہ اڑیسہ " آگی اس میں اُنٹیس قلعی پختہ تھی دو تین اب بھی ہیں اور آب و ہوا پہلی چنگی لیکن آٹھ مہینی برسات تین مہینی ٹھنڈ ایک مہینی گرمی پھول بھی اپنی اپنی رت میں بہت ہوتی ہیں خصوصاً چنیلی

راہ سی نِکلا مشهور هِي کِه حَسْبُ الْحُکْم سُلْطَان مَوْصُوف کِي حَکِيمَانِ والا
 دَانِش و دانایانِ عَالِي مَنَش نِي وَنَهِن دَرِيَاي شور پر اِيکِ طِلْسَمِ آدَمِي
 کِي پَنجِي کِي صُورَت بَنَايَا هِي جَب جِهَازِ اُدْهَر کو آني لَکُتا هِي وَهُ اِشَارِي سِي
 مَنع کَرِتا هِي اُور دَرَمِيانِ مَشْرِقِ و جَنُوبِ * شَهرِ اَرخَنگِ اِيکِ بَرَا مُلکِ هِي
 بَنَدَرِ چاَنگامِ وَهَان سِي نِهَایَتِ مُتَصِلِ هَاتَهِيُونِ کِي وَهَان کُثَرَتِ بَهْتِ هِي يِهَانِ
 تَکِ بَهُورَا هَاتَهِي بَهِي وَهَان مَيَسَرِ آتا هِي لِيکِن گهوڙا نا يابِ اُونَتِ گدَها نِهَتِ
 مَهَنگا گاهِي بَهِيَنَسِ نا پيدِ پر اِيکِ جانورِ مِثَلِ اُنکِي بَرَنگِ اَبَلَقِ دُونَدِ دِيَتَا هِي
 وَهَانکِي لوگون کا مَذْهَبِ و مِلَتِ نِرا لا هِنْدُو مُسْلِمَان سِي جُدا سِوَايِ مان کِي هر
 عَوْرَتِ کو جورو کر لِيَتِي هِيَن چُناَنجِه بَهَايِ بَهِن سِي اِحْتِرازِ نِهِن کَرِتا سِوَايِ
 اُسکِي يِهه رَسْمِ هِي کِه سِپَاهِيُونِ کِي رَنڊِيانِ دَرَبارِ مِينِ سَرْدَارِ کِي مُجَرِي سَلامِ کو
 حَاضِرِ هَوِي هِيَن اُور خَاوَنَدِ اُنکِي گَهرون مِينِ بِيَتَهِي رَهَتِي هِيَن طَرَفِ يِهه کِه زَن و
 مَرَدِ وَهَانکِي کَالِي اُور کِهوسِي پر اُپَنِي پيشوا و سَرْدَارِ کِي خِدْمَتِ و اِطاعتِ
 خُلُوصِ دِل سِي کَرِي هِيَن “ اُور نِهَایَتِ اُس سِي ٿَرِي هِيَن ” لَقَبِ اُسکا
 والي هِي اُور قَرِيبِ اَرخَنگِ * پيگُو فوجِ اُس مُلکِ کِي فَقطِ هَاتَهِي اُور
 پِيادِي حَدُونِ مِينِ اُسکِي فِلَزَاتِ و جَوهراتِ کِي کِهانِينِ اِسِي واسِطِي پيگُو اُور
 اَرخَنگِ کِي باشِندي اُور مَکَمِ آپس مِينِ عِنادِ و فسادِ رِکَهَتِي هِيَن قِصَه کُوتاهِ

جائي “ پر لڙائي سي باز نه آئي “ مر مٿي “ حريف کي آگي سي نه هئي “ هاتهي بهي ادھر کي جنگل مين بيشتر خوش جمال و کلان “ ھرن باره سنگي نيل گاؤ مينڏھي فراوان “ اور دريا کي ريتل مين سونا پيدا هوتا هي ليکن کھوٽا چنانچھ آتھ ربي توله بگتا هي طرفه تر يھ کہ وھان کا راجا ايک بلند مکان پر بيٺا رھتا هي زمين پر پاؤن نھين رکھتا احياناً اگر رکھ دي راجائي اُسکي جاتي رھي عقيدہ باطل وھان کي راجاؤن کا يھ هي کہ آبا و اجداد اُنکي آسمان پر تھي کسي وقت سوني کي سيڙھي رکھ کر اُتري اور پاؤن اپنا زمين پر نرکيا بنا بر اُسکي وھان کي راجا کو سرگي کھتي ھين سرگ لفظ ھندي هي معني اُسکي آسمان قصہ کوتاه جب راجا اُس ديار کا مرتا هي بعضي بعضي مرد رنڏي اُسکي خواص و خدمتي زنده معہ قدرتي تجمّل و اسباب بلکہ لباس و طعام بهي اُس کي ساڻھ سردابي مين دفن کر ديتي ھين “ اور کتني گھي کي چراغ بهي جلاکر اُس مقام مين دھر ديتي ھين “ متصل اُسي * تبت اور تبت سي قريب * ماچين “ شھر خان بالغ دار الحکومت اُس ولايت کا هي درياي شوراس سي چاليس دن کي راھ کھتي ھين کہ شھر مذکور سي سمندر تلک ايک نہر کلان کھود کر دونو کناري اُسکي سنگين و تختہ بناي ھين سکندر رومي انھين کي راھ اُس ولايت مين گيا اور تمام ملڪ کي سير کرکي دريا کي

بنا ليون نباتات بهي وهان كي عجيب و غريب هين چنانچه پهولون كي لباس
 توڙي كي بعد ڪئي مهيني تلڪ بدستور رهي هي اور آم كي درخت انگور
 كي مانند تاون پر پهيلڪر پهولتي پهلتی هين اس سي بهي نادر تر به هي كه
 درخت اگر ڪاڻهي تو عرق شيرين ٿيڪني لگي بهان تڪ كه پياسون كي پياس
 بجها ديوي اور رياض آسلاطين سي به معلوم هوتا هي كه زمانه سابق مين
 وهان عمل کوچ بهار كي راجاون كا تها لباس وهان كي زن و مرد كا فقط ايڪ
 لنگي اور لهجه گفتگو كا کوچ بهار كي باشندون سي ملتا هوا قريب اسڪي *
 ولايت اشام هي نهايت وسيع بيج مين اسڪي درياؤ برمهائتر مغرب سي مشرق
 كي طرف بهتا هي آب و هوا اس كي ڪناري كي متوطن و مسافر كي ليئي
 مساوي هي ليڪن اتي دور كي متوطن سي تو موافق اور غير كي حق مين سم
 برسات آڻه مهيني كي اور چار مهيني جاڙي كي بهي مينه سي خالي نهين
 پهول اور پهل بهي هندستان و بنگالي كي وهان بيشتريهم پهچتي هين بلڪه
 سواي ان كي بهتيري خاص اس سرزمين مين پيدا هوني هين دهان كي نهايت
 ڪثرت " لون كي برتبه قلت " اور گيهون جو مسور مطلق نهين بوتي اگرچه
 زمين وهانڪي قابل هي جو ڪجهه هين سو اگي " مرغ اس سرزمين كا بڑا لڙاڪا
 آپ هي چوگني كي مقابل هو ريهان تڪ لڙي كه مغز اسڪا پاش پاش هو

انار بیچ اُس مین تین اور نام لکھن اسی سرزمین سی تعلق رکھتا ہی ٿانگن
 بیج ابلق پہاڑون سی لاکر ونہین بیچ جاتی هین اور لینی والی اُن سی اور
 ملڪون مین نفعی اُتھاتی هین * سرکار بگلا سمندر کی کناری وهان بھی ایک
 قلعه تھا چار طرف اُسکی درخت گنجان بی شمار تھی اور جوار بھاٹھا بطور
 کلکتی کی اُس مقام مین بھی آتا ہی لیکن اکبر کی اُنیسویں سال جلوسی
 مین پھر دن رھی ایک روز عجب ایک سیل نمود ہوئی تمام شہر ڈوبا راجا
 وهان کا ناو پر چڑھ کر بھاگا غرض پانچ ساعت جوش طوفان کا رھا “ اور موج
 دریا کا نہ گھٹا “ ساتھ اُسکی بجلی چمکا کی بادل گرجا کی مینہ برسایا
 آخر دو لاکھ جاندار حیوان و انسان سی سیل فنا مین غرق ہوئی اور خلاصہ
 التواریخ مین یہ لکھتا ہی کہ شروع ماہِ ہلالی سی چودھویں تلک وهان کی
 دریا سی موجیں پہاڑ کی برابر ہر روز اُتھتی هین اور پندرھویں سی بتدریج
 گھٹتی هین لیکن تاریخ بنگالہ سی یہ بات دریافت نہین ہوتی قریب اُسکی *
 کام روپ ہی اُسی کو کانورو بھی کہتی هین عورتیں وهان کی نہایت شکیل
 فن جادو گری مین بی عدیل “ دور از عقل اُن کی فسوں سازی و شعبدہ
 بازی کی نقلین کرتی هین از آن جملہ یہ ہی کہ جس دانا کو چاہیں ایک
 آن مین دیوانہ کر دیویں بلکہ جس انسان کا ارادہ کریں ایک پل مین حیوان

اور کافر بھی بی تامل الحمد لله رب العالمین کہ اُٹھی " سرکٹ بھی وہاں سی
 کلکتی تلک ایسی سیدھی ہموار بنا ئی کہ کچی نام کو نہی " ساتھ اسکی
 دو رستہ درخت سایہ دار لگوا کر رستہ گلزار کیا " اور چلنی والوں کو سو طرح
 کا آرام دیا " (بیت) ہمیشہ ہی اُس پر ہوا باغ کی " فضا اسکی ہیگی فضا
 باغ کی " * سرکار سلہٹ آبادی اسکی پہاڑوں میں ہی گینڈی کی ڈھال
 وہاں کی مشہور فی الواقع نہایت خوب و خوش اسلوب ہوتی ہی ہندوستان
 کی کسی ملک میں ایسی سپر کہیں نہیں بنتی میوی بھی وہاں کی اکثر
 خوش ذائقہ چنانچہ بہتر سی بہتر اُن میں گولا ہی احوال اسکا سابق اس
 سی لکھا گیا سوای اسکی چوب چینی بکثرت بہم پہنچتی ہی اور اگر کی
 درخت بھی بہتایت سی وہاں کی پہاڑوں میں ہوتی ہیں آخر برسات اُنکو
 کات کر آب و ہوا میں ڈال دیتی ہیں بعد چند روز جہاں سی جتنا اگر
 اچھا ہاتھ لگا اُسکو رکھ چھوڑا اور بُری کو پھینک دیا خواجہ سراؤں کی افراط
 اُس دیار میں فقط خلاصۃ التواریخ سی دریافت ہوئی اور خلاف اسکا بیشتر
 سنا لیکن ریاض السلاطین میں ہونا نہونا کچھ ندیکھا اس لئی احوال اُنکا ترک
 کیا کچھ نہ لکھا * سرکار رنگ پور گھوڑا گھاٹ " ریشم وہاں بکثرت بہم
 پہنچتا ہی اور ایک میوہ ضخامت میں مثل چار مغز اور مزی میں مانند

سي باره کوس کي فاصلي پر فراسيس کي کوٺي اُسي مين هي عمل دخل بهي
 وهان هميشه انهن کا تها صاحبان انگريز کچھ مداخلت نڪري تهي ليکن چند
 سال سي عناد و فساد جو باهم هوا بنابر اسکي صاحبان عالیشان ني اس کو
 جهين ليا بالفعل بهي انهن کي تحت مين هي * چوچره لا هگلي کي نزديڪ
 دکن کي طرف ايڪ کوس کي تفاوت سي هميشه ولنديز کي تحت و تصرف
 مين تها کي برس سي صاحبان انگريز ني اس پر بهي قبضه کر ليا سبب اسکا
 موافق هونا انکا فراسيس سي * شيورام پور بهي درياي مذکور کي کناري پر
 ايڪ جهوتي سي بستي هي کلکتی سي چه کوس پر اس پار اچانڪ کا اور
 اسکا آئنا سامنا دريا بيج مين علاقه اسکا دنمار سي صاحبون کو کچھ کام نهين
 کوٺي اُسي فرقي کي وهان ابتلڪ قائم هي ليکن اچانڪ کلکتی کي مُتعلقات
 سي هي چنانچه وهان بهي لارڊ ولزلي بهادر ني ايڪ عمارت خوش نما “ اور باغ
 پر فضا “ بنایا هي صحن اسکا مانند رمني کي وسيع “ اور هوا هر موسم مين
 مثل هواي ربيع “ وحشي اس مين اڪثر بي مثال “ اور طائر بهتيري نادر
 جمال “ ديکھر انکو انسان نقش ديوار بن جاي “ اور خدا کي قدرت
 ياد آي “ مشرڪ بهي بي اختيار فتبارک الله احسن الخالقين پڙهني لگي

چوچره Perhaps it should be written

ڪو مُصر پڙتا هِي ڀس حاڪم ڪا خوش نِيٽ هونا عجب چيز هِي چُناڻجھ اِيڪ
 پاڏشاھ کي نقل هِي بَعْضِي اشخاص بھرام گور سي اسڪو منسوب ڪرتي هين ڪه
 اِيڪ ڊن شڪار ڪھيلتا هُوا تنھا پياسا ڪسي قصبي کي نَواح مين جا نڪلا وهان
 اِيڪ باغجھ تها ليڪن ايسا جيسا گاڻن گنوين مين هوتا هِي اور اِيڪ شخص
 دروازي پر اُسکي ڪهڙا يا بيٺها تها اُن في اُس سي پاني مانگا وه بولا ڪه ميان
 سوار تُم گھوڙي سي اُتر بيٺهو ٿڪ دم لو جلد پاني پينا اچها نهين يھ ڪهڪر
 اندر گيا اور دو انار بڙي بڙي توڙ ليا اِيڪ کي داني نڪال ڪر جو پيالي مين
 مچوڙي ملتب بھر گيا اور ڪاسه بهي سير بھر کي اندازي سي ڪم نٿا بادشاھ
 في پيا اور خوب مزه اُٿايا ڪيونڪه ساڻھ ڪلاڻي کي وه ميٺها بهي بهب تها بعد اسکي
 پوچها ڪه سرڪار مين تُم اس باغ ڪا محصول ڪيا ديتي هو اُسني نهايت ڪم
 بتلایا وونھين خاطر مبارڪ مين آيا ڪه ڪچھ بڙھايا چاهي بعد اِيڪ دم کي
 جو دوسرا انار اُسي پيالي مين مچوڙا تو چوتھائي خالي رها حضرت في مالڪ
 کي طرف تعجب سي ديکھا اُس في ڪها ميان سپاهي معلوم هوتا هِي ڪه اس
 وقت حاڪم کي نِيٽ ڏانوان ڏول هوئي اور اُسي کي نِيٽ سي رعيت کي
 برڪت هِي (بيت) ڪيا ڪر دلا ميڪدي کي بهي سير “ و ليڪن تُو رکھ اپني
 نِيٽ بخير * چندن نگر عرف فراش ڏانگا چهوٽا سا اِيڪ شهر هِي ڪلڪتي

ٻي وٺان آدمي “ ڪٻو هو نه هرگز اداس اُسکا جي ” طلسمات کا سا هي
 اُس مين سمان “ پهر انسان چهوڙ اُسکو جايو ڪهان “ اور چار روش کي
 وسط مين ڪرنيل ڪيٽ کا مقبره هي محوطه اُسکا هشت پهلو اور اُسکي گنبد
 مين آڻه ستون دروازي ٻي چار اندر اُسکي سنگ مرمر کا ايڪ ستون تين چار
 هاتھ لٺا ليکن نهايت خوب ترشا هوا “ اور شيشه سا چمڪتا “ اوپر اُسکي
 صاحب قبر کي تصوير اور پاس اُسکي ايڪ عورت کي ٻي شبيه دلپذير “
 جائي عبرت هي ڪيونڪه ٻه رکن حڪومت ايڪ دن يهان حڪومت ڪر رها تها
 آج اس ستون کي ٻچي گڙا هوا هي “ اور هر ايڪ عضو بدن خاڪ مين ملا
 هوا “ ايڪ روز اس ستون کا ٻي حال ڊگرگون هو جاڳا “ اور گنبد کي ٻي
 نقشي مين تغير آڳا “ (بيت) عمارت کي تعمير سي هاتھ اُٿا “ ٿڪ ايڪ
 خانه آخرت کو بنا “ ٻه هي چندروزه هميشه هي وو “ تو اُسکي ٻي ويسِي
 گهر کو نه ڪهو “ قصه مختصر ٻه باغ هميشه ڏهڏها اور هرا بهرا رهتا هي سبب
 ظاهري اُسکا ٻه هي ڪه سواي داروغه اور ڪارڪنن کي سو باغبان ٻي نوڪر هين
 اورو رات دن درختن کي غور پرداخت ڪيا ڪرتي هين اور دريا ٻي نهايت
 متصل هي ليکن حقيقتا مالڪون کي نيت ڪيونڪه سو باغبان اُسکي ايڪ ضلعي
 کي درختن کو ٻي سڀڻ نهين سگھي اور دريا کا قرب بسا اوقات مزارع و باغ

دیکھی انہیں جانی سرت اپنی بھول “ سنی وہاں کی طائر کی جس فی صدا “
 نہ طالب ہوا راگ کی تان کا “ پھولوں پھولوں کی بھی درخت ہزارہا “ بلکہ
 اکثر ایسی جنگا نام بھی کسی فی نہیں سنا “ اور بعضی ایسی کہ جنگو اکثر
 اشخاص فی نہیں دیکھا “ چنانچہ لونگ جانی پھل دار چینی کباب چینی
 کافور کی درخت اُس میں متعدد ہیں بلکہ جانی پھل کا درخت ایک آد
 پہلا ہوا بھی وہاں دیکھنی میں آیا ہی “ اور اُسکی پتی کو جامن کی پتی سی
 کچھ مشابہہ پایا “ لیکن جہمکا ایک پھول ہی کہ وہ خاص انہیں ملکوں میں
 ہوتا ہی اُسکی پتی سی تو مشابہت کلی ہی اور لونگ کا پتا بھی کچھ ویسا
 ہی پر دارچینی کا بیر کی پتی سی ملتا ہی اور کافور کا شفتالو کی پات
 سی “ تالاب بھی اُس میں بہت سی ہیں اور نہرین بھی کتنی ہیں ناودانین
 انکی دریا سی متصل چنانچہ جوار کی وقت جن دنوں شدت ہوتی ہی پانی
 انہیں کی راہ سی تالابوں میں آتا ہی “ اور بھاٹی کی وقت نکل جاتا ہی “
 مکان بھی اُس میں تین چار ہیں لیکن لب دریا ایک عمارت انگریزی
 نہایت دلچسپ پر مختصر “ اور خوش اسلوب سراسر “ ساخت اُسکی بڑی
 بڑی عمارات سی فائق “ ساتھ اُسکی ہر موسم کی لائق “ ہوا اُسکی ہر مزاج
 کوراس آوی “ ساکن اُسکا بسا اوقات حظ اٹھاوی “ (ابیات) نہ گھبراہی تنہا

سیر سُرَت بھلائی ھی “ (ابیات) حصارِ اس طرح کا زمین پر کہیں “ کوئی
دوسرا ہمہنی دیکھا نہیں “ عجب کیا جو معمارِ قدرت اُسی “ کہی ھی یہی ایک
حصنِ حصین “ اور قلعی کی پچھم دریا کی پار لیکن کناری پر بعد ایک باغ
کی قدری فاصلی سی صاحبانِ کمپنی دامِ ظلم کا باغ سراپا بہار ھی لیکن بی
محوطی پر بہت بڑا اور کُشادہ کہ عقل کی احاطی میں آ نہیں سکتا “ پھر
محوطہ اسکی گرد کوئی کیونکر بناوی “ اور فضا اسکی حد سی زیادہ کہ طاہر
وہم اسکی باہر جا نہیں سکتا “ پھر بشر اسکی اُدھر کیونکر جاوی “ سچ تو یہ
ھی جیسی اسکی مالک ریاست و حکومت میں حکامِ زمان سی برتر ہیں “
وہی ھی یہ لطافت و کیفیت میں باغہایِ جہان سی “ جس طرح اُنکی
حشمت کو زمائی میں ترقی ھی اُسی طرح اسکی درختوں کی کثرت کو “ فی
الواقع کہ اسکا ہر ایک چمن گُذار کی برابر “ اور نقشہ باغِ اِرم کی نقشی
سی کہیں بہتر “ زمین اسکی سراسر صاف و ہموار “ اور روشن لال لال اُس
میں بخوبی نمودار “ سبزہ زاروں کی گرد انواع و اقسام کی سیکڑوں اشجار “
اور پتی اُنکی سبز زمرّد وار (ابیات) ہر ایک خارِ اس باغ کا مثل گل “ گیاه
اسکی چمنوں کی سنبُل سی کُل “ شگفتہ نہو اس میں کس طرح دل “ ہوا
اسکی رھتی ھی نت معتدل “ ہیں رنگت میں بہتر جواہر سی پھول “ جو

ھي ڪه هر قوم ڪي مجلس اور خوبروون ڪي شان جدي ھي “ اور هر گروه ڪي
 گلرخون ڪي آن بان جدي “ (مصرعه) هر گلي را رنگ و بوي ديگر است “
 قصه مختصر هر شب سحر تلک ناچ راگ کا سمان بندها رھتا ھي اور تماشا يون
 کا هجوم لگا رھتا “ پھر دسوين کو تيسري پھر سي شام تلک دريا پر ٻي ايک
 کيفيت اور زن و مرد ڪي کثرت رھتي ھي سواي اسڪي اور ٻي ڪي ميلي
 اپني اپني موسم مين پھان ھوتی ھين ليکن نه اس خوبی و کيفيت ڪي ساڻھ
 بنا بر اسڪي طور انکا تحرير ڪيا “ اور انڪي تفصيل مين فايده معتد به نديکيا “
 شهر سي اندک فاصلي پر جنوب ڪي طرف فورت وليم قلعه ھي بنا اسڪي
 پلاسي ڪي فتح ڪي بعد ڪرنيل ڪليو ڪي عهد مين ھوي ليکن معلوم ٻھ ھوتا ھي
 ڪه گویا آج بنا ھي اور اٻي تيار ھوا معھذا اسباب و لوازم جتنی ڪه قلعي کو
 اور اسڪي باشندون کو در کار ھون ھميشه مھيا رھتي ھين بلڪه دن بدن ان
 امور ڪي ترقي و زيادتي ھي ساخت کا تو اسڪي مذکور ڪيا ساخت ھي جدي “
 عمارت ڪي طرز ھي نئي “ اس بلاد ڪي ڪسي قلعي سي نهين ملتي چار
 ديواري باھر سي تو پستي ڪي مانند “ اور اندر سي نهايت بلند “ گنج گاو
 اسڪي ڪون پا سڪي “ اور بچاو لگاؤ ڪسڪي مجال جو بتا سڪي “ واقعي ايک
 عالم ڪي ليئي حڪم طلسم کا رکھتا ھي “ ديد اسڪي حيراني بڑھاتي ھي “ اور

کي ٻي دعوت ڪري هين بلڪه صاحبان عالیشان کي ٻي غرض اڪثر قوم
 کي اشخاص اور سردار مجلس مين جاتي هين “ اور ايڪ حظ اُتھاتي
 هين “ فرش رنگ برنگ کا هر مکان مين اور شمياني کي تلي نہایت
 پاکیزہ و مصفا “ شيشي کي جھاڑ فانوسين قنديلين متعدد روشن جا بجا “ پاندان
 عطران قُري و طلائي قرينون سي دھري ھوي “ سيڪڙون چنگيرون مين ھار
 پھول طري ٻھري ھوي “ بھانڊ بھگڻيون اور ڪڇنيون کي طايفي دس دس
 بيس بيس “ پوشاڪين ٻي انکي گلون مين نفيس نفيس “ (آبيات) مسلسل
 ڪناري بنت کي چمڪ “ ڪري اور توڙي کي تسپر جهنگ “ نظر چشم کي
 ڪس طرح تاب لائي “ کھان تڪ دل عاشقان پس بجائي “ سطح فرش کي
 ھر دو جانب انگريزيون ڀرتڪيشون ارمينيون کي بيبيان اور مستيساين پر تڪلف
 لباس پھني ھوي ڪرسيون پر جلوه گر “ حسن کا بازار لگا ھوا ادھر ادھر “
 (آبيات) جو يوسف ٻي اس بزم دلکش مين آي “ تو دل ايڪ نظاري پر
 بچي جاتي “ ٻيھر ھر مه کا چمکا ھوا رنگ ھي “ ڪه اندر کي ٻي اچھرا رنگ
 ھي “ ھر ايڪ اپني جون سي مغرور ھي “ قيامت ھي آفت ھي بس دور
 ھي “ جو آوي پري اس شبستان مين “ تو جاوي نه ھرگز پرستان مين “ پھر
 انسان ناچيز کا ظرف ڪيا “ حواس اُسکي کيونکر رھين پھان بجا “ سچ تو پھ

خبطي دارد “ اور عشري کي دن کوي خاص طور يهان نهين ديکھا و الا
 لکھني مين آتا اور يهان کي هُند کي بهي بعضي بعضي پوجا کا طور جدا هي
 چنانچه درگا پوجا مين اور کالي کي پوجا مين اور کاتک پوجا مين بي اپني
 اپني گهرون مين بڙي بڙي روغني بُت هر ايک کي شبيهه معين پر بناوڪي
 رگھتي هين اور اُنکو روز معهود بڙي دھوم دھام اور باجي گاجي سي دريا مين
 لڇاڪر ڏال ڏيتي هين عوام يهانڪي اسڪو پهسان گھتي هين غرض درگا پوجا
 بهت دھوم اور هُجوم کي ساڻه هوتي هي “ اور اُسڪي لوازم مين يهانڪي
 خلقت بهت رڻيا پيسا اپنا گھوتي هي “ نام اسکا نور اتر ابتدا اسڪي کوآر
 سڌي پُرواسي ۽ اور انڻها دسمي کو ليکن چهڻه سي ستمي اشتمي نومي تک
 تهاپنا ڪرکي پوجتي هين يعني ايک کوري گھڙي مين پاني بهرڪر اُسڪي آگي
 پرستش مين مشغول هوتي هين اور دسمي کو بسرجن ڪرتي هين يعني درگا کو
 دريا مين ڏال ڏيتي هين اور ايام مذکور مين خصوصاً چهڻهي سي دسوين
 رات تلک اڪثر هندو بنگالي اپني حوصلي اور مقدور کي موافق مجلس
 عيش کي جماتي هين “ اگرچه بيشران مين تهڙڏلي هين پر اس ڪام
 مين بهت سا رڻيا اُتھاتي هين “ چنانچه يهانڪي اعزه متمول مسلمانن

§ purwāsī, for پورن ماسي pūrnamāsī, the full moon.

تو مین ٻہان بیٺھڪر اٺني سر پر چوڻا رکھ کھیر پکاوڻگا وہ کھیر پکاتا هي اور
 جسني اٺني منت کي بر آني پر قفل لگائي کا وہان عهد ڪيا تھا وہ اٺني منہ
 مین قفل لگاتا هي هرچند کہ اُسکي دونون گال ڇهد جاتي هيڻ ڪيونکہ
 اُسکي ادھر ادھر دو پٿريان لوهي کي هوتي هيڻ اور بيچ مین ايڪ پتلا سا
 سڀڄھ شڪل اُسکي گهوڙي کي دھاني سي کچھ ملتي هي غرض ٻہ خر نا
 مشخص اُسکو اٺني منہ مین لاکر امام باڙي کي گنبد کي آس پاس پھرتا هي
 اگر تين پھري مین قفل کھلڪر گر پڙا تو اُسني جانا کہ ميري نذر نہايت قبول
 هوئي اور اگر ساتوين پھري مین گرا تو في الجملہ اور وہ جو کھير سر پر لگاتا
 هي وہ حالت اٺني ايسي بناتا هي کہ لوگ جانين اُسکو ٿھڻڻ لگتي هي کچھ
 اوڙھ بهي ليتا هي گو کہ گرمي کي رت هووي غرض اُسکي حالت کڏائي کو اور
 قفل کي خود بخود گر پڙني کو چھوڻي اُمت کرامت سمجھتي هي “ اور
 اجابت کي علامت “ طرفہ تريہہ کہ اُس جاھل کا ساتھ اُسکي ٻہ بهي عقيدہ
 هي کہ اگر کسي اور امام باڙي مین سواي امام باڙہ معھود ٻہہ ڪام ڪرين
 تو نہ کھير پکي اور نہ قفل کھلي احيانا اگر کوئي عالم اُس جاھل کو چاھي کہ
 اس فعل نا شايسٽه سي باز رکھي ڪيا مجال “ بلکہ جناب امام کي بهي مانع
 هوني سي ترک اُسکا اُس سي امر محال “ (مصرعہ) هر کس بخيال خویش

سا پيسا اُسکي تيارِي مِين اُٺايا هِي “ ليکن ايسي اشخاص تعمير کي سليقي
 اور تعزیه داري کي طريقي سي کيا وقت هين تا هم اگر ايمان کي ساٿه هِي
 اور نيٽ بهي بخير تو عقبي مِين کُچھ رستگاري هوگي “ و آلا دونون جهان
 مِين ذلت و خواري “ اور محرم کي ساتوين کو يهان کي باشندي جيتني
 تعزیه دار هين شدي اور علم اُٺاڪر بيٺڪ خاني تلڪ شيون کرتي هوئي
 ليجاتي هين “ اور وهان سي اسي هيٺ سي پهر اپني گهر آتي هين “ رستون
 مِين خلایق کي کثرت سي رسته کم ملتا هِي “ اور شاني سي شانه چلني
 والون کا چهلتا هِي “ سپهري سي رات تلڪ يهي عالم اور هر ايڪ گلي
 کوچي مِين ماتم رھتا هِي اسيکا نام يهان کي لوگون ني دو پهريا ماتم رکھا هِي
 اور اسي دن هر ايڪ چهوٽي بڙي امام باڙي مِين يهان کي زن و مرد مرغ کا
 سالن اور روٽي يا پلاو پکا پکا ليجاتي هين “ اور اُس پر فاتحه امام کي دلائي
 هين “ غرض مرغ اِس قدر ذبح هوتي هين کہ اُس دن اگر شهر مِين
 ٿوڻڏهي تو ايڪ پر بهي نپاوي “ مگر اُنکي لهو کا ايڪ نالا هر گلي کوچي
 مِين بهتا نظر آوي “ سواي اُسکي يهان کي پواج و ارزال اُس روز امام باڙون
 مِين جاتي هين “ اور عجيب عجيب سوانگ لاتي هين “ مثلاً جس شخص ني
 ايڪ امام باڙي مِين عهد کيا تها کہ ميري يه مراد اگر اِس سال مِين بر آيگي

ڪه بيمار جهان نهين هوتا " ليڪن بواسير ڪهڙي داد ضَعْفِ مَعْدَه پورب مين
 بڪثرت هي " اور ٻچهم مين بقلّت " اور نڪوا سانجر فيل پا گهينگا خاص
 اسي سرزمين مين هوتا هي وهان مطلق نهين مگر ڪبهي ڪهين ڪسي ڪو
 بسبيل ندرت اور ارميني محلي مين بڙي بازار و چيني بازار ڪي بيج ارميني
 گرجه هي بهت اونچا ڪشاده " مشهور بهي سب گرجون سي زياده " تعمير
 اسڪي آغا ناظر ارمينيون ڪي سردار ني سن ايڪ هزار سات سو چوبيس عيسوي
 مين ڪي اگرجه اس شهر مين گرجي انگريز و پرتگيش وغيره عيسايون ڪي
 بهت هين پر شهرت اسيڪي بيشتر هي " اور گهڙي بهي اسڪي نهايت
 معتبر " مسجدين بهي يهان ڪثير هين ليڪن نه قابل تحريز مگر رضائي
 درزي ني ايڪ مسجد پخته مربع نو برج ڪي ستهل هتي مين بناي هي
 واقعي تعمير اسڪي اسڪي حوصلي سي باهر هي " اور يهان ڪي سب
 مسجدون سي بهتر " امام بازي بهي علي هذا القياس بهتيري ڪيونڪه ڪوي
 سرڪار و جمعدار خانسامان ناظر و غيره نهوگا ڪه جسني اپني حويلي ڪي متصل
 نه بنايا هو ليڪن ايڪ چهوڻا سا گنبد دوئين هاتھ ڪا اونچا اور چبوتره بهي اسي
 قدر لنبا چوڙا مگر بعضي بعضي چوڻدار جمعدار ني يا ڪسي صاحب ڪي
 هندوستاني بي بي ني محوطه اور مکانات ڪي ساڻه بهي بنايا هي " اور بهت

تالابون کي لِي مِثلاً لال دِگي چورنگي و غيرہ اور سواي اس جوار بھاڻهي کي
 وسطِ ماہ کي تين تاريخون مين اور آخرِ ماہ کي ايڪٽ ٻار ڏن رات مين پاني
 بصورتِ ديوار بلند ھوڪر نہايت زور شور سي دريائي شور کي طرف سي آتا
 هي ”جهاز بهي اسڪي تلاطم سي هل جاتا هي“ پھر ناو تو کيا چيز هي اس
 وقت اگر گھري پاني مين ھوئي تو تو بچي اور جو ڪناري سي متصل لگي تهي
 تو اسڪي صدمي سي خُشڪي مين جا پڙي اور ٽڪڙي ھو گئي اسي واسطي
 صلاحِ آيا مِ مذکور مين چھوڻي بڙي ناوين بهاري بهاري لنگر ڌال ڪر ڪناري سي
 دور رڪھتي هين بنگلا زبان مين اس طرح کي موج کا ناؤن ھما هي ليڪن
 برسات مين اس قوت و شورش سي نهين آتا سبب يقيني اسکا بشر بتلا
 نهين سکتا ”اور لم اسڪي ڪوئي پا نهين سکتا“ مگر حڪما کي نزديڪ شعاع
 شمس هي ليڪن آيا مِ معينه اور اوقاتِ مقررہ مين پر بادھاي مختلف کو
 بهي اس مين مداخلت هي اور اسڪي ڪم تي زيادتي مين فصولِ اربع کو
 في الّواقع شعاعِ آفتاب مين حدتِ بمرتبہ هي پھر غليان بهي اس سي
 ايسا هي کُچھ ھوگا * آب و هوا بهي يھانکي به نسبت زمانہ سابق کي
 بِالْفعل اچھي هي چندان بد نهين خصوصاً جاري کي رت مين تو هميشہ
 اعتدال پر رھتي هي يون دردِ دُکھ انسان کو کھان نهين ھوتا ”کونسا شھر هي

اور رقيق هوتا جاتا هي پس موجب زيادتي کا لطافت هوتي هي اور اُسکو
 مڪان وسيع چاهيبي ندان بعضي اجزاي آب بعضي ديگر کو تموچ سي تڪراتي
 هوي كناري سي اُدھر کر ديتي هين ليکن يہ گھٹنا بڑھنا موافق حرکتِ قمر هي
 غرض جس وقت چاند آسمان کي بيچون بيچ پھنچتا هي جوارِ کامل هوي
 هي جہان وہان سي زایل هوا بھائهي کي ابتدا هوي يعني پاني کا غليان
 گھٹني لگا آخر حالتِ اصلي پر آ جاتا هي جب ماہِ افقِ غربي پر پھنچتا هي
 پھر جوارِ شروع هوتي هي اور بڑھني لگتي جہان وتد الارض پر آ چکتا هي
 کمال طغياني اُسکي هوتي هي جب وہان مي سرکتا هي بھائيا شروع هوتا هي
 رفتہ رفتہ پاني پھراپني طور پر بھني لگتا هي جس وقت قمر پھر افقِ شرقي پر
 پھنچا جوار کا آغاز هوا ليکن اُسکي اور اُسکي ابتداءي حقيقي هرگز محسوس
 نہيں هوتي مگر عرفي غرض هيجان بحر مانند هيجانِ اخلاطِ بدن آدمي هي
 جيسي اُسکي گھٹني بڑھني کي علت حکما کي نزديک قمر پڑتا هي ويسی
 هي اُسکي بھي غرض اُس ساعت پاني يہان کي دريا کا پيني والي کي حق
 ميں سم هي بلکہ آب تيغ دو دم خدا نحواستہ جسني اُسکو پيا “ وہ بيچارہ
 کب چيا “ پس اکل و شرب خلق کا تالاب کي پاني پر تھہرا اسي واسطي بنا
 تالاب کي اس مُلک ميں اکثر هي اور ايک نامِ خاص بھي بعضي بعضي

اُور صنّعت گري مين ڪامل پيهين بڪثرت موجود هيئن اُور اشيا و تحائف
 بهي انواع و اقسام ڪي عليٰ هذا اَلْقِيَّاس خريد فروخت ڪا سررشته بخوبي
 جاري “خوش و خرم هر ايك بيپاري” ليڪن رنگين ڪپڙي جلد بد رنگ هو
 جاتي هيئن خصوصاً لال ڪا تو رنگ رهندا هي نهين اُور اشياءِ قوامي بهي مثل
 شربت و خميره و معجون شتاب ستر جاتي هيئن بلڪه خشڪ دوائين بهي
 بيشتر بگڙ جاتي هيئن سبب اُسڪا هوا ڪي شوريت و عفونت و رطوبت
 چنانچه گهرون ڪي زمين هميشه نمناڪ رهندي هي بلڪه دو دو تين تين گز
 ديوارين بهي “نيچي ڪي مڪان تو قابل بود و باش ڪي نهين اگر دو منزله سه
 منزله مڪان نه بنائين” تو پيهان ڪي باشندي مطلقاً آرام نپائين “اور پاني
 بيشتر تالاب ڪا پيتي هيئن يا مينه ڪا ڪوئي تمام پيهان ڪي ڪهاري” اور آب
 جاري درياي شور ڪي قرب سي نپت بهاري “خصوصاً جوار ڪي وقت مراد
 اُس سي اُلٽا بهنا دريا ڪا اور بهائيا مخالف اُس ڪا بيان اُسڪا عجائب
 المخلوقات مين يون لکيا هي ڪه هر دريا مين پيه نهين هوتي مگر شور دريا
 مين يا وي دريا جو اُس سي متصل هيئن ساڻه اُسڪي اُنڪي عمق مين پتھر
 بهي نهايت سخت هووين پهر جس وقت ماءُ مچندي اُنڪي سطح سي هووي
 اور شعاع اُسڪي اُن پتھرون پر پڙي پهر وهان سي پلٽي پاني ڪهولني لڳتا هي

هر ايك صاحب گورنر اُسڪي تعمير ڪي افزائش پر متوجہ رها " اور لکها رپيا
 اس ڪام پر اُسني سرڪار دولت مدار ڪا خرچا " خصوصاً نواب گورنر جنرل لارڊ
 ولسلي مارڪويس بهادر في توات گت پيسا اُٿايا " ساڻه اُسڪي شهر ڪا اسلوب
 بهي نهايت خوب ڪرڊکهايا " چنانچه ايك عمارت ايسي عالیشان بناي " ڪه
 جس سي شهر ڪي رونق حد سي زياده بڙهائي " تشبيه اُسڪي ڪس سي
 ديجي ڪه جهان مين اُسکا نظير نهين " ثاني اُسکو ڪسکا ڪهئي ڪه ڪسي عمارت
 ڪي ايسي تعمير نهين " سچ تو بهه هي ڪه جي سي اُسڪي بنائي والي ڪي امارت
 مين آن بان جدي هي " ويسي هي اُس مکان ڪي عمارت ڪي شان جدي
 هي " (قطعه) شفاي و صفائي يهان تک هي جس سي نت " نور صفائي
 صبح ڪو رهتا هي انفعال " نقش و نگار اُس په هين ايسي ڪه حسن ڪا " اُن
 سي نگار خانه چيني ڪري سوال " اور ارتفاع بهه هي اگر عوج ابن عوق " اُس
 پر ڪري نگاه تو پڙهي ڪو لي سنڀال " جس قدر اُس مکان ڪي تعريف ڪيجي
 بجا هي " اور جتنا اس شهر ڪو سراهي روا هي " واقعي بلاد هند مين اب
 ايسي پر عمارت آبادي ڪهين نهين " اور تاجرون سوداگرون ڪي ڪثرت بهي
 اتي ڪهين نهين " صاحبان ڪمپني ڪي مدت سي تجارت گاه هي " اور
 سرداران انگريز ڪي قديم عشت گاه " بالفعل اڪثر صنف ڪي اشخاص متمول

ایدھر کو آئی " تو اُپنی سڀا مین کڻهو پھر نڃائي " اگر دیکھی تڱ اس
 شِستان کو " پري چھوڙ دیوی پرستان کو " بشر کو کھان پھر نظاري کي
 تاب " جگر برق کا یہاں تو هوتا هي آب " نڳھو اپنا جي مُفت آي
 بيخبر " سمجھ کر ذرا اس جگہ دید کر " هر ايک محلي مین عالم
 طلسمات " هر کوچي سي ارڙنگ ماني مات " گهر هر بيپاري کا هر مُلڪ
 کي اجناس مُتعدد سي بهرا هوا " صرافي کي هر دُکان مین رُپي اشرفي کا توده
 لگا هوا " بازار مین هر طرف چهل پهل " شيشه آلات کي دُکان رشڪ
 شيش محل " (ابيات) کھلا بازار اور رستي کُشاده " بياض جدولي هو جيسي
 سادہ " دورستہ اهل حرفہ اور دُکان دار " لڙي موتي کي هو جيسي نمودار " اُدھر
 کو جوهري اُدھر کو بزار " اُدھر صراف اُدھر کو طلا ساز " رُپي اور اشرفي
 دیکھی برستي " دھري تختي پہ جون نرگس کي دستي " کناري اور گوئي اور
 مُسلسل " مثال برق کرتي هين جهلاجهل " جو کچھ چاهو تم اسباب جهان
 سي " بهم وه جنس پہنچي ايک دُکان سي " في الواقع آبادي اُسکي اکثر
 آباديون سي دُوني " اور بستي اُسکي بہت سي بستيون سي بڙي " کيونکہ
 جيسا بازار خُشکي مین دورستا هي " ويسا هي ناو جهاز کي کثرت سي پائي
 مین بهي ايک شهر بستا هي " ليکن سبب آبادي کي ترقي کا يہ هي کہ

مین قحطِ عظیم تھا کرناٹک کی کوٹھی کی سرداری بہت سا غلہ جہازوں
 پر لادکر لشکر میں پہنچایا اور خدمتِ شایستہ بجا لایا موردِ الطاف و عنایات
 ہوا اور اقصائی مطالب و مقاصد کو پہنچا جہاں پناہ اُس سی بلکہ فرقہ
 انگریز سی راضی ہوئی یہاں تک کہ سند و فرمانِ محضول کی معافی کی اور
 کوٹھی کی تعمیر کی عنایت کی تب مسٹر چانگ پادشاہی احکام و فرمان
 دکن سی لیکر بنگالی کو پھر آیا اور وکیل معہ نذر و پیشکش ناظم کی پاس
 بھیجی آخر سند مطابق کوٹھی کی بنانی کی حاصل کرکے بنیاد ڈالی اور شہر
 کی آبادی پر متوجہ ہوا تجارت کا بھی کار و بار بخوبی کرکے لگا ابلٹ بھی
 وہ کوٹھی قائم ہی پرانا قلعہ اُسکو کہتی ہیں القصہ شہر مسطور نہایت کلان
 و معمور بہاگی رتی کی کناری نپت اسلوب کی ساتھ واقع ہی آبادی اُسکی
 دید کی لائق " عمارات اُسکی عماراتِ چین و صفاہان سی فائق " تعمیر کا
 طور ہی نیا " نقشا ہر ایک مکان کا جدا " حویلیان پختہ گچ کی برابر
 برابر " سڑکین ستھری ہموار سراسر " فضا اُنکی رشکِ فضا باغِ ارم " اور ہوا
 غیرت نسیم صبحدم " سبزی پر اُنکی زمرّد زہر کھائی " اور سُرخی سی
 مونگی کا جگر خون ہو جاتی " علاوہ اُسکی مہ جبینون کا ازدحام " حسن
 کی گذری کی ایک دھوم صبح و شام " (ابیات) جو اندر بھی اُس وقت

باغ ڪو مول ليڪر درخت اُسڪي کاڌي اور کوڙهي بناي شروع ڪي پر دو منزله
 سه منزله عمارتين بناي کا اراده ڪيا جب ديوارين اُٿه چڪين شهتيرون سي
 ڇهت پڻي لڳي وهان ڪي شرفا نجبا خصوصاً مغلون في ڪه تاجرون مين عمده
 تهپي مير ناصر فوجدار سي ڪها ڪه جب نا محرم ايسي بلند کوڙهون پر چڙهينگي
 تو هماري ناموس ڪي بي ستري هوگي مطلق حرمت نرهينگي فوجدار في اس
 مضمون ڪي عرضي نواب موصوف ڪو لڳه بهيجي اور متعاقب اُسڪي ان سب
 ڪو روانه ڪيا پهچتي هي حضور مين وي فريادي هوئي جعفر خان في في الفور
 پروانه تعمير ڪي مناهي کا نهايت تاڪيد سي لڳه بهيجا فوجدار في پڙهتي هي
 اُسڪو حڪم ڪيا ڪه ڪوئي راج مزدور بڙهي وهان نجائي اور عمارت ناقص پڙي
 رهي صاحب موصوف اس حرڪت سي نهايت آزرده هوا بلڪه اراده لڙي کا
 ڪيا ليڪن سپاه قليل تهپي اور جهاز بهي ايڪ علاوه اُسڪي مغلون ڪي ڪثرت
 فوجدار ڪي حمايت اس ارادي ڪو فاسد جان ڪر فسح ڪيا اور جهاز کا لنگر
 اُٿا ايا آخر ڪناري ڪي بستي ڪو آتشي شيشي سي جلاتا هوا چل نڪلا فوجدار
 في هرچند اُسڪي روڪني کا تدارڪ ڪيا ليڪن پيش رفت نهوا اور جهاز سمندر
 مين جا پهچا پهر وهان سي دڳهن ڪي طرف روانه هوا ان دنون اورنگ زيب
 ونهين تها اور غنيمون في چار طرف سي رسد بند ڪي تهپي لشکر پادشاهي

اُپني پيڻ ٿهرائي لهندا شهرِ مذکور کي آبادي نهايت بڙه گئي اگرچہ اکثر
 اقوام کي تاجر پهان تهي ليکن مغلون کا اعتبار بيشتري تها اور اهلِ فرنگ کو
 قلعي اور بُرج کي بنياد ڏالني نه ديتي مگر کوٺيون کي تعمير کا حُکم تها
 جب فوجدارون ني سخت گيري اور زياده طلي شروع کي شهرِ مذکور ويران
 هو گیا اور صاحبانِ عاليشان کي رعايت و حمايت و آساني محضول سي
 کلکتہ زياده تر آباد کي بالفعل دار الحکومت هي * شهرِ کلکتہ زمانہ سابق
 مين ايک گاؤن تها وجہ تسميه اُسکي پي هي کي کالي نام پهان ايک بُت
 هي اور بنگلا زبان مين کتا صاحب کو کھتي هين اس سبب سي نام اسکا کالي
 کتا ٿهرا پهر رفتہ رفتہ زبانون کي تغيرات سي بي بهي گر گئي کلکتہ ره گیا ليکن
 آباد هونا اُسکا اور صاحبانِ عاليشان کي کوٺيون کا بنا جس طرح هوا بيان اُسکا
 پي هي کي نواب جعفر خان کي نظامت تلک کمپني بهادر کي کوٺي هگلي
 مين گبول گهاٺ سي متصل مغل پري کي قريب تهي ايک دن يکايک
 زوال کي وقت زمين وهان کي دهسني لگي اُس وقت صاحبانِ انگريز کھانا
 نوش کر رهي تهي باري سردار تو گرتي پڙي نهايت جد و کد سي نکلي ليکن
 مال و اسباب تمام و کمال معه اکثر دي روح اُس مکان کي ساٿي پاني مين
 غرق هوا بلکہ بعضي انسان بهي تلف هو گئي پهر مسٽر چانک ني بنارسِي

باندہ خدا نخواستہ برسات مین ٹوٹی تو سارا شهر ہی ٹوپی چنانچہ سن بارہ
 سی سولہ کی اخیر مین طغیانی آب سی بھگوان گولی کی طرف کا پُشتہ جو
 ٹوٹ گیا محلی کی محلی غرق ہو گئی یہاں تک کہ نواب مظفر جنگ
 مرحوم کی نو ساخت مین پانی گھٹنوں سی کچھ اوپر تھا بلکہ اور عمارتوں مین
 بھی علیٰ هذا القیاس کہتی ہیں کہ ایسی پانی کی طغیانی ایک مرتبی نواب
 مہابت جنگ کی عہد مین بھی ہوئی تھی حافظ حقیقی اب اس آبادی
 کو محفوظ رکھی اور پشتوں کو پہاڑوں کا سا استقلال بخشی * بندر ہگلی اور
 سات گام آدہ کوس کا باہم فاصلہ رکھتی ہیں ساکنام کی شہریت اور آبادی
 بہت بڑی اور پُر عمارت تھی حاکم وہیں رہتا تھا جب یہ مقام دریائوں
 کی طغیانی سی اجڑا ہگلی کی آبادی فی کمال رونق پکڑی فوجدار یہاں کا
 علاقہ حضور اعلیٰ سی رکھتا تھا بنگالی کی ناظمون کا چندان محتاج نہ تھا
 جعفر خان فی فوجداری بندر مذکور کی بادشاہ سی درخواست کرکے نظامت
 مین لگا لی اور ہر ملک کی سوداگروں تاجروں سی مراعات شروع کی
 محصول واجبی سی ایک دام زیادہ نہ لیتا بلکہ کچھ اُس مین سی بھی چھوڑ
 دیتا پھر تو فرنگ و چین و ایران و توران و عرب و عجم سی اکثر تجارت
 پیشوں کی آمد و شد ہونی لگی بلکہ بہتیری مالک جہاز فی بود و باش بھی

اُسِيڪو ٿهرايا چُناڻجھ اُبتلڪ بهي سن باره سي بيس هجري همين اور رياست
 صاحبان ڪمپني دام ظلم کي بود و باش ناظم کي اُسي مِين هي طول اُسکا چار
 کوس سي ڪجهه زياده چيولي بوڻي دار اور ساڙي يهان کي مشهور باغات و
 عمارات بهي في الجمله ليکن نه قابل تحرير آلا موتي جهيل و گوري بنگلي کي
 سوو خراب و مسمار هو گين زبانون پر فقط نام ره گيا هان ايڪ نواب سراج
 آلدوله کا خلاصه عمارات امام باڙا اب تلڪ قائم هي هيٺ وضع اُسکي بيان
 سي بي نياز سچ هي که اس ساخت کا امام باڙا بلاد هند مِين ڪمپنن نهين
 هرچند که تياري اُسکي اب عشر عشر سي کم هي ليکن نمونه گلزار يادگار
 گلزار (قطعه) لطافت اور صفائي کي کيا ڪرون تقرير "عمارَت اُسکي تو رکھتي
 هي حڪم شيشي کا" جو روشني کا سمان چار چند هو اُس مِين "عجب
 نجان تو اس بات کا اچنھا کيا" زبان بهي اُس شهر کي لوگون کي به
 نسبت يهان کي اور بلاد کي باشندون کي درست وجه اُسکي هم صحبت هونا
 اڪثر اوقات هندوستان زاون سي ڪيونکه بعد شاهجهان آباد کي برهمي کي قبل
 از حڪومت صاحبان عاليشان بيشتري اُسي شهر مِين وارد هوئي تهي بلڪه
 سڪونت بهي اختيار کي تهي شهر مذکور البتہ لطيف سي خالي نهين ليکن
 دريا سي نشيب مِين واقع هي اگر پشته دريا کا يا اڪبر پور کي جهيل کا

مسجدِ طلائی کی کچھ آثار نظر آتی ہیں (بیت) ہزاروں ہیں تھی جس جگہ
 بوستان "وہاں اب نہیں ایک گل کا نشان" جہاں مسندین بادشاہوں کی
 تھیں "وہاں ایک گدا کا بچھونا نہیں" مشرق طرف شہر کی چھتہ بہتہ ایک
 جھیل ہی باندھ اُسکا اب تلک قائم لیکن جب کہ آبادی کی بنیاد مستحکم
 تھی برسات میں پانی کا گذار شہر میں مطلق نہوتا تھا اب یک سر سطح آب
 ہو جاتا ہے بلکہ کشتی بھی بآسانی آتی جاتی ہے اور قلعی سی ایک کوس کی
 فاصلی پر ایک قدیم عمارت تھی اُس میں ایک حوض بھی نہایت متعفن
 نام اُسکا پیاز باڑی تھا جو کوئی پانی اُسکا پیتا اقسام کی بیماریوں میں گرفتار
 ہو کر مر جاتا کہتی ہیں کہ اکبر کی عہد سی پہلی گنہگاروں کو وہاں قید
 کرتی تھی کہ اُسکا پانی پیکر جلد ہلاک ہو جائیں سلطانِ ممدوح اس امر کا
 مانع ہوا اور اس دستور کو اُٹھا دیا * مرشد آباد ایک بڑا شہر بھاگی رتی
 کی کنارے اورنگ زیب کی وقت بسا لیکن دریا کی دونوں کناروں پر پہلی اُس
 جگہ مخصوص خان سوداگر فی ایک سرائے بنا کر مخصوص آباد نام رکھا تھا
 کتنی دکانیں اُس میں تھیں جب جعفر خان نصیری کو اصالتاً صوبہ داری
 بنگالی اور اڑیسی کی محمد عالمگیر فی عنایت کی اور مرشد قلیخان خطاب
 دیا تب اُسنی وںہیں شہر آباد کیا اور مرشد آباد نام رکھا بلکہ دار الحکومت

لِي مُلُڪَ بَمُلُڪَ لِي جَايَا كَرِي تهي ” چنانچہ طورِ ثاني تو بدستور جاري هي ليڪن
 اول مين بسببِ انقلابِ زمانہ ہراتي خلل پڙگيا اور چيري خانہ جو
 يہان کي ناظم حضورِ اعليٰ مين ارسال سال بسال کيا کري تهي وہ محمد شاہ
 کي بعد يڪ سر موقوف کر ديا بلڪہ اپني پڙيان پير رکھين اور هي سودا
 سرون مين سمايا ” آداب کا طريقہ ايڪ لخت بھلایا ” شرابِ نخوت و
 رعونت مين سرشار هوئي ” اور آداب کي طريقي سي يڪ لخت دست
 بردار ” ليڪن خمار اُسکا خوب هي کھينچا ” سو طرح کا صدمہ جان و دل کو
 پھنچا ” * لکھنوتي قديم شهر هي آباد کري والا اُس کا سنگل ديپ احوال
 اُسکا يون کر هي کہ بنگالي کي سرحد مين کوچ ايڪ بستي هي اُس شخص
 ني اُسکي نواح سي خروج کيا آخر صوبہ بہار و بنگ کو لي ليا پھر اس شهر
 کو بسايا اور اپني تخت گاہ تھرايا چنانچہ دو هزار برس تلک شهر مذکور دارُ
 الحکومت صوبہ بنگ کا رھا بعد اُسکي تانڈا هوا پھر جھانگیر نگر بعد اُسکي
 مرشد آباد بلڪہ ابتلک بھي صوبہ مسطور کي ناظم کي بود و باش اسي مين
 هي قصہ کوتاہ جس وقت همايون بادشاہ لکھنوتي مين رونق افزا هوا اُسکي آب
 و هوا کو جواچھا ديکھا جنت آباد نام رکھا اب وہ ملڪ ايسا اجڑا هي کہ هزارون
 درندي گزندي وہان اپني گھر بناتي هيں فقط قلعي کي دروازي کا نشان اور

مُلڪون سي آتا هي پهل سِوای انگور و خربوزه انواع و اقسام کي يهان هوتي هيئن
 خصوصاً آم انناس کيلا که هرايڪ اس خوبي کي ساڻه اور بلاد هند ميئن نهين
 هوتا ليڪن خاص اس نواح کي سيورن ميئن ايڪ گلاب جامن هي اگرچه
 ميسٽهي تو خوب نهين هوتي پر اسکي هضم هوني تلڪ جب ڏکار آتي هي
 گلاب کي باس آتي هي پهل بهي سڀي طرح کي هوتي هيئن پر ڪيورا ڪثرت
 سي اور مادھولتا بلڪه يه قسم خصوصيت اس ملڪ سي رکھتي هي اور بعضي
 مقامون ميئن سوڻڻه سياه مرچ بهي پيدا هوتي هي اور پان تو اقسام کي بافراط
 ريشم بهي نپت بهتائيت سي بلڪه ڪپڙا بهي ريشمي قسم قسم کا يهان خوب
 بنا جاتا هي که ويسا اور ڪپڙن کم ڏيکھئي ميئن آتا هي سچ تو يه هي که
 ڪپڙا سفيد بهي اقسام کا خواه مڙهين هو خواه گڙھوار اس مملڪت کي بعضي
 شهرن ميئن ايسا خوش قماش تيار هوتا هي که ڏيکھئي والا اس سي ڪيفيت
 آب روان کي اٿھاتا هي اور پھني والي کا تن سڪھ پاتا هي في آواچ اسکي
 بافت کي صنعتين اور ساخت کي ڪيفيتين ڪسي اور ديار کي بافندي باريڪ
 بين بهي پا نسڪين هرچند ايڪ عمر اڏھيڙ بن ميئن رهين ٻئي کا تو ڪيا ڏکڙ
 اس واسطي يهان کي سردار اپني هم سرون کي ليئي بطريق سوغات بسا اوقات
 ڪپڙا اجناس اس قسم کي بهجوايا ڪڙي تهئي “ اور سوداگر اڪثر اپني نفعي کي

روزگار پيشه اهل خدم جامه نيمه بهي پهنتي هين پر اپني گهرون مين بيشتر
 اسي طور پر گذران ڪرتي هين ليڪن خلاصه التواريخ والا جو لکها هيا ته زن و مرد
 ڪپڙي نهن پهنتي ننگي رهي هين اُسڪي مراد بهي پهي هيا يعني جس پر
 لفظ پهنتي کا صادق آهي ويسي پوشش انڪي نهن اور به جو تصريح ڪرنا هيا
 ته ڪار و بار باهر کا بهي خاص عورات سي متعلق هيا خصوصيت اس امر
 کي بالفعل تو ثابت نهن اس عصر مين شايد هو پر لباس اڪثر عورات کا
 بهي ايسا هيا هيا ڪجهه هيا ڪيونڪه ايڪ هيا ڪپڙي پر بي بهي اڪثفا ڪرتي هين نام
 اسکا ساڙي هيا اس طور سي ته ايڪ ادھوار اُسڪي ناف سي لي پنڌليون
 تلڪ لپيئين هين اور دوسري سي پيٽه گردن اڳلا دهجا سر بسا اوقات ڪهلا
 رکھتي هين بلڪه پائون بهي ننگي پاپوش نهن پهنئين اور سفر بهان بيشتر ناو
 پر خصوصاً برسات مين ڪيونڪه ڪشتيان اس ملڪ مين اقسام کي بهتايٽ سي
 گهاٽون پر چهوڙي بڙي مهيا رهي هين جس وقت مسافر چاهي سوار هو
 بيٺي اور جس شهر کو چاهي آرام چلا جوي اور گرمي جاري کي موسم مين
 رهن گاريان چوپالي بلڪه پالڪي تلڪ بهم پهنچتي هيا جس پر چاهي اس
 پر سوار هو ليڪن اچها گهوڙا هانن نهن لکنا مگر بڙي مول کو پر هانن بڪثرت
 هوتي هين اور موتي جواهر عقيق يشم مطلقاً اس سرزمين مين نهن مگر اور

اُسکي آگي گرد آور ٻيہ اُس سي سرد سیتل پاڻي اُسکو بجا کھتي هين واقعي
 کہ اسم با مسئلي هي "خوراک خاص يہان کي لوگون کي مچھلي خشکا کړوا
 تيل دهي لال مرچ ترکاري ساگ بلکہ مچھلي حضرت يونس کي وقت کي
 بهي اگر پائين تو کھا جائين اور ترکاري کي ناون کوي پتا هاتھ چڙهي ممکن
 نهين کہ اُسي هاتھ اُٿائين لون بهي زياده کھاتي هين ليکن اس ملڪ کي
 بعضي بعضي مقام مين کم بهم پہنچتا هي پر روڻي گيهون جو چني کي اگر
 کيسي هي خوب هو نهين کھاتي بکري کا گوشت مرغ گهي انکي مزاج سي
 موافق نهين بلکہ رياض السلاطين کا مصنف لکھتا هي کہ ان غذاون کو اکثر
 معدہ انکا قبول نهين کړتا احياناً جو کھا جائين تو استفراغ کر دين پر اپني ديکھني
 مين نهين آيا اور کسي ٿهينٿه بنگالي سي صحبت بهي نهين رهي شايد انکي
 ٻيہ عادت هو تو هو هر کسي کي تو نهين اور پهناوا عوام الناس کا خواه وہ
 مالدار هو خواه مفلس موافق ستر کي ڪيونکہ مرد ايڪ سفيد کپڙا جِسکو دھوتي
 کھتي هين ناف کي نيچي سي باندھتي هين زانو تلڪ اُسي ٿھڪتا هي اور دو
 تين پيمچ کي ايڪ لپڙي سر کي گرد لپيٽ لپتي هين چند يا ساري کھلي رھتي
 هي مگر جو اهل هند يا کسي اور ملڪ کي باشندي يہان آکر بسی اور دو دو
 تين پُشتين انکي گذر گين يا جنکو هندوستانينون سي اکثر صحبت رھي يا

اڳر ايڪ ايڪ دانه هر قسم سي ليوين تو ايڪ ٿيليا بهر جائي لطف يه هي
 كه ايڪ كهيت مين تين تين بار پيدا هوتي هين جس قدر پائي بڙهي زياده
 پهڪي بال اسڪي پائي مين نه ٿو بي كهيت والون ني جو ڪهو اسڪو ماپا تو
 پچاس پچهن هاتهن سي ڪجهه اوپر پايا اور رعيت يهان كي حاكم سي سرڪشي
 نهين ڪرتي زر واجبي ايڪ برس کا آتھ مهيني مين بطور اقساط ڪچھري مين
 آپ پنجا ديتي هي گهر اس بلاد مين بيشتر چهري كي اگر چه ڪنني دلدار
 مضبوط خوش اسلوب دير پا هوتي هين بلڪه بعضي بعضي بنگلون مين تو پائچ
 پائچ چار چار هزار ربي لک جاتي هين پر ديوارون كي جاگه ٿيان ڪيونكه
 ڪچي ديوار يهان كي نهين ٿهري مگر خشتي سو غريبنون ڪو ڪهان ميسر بلڪه اڪثر
 صاحب مقدور بهي بسبب خست كي نهين بناتي اور باسن ان اشخاص كي
 اڪثر گلي تهوڙي سي برنجي بستيان بهي بيشتر يهان كي درختون مين هوتي
 هين يعني ايسي جگه گهر بناتي هين كه ادھر ادھر اسڪي درخت هون خدا
 نخواستہ اڳر ايڪ گهر ڪو آگ لگي تو گائون کا گائون پھڪ جاتا هي پھر اپني
 اپني گهرون كي نشان ڪسيڪو معلوم نهين هوتي مگر ان درختون كي آثار
 سي "بور يا بهي اس نواح مين بعضا بعضا ملايمت مين ريشم كي برابر اور
 صفائي مين محمودي كي چاندي سي ڪهين بهتر بلڪه گرميون مين فرش اسکا

چوڙي پُشتي بناڪر مڪانون کي بُنياد اُنکي اندر ڌالڻي ٿئي ۽ اُور ڪهيتيان بهي
 اُسي طور پر ڪرڻي ٿئي بناڪر اُنکي پهاڻي عوامَ تي اِس مُلڪَ کا نام بنگالا رکڻ
 ڏيا گرمي اِس ڏيار مِين چاليس مچاس برس سابق اعتدال سي قريب ٿئي
 اُور جاڙا نهايت ڪم برسات جيئڻ سي شروع ٿئي ٿئي اُور ڇهه مهيني رهي
 ليڪن بِالْفِعْلِ بعضي مُلڪون مِين گرمي اُس سي ڪهين زياده چئنڇهه سال
 گذشتہ مِين تو اُسي بڙي ٿئي ڪہ اِيڪ عالم تي اڏيت ڪهينچي بلڪہ اڪثر
 حيوان انسان حرارت سي تلف ٿئي جاڙا بهي اُتڻا پڙتا هي ڪہ سير بهر روي
 کا بالا پوش انسان رات کو اوڙه سوئي ليڪن ٿڌڻ نهين ٿئي بلڪہ پهر دن
 چڙهي سي ليڪر دو ٽين گهڙي دن رهي تلڪ رضائي کي حاجت نهين اُور
 دو پهر سي سپهري تڪ اِيڪ دُٻڻا ڪافي هي ليڪن اِس موسم مِين گوهر اڪثر
 پهوار کي مانند پڙتا هي بلڪہ ڪُٻي ڪُٻي تو آسمان دھوان دھار هو جاتا هي
 سورج پهر ٿيڙه پهر دن چڙهي تڪ نظر نهين آتا اُور برسات پانچ مهيني
 کي بلڪہ ڪُٻه ڪم شروع اُسکا آڏهي جيئڻ سي اُور آخر کاتڪ کا اول معھذا
 اِگر جيئڻ کي ابتدا مِين يا کاتڪ کي انتها مِين ڪسي برس مِين به برس
 تو ڪُٻه مضائقہ نهين ڪيونڪہ ڪُٻي ڪُٻي غير موسم ڪيا مچهم کي مُلڪون مِين
 نهين برستي دھان اِس مُلڪ مِين بيشتري ٿئي اِهي اقسام اُنکي بهت هيئن

کوس کي عرصي تلک قصه مذکور کي نواح سي نکلتا هي هندو اسکو بهي
ايک مظهر الهي سمجھکر پرستش ڪري هيڻ بلڪه برهمڻون کا عقيدہ به هي
جو بت ڪه ٿوٽ جائي قابل پوجني کي نهين مگر به پتھر قصه کوتاه طول
اس صوبي کا تيليا گڏهي سي ليکر رھتاس تلک ايک سو بيس کوس اور
عرض ترھت سي کوہ شمالي تلک ايک سو دس کوس شرق رو اسکي
بنگالہ غرب رخ الہ آباد جانب شمال آوڌہ جنوب کي طرف ايک بڑا پھاڙ
حاجي پور منگير چنپارن سارن ترھت پٿنہ بهار رھتاس آٿھ سرڪارين متعلق
ان سي دو سو چاليس محال آمدني اٺھتيس ڪروڙ سات لاکھ تيس هزار دام

صوبہ بنگالا “جهانگير نگر عرف ٿھاکہ ايک بڑا شهر آبادي و خوش سواڊي
مين بھراتب بھتر هر ملڪ کي اشيا اس مين هر وقت مھيا “ هر قوم و
اقليم کي لوگ اس مين هزارها “ اصل نام اسکا بنگ تها لفظ آل ڪه اس
سي ملا وجہ اسکي به هي ڪه بنگالا زبان مين آل بڑي پُشتي ڪو ڪھتي هيڻ
اور اسي باغ و زراعت و غيرہ کي گرد پاني کي محافظت کي لئي بنائي هيڻ
چنانچہ اٽلي زماني مين اس ملڪ کي زميندار دامن کوہ مين ڪه زمين
وھانڪي بچي هوني هي دس دس ھاٿھ کي اوڻجي اور آٿھ آٿھ ھاٿھ کي

خلاصہ التَّوَارِيخِ کی مَوْلَفِ نِی لَکھا هَی کَہ جِس مَقام مِیں گَنْدُکُ گَنْگا سِی
 مِلی هَی جُو کُڑی وَهَانْکَا پَانِی پِی اُسْکی گَلی مِیں گَھینْگا نِکَلی رُفْتَه رُفْتَه
 نَارَجِل کی برابر هُو جَائِی اُور سِیرِ الْمُتَّخِرِینِ والا پِہ لَکھتا هَی کَہ حاجِی
 پُور کی آب و هَوَا کی پِہ خَاصِیت هَی اَکْثَر وَهَان کی لوگ اِس مَرَض مِیں
 گِرَفْتار رَھتی هِیں اُور گَھینْگی اُنْکی گَلون کی هار لِیکِن واقِع مِیں اُسْکی خِلاف
 هَی شایِد چالیس مِچاس بَرَس آگِی پِہ بات هُو تو هُو اب تو نِہیں هان
 بَعْضِی بَعْضِی اشْخاص کی گَلون مِیں اَلْبَتَه سو پِہ کِہان نِہیں اُور پَانِی دَرِیایِ
 مَذْکُور کا بَشْرَاکِت گَنْگا بَلْکَہ نِرا هزارون اَدَمِیون نِی پِیا اب تَلْکُ بَہی پِیتی
 هِیں لِیکِن گَلا کِسیکا سُوچتا بَہی نِہیں گَھینْگی کا تو کِیا ذِکْر هَی مَگر اِیکُ
 بُوڑھِی گَنْدُکُ مُظْفَر پُور کی تَلی بَہتی هَی اُسْکی پَانِی کا پِہ اثر مُقَرَّر هَی
 بَلْکَہ مُبالَغَہ پِہان تَک کُرتِی هِیں کَہ چَرْنَد پَرْنَد جُو اُسْکا پَانِی پِی پِہ بَیماری
 اُسْکی گَلی پڑی چُناؤچَہ مُظْفَر پُور کی اَکْثَر حَیوان و اِنْسان اِس بلا مِیں مُبْتَلَا
 رَھتی هِیں وَہ جُو سُنَا تَہا کَہ اِیکُ سَرزَمِین کی چِڑیا کُوی کی بَہی گَلی مِیں
 گَھینْگا هُوتا هَی وَہ پِہی هَی اُور سَالْگَرَام اِیکُ پَتھر حاجِی پُور کی اطْرَاف مِیں
 هُوتا هَی رَنگُ اُسْکا سِیاهِ مِقْدَار مِیں چَھوٹا گول رَوغْنِی فَاړسِی مِیں سَنگُ
 مِھکُت اُسی کَہتی هِیں راقِم خُلاصَہ التَّوَارِيخِ کا پِہان تَک لَکھتا هَی کَہ چالیس

کچھ اوپر اُلقصہ اس صوبی میں گرمی شدت جاڑا معتدل دو مہینی سی
 زیادہ لباس پُنبی کی احتیاج نہیں ہوتی مینہ چھ مہینی آگے برستا تھا
 اب بھی پانچ مہینی سی کچھ کم و زیادہ برس رہتا ہی زمین یہاں کی تمام
 سال دریاؤں کی بہتایت سی شاداب رہتی ہی باو شدت نہیں چلتی گرد
 بھی نہیں اُڑتی کشتکاری جیسی چاہی ویسی ہوتی ہی خصوصاً دھان یہاں
 کی نہایت پاکیزہ اور چنیدہ پر کساری ایک اناج کثرت سی ہوتا ہی نہت
 سستا بد مزہ مثر کی مانند مفلس تہیدست یا کمینی اُسی کھاتی ہیں گو کہ
 وہ سبب بعضی امراض کا بھی ہوتا ہی اگرچہ دریا اس صوبی میں بہت
 ہیں پر گنگا سون گنڈک کلان تر لیکن سون جبال جنوبی سی آکر منیر کی
 نزدیک گنگا سی ملی کہتی ہیں کہ نربدا اور وہ ایک چشمی سی نکلی ہیں
 اور گنڈک شمال کی جانب سی آ حاجی پور کی قریب ”کرم ناسا ایک
 دکن کی پہاڑ سی نکلکر چونسا گذر میں“ اور پن پن جنوب کی طرف سی
 آ قنوج کی آبادی سی گذر عظیم آباد کی نزدیک ”غرض بہتر دریاو ایسی
 کہ جن میں ناو چلی اور چھوٹی انگنت گنگا سی شہر مذکور تک پہنچتی
 پہنچتی ملی اکثر ہندو خاص کرم ناسا کو اُترتی ہوئی یہ احتیاط کرتی ہیں
 کہ ایک قطرہ اُنکی بدن تک نہیں پہنچتا نہائی کا تو کیا نہ کر ہی پر

غار هي ڪه مڃاڻون ڪا رڻيس سال مين ايڪ بار شيوڀرت ڪي دن اُس غار
 مين جاڪر خاڪ اُٿا لاتا هي اور هر ايڪ مڃاڻور ڪو اُس مين سي ديتا هي
 بقدر اُسڪي نصيب ڪي وه خاڪ سونا هو جاتي هي * ترهت قديم سي دار
 اَلْعِلْمِ هِندي هي آب و هوا وهان ڪي نهايت خوب دهِي وهان ڪا چڪا اور
 نهايت خوش مزه بهت تحفه بلڪه خلاصه التواريخ ڪي مصنف ني لکها هي
 ڪه ايڪ برس تلڪ نهين بگرتا اغلب ڪه يهه مبالغه هو ڪيونڪه عقل و نقل
 ڪي خلاف هي اور دوده بهي علي هذا القياس ڪهي هين ڪه اهير اگر پاني
 اُس مين ملا ديوي تو غيب سي اُسي ايڪ صدمه پهچي اور بهينس بهي
 اُس بستي مين اتي بڙي اور قوي هوتي هي ڪه شير اُس ڪو شڪار نهين ڪر
 سکتا علاوه اُسڪي برسات مين هرن باره سنگي شير بکرت اڪڻهي هوڪر بستي
 مين آتي هين اور باشندي وهان ڪي حظ اُنڪي شڪار سي اُٿي هين * سرڪار
 چنپارن ڪي زمين قابل مين اگر ماش بکير ديوين تو بي رنج ڪشتڪاري اُگ
 اُٿين اور اُسڪي جنگل مين پيمپلين بهت پيدا هوتي هين * رھتاس قلعه هي
 ايڪ بلند پهاڙ دُشوار گذار پر چوده ڪوس ڪي پير مين ڪهيتيان اُس مين
 اڪثر هوتي هين چشمي بهي بهت سي جوش ماري هين اور جس جگه وهان
 چار گز گهوڙي پاني نڪل آئي آبشارين بيشتتر تالاب برسات مين دو سو سي

نهن آيا خدا جاني تهې يا نه تهې پر دريا كناري ايک قلعه پُخته البتہ تعمير
 هوا تها بالفعل بهي موجود هي ليکن عمارت اُسکي جا بجا سي گر پڙي هي
 اندر اُسکي صاحبان انگريز في بنگلي اور بعضي مکان پُخته بهي بناي هين اور
 جهاز کھنڌ کي جهاز تلي بيچناتہ ايک معبد هي اُس کو مهاديو کا مکان
 کھتي هين وهان پيپل کا ايک درخت کہ اُسکي اُگني کا آغاز کسي کو معلوم
 نهن وهان کي مجاورون مين جس کو احتياج خرچ ضروري کي هوتي هي وه
 کھانا پينا چهوڙ کر اُس کي نيچي آ بيٿتہا هي اور مهاديو سي التجا کرتا هي
 دو تين دن کي بعد ايک پتا لکھا هوا قلم غيب سي بخط هندي اُسکي پاس
 آن پڙتا هي اُس سي ربي جتني کہ اُسکي قسمت مين تهې اور نام ديني
 والي کا بلکہ اُسکي باپ دادا زن و فرزند کا بهي معه ملڪ و سمت هرچند
 کہ پانسو کوس پر کيون نهو ظاهر هوتا هي تب وه اُسکو اپني سردار پاس ليجاتا
 هي وه مطابق اُسکي ايک کاغذ لکھ ديتا هي اُسکو هندوي بيچناتہ کھتي
 هين پھر طالب اُس کو ليکر اُس شخص کي پاس جاتا هي في الفور وه زر
 مسطور حامل کاغذ کي حوالي کرتا هي چنانچہ خلاصہ الہند کي مؤلف في
 لکھا هي کہ ايک بامنہ وهان کا ميري نام پر بهي لايا تها مين في سعادت
 جانکر زر معلوم ادا کيا نادر تر اُس سي يہ هي کہ اُس معبد مين ايک

اِس صوبي ميَن بُنا جاتا هِي خُصُوصًا مَلَمَل شَيْخ پُري كِي مَشهُور ليكن حَقِي
 اُور بَعْضِي ظُرُوف شَيْشي كِي عَظِيم آباد سِي بَهِتَر كَهِين نَهِين بَنَتِي توتا بَهِي
 اَمَرِت بَهِيلَا اُور كَجَلَا كَثَرَت سِي هُوتا هِي اِگر كُوي اُسكو پالي اُور پُڙهاڻي تو
 جَلَد بولي اُور بَخُوبي پُڙهي تيس كوس شَهرِ مَذْكَور سِي جَنُوب كِي طرف
 دامنِ كوه ميَن گيا ايڪ بَڙا مَعْبِد هُنُود كا هِي دُور دُور سِي هِنْدُو وَهان آكر
 اِپني جَد و آبا كِي ارواح كِي لِيي دان پُن كُرتي هِين خُصُوصًا جَلِي كِي جاري
 مِين جب آفتاب قوس ميَن آتا هِي هزارون اشخاص مَرَد و زن اُس مَكان
 ميَن نَزْدِيڪ و دُور سِي آكر جَمْع هُوتي هِين پَهرِ مَنَتر پُڙه پُڙه تَرِين سَرانْدَه
 سِي اِپني مَرَدُون كِي رُوح كو مَسْرُور كُرتي هِين اُور اُس عَمَل كو اُنْكِ نِجات كا
 مُوجِب اُور اِپني بَهِتَرِين عِبَادَت جَانَتِي هِين قَرِيب اُسْڪي سَنَگِ مَرَمَر كِي
 كَهان هِي بيشتر وَهان ظَرْف و زِيُور سَنَگِ مَذْكَور كا بَنائي هِين اُور اِپني
 دَسْتِڪاري كِي خُوبيان دِكْهائي هِين كاغذ بَهِي اَرُول اُور بَهار ميَن بَهِتَر سِي بَهِتَر
 بَناتا هِي * سَرڪارِ مُنْگِير خُلاصَةُ التَّوَارِيخ كِي رُو سِي مَعْلُوم هُوتا هِي كَه عالم گِير
 كِي عَهْد ميَن يا اُس سِي سَابِق ايڪ دِيُوارِ سَنَگِين گَنگا سِي پَهاڙ تَلڪ بَنَاكر
 صُوبَه بَهار كِي اِنْتِها اُس كو مُقَرَّر كِيا تَها ليكن سَالْهاڻي سَال سِي اِلِي اَلآن كَه
 سَن اَتَهَتاليس جُلُوسِي شاه عالم كِي هِين اُسْڪا نِشان بَهِي سَنِي دِيكْهَني ميَن

لڳوڻها هر پنجشنبہ شهر کي لوگ بکثرت وهان جمع هون ھين اور ڪنڇينيان
ڪسيان بهي تمام شهر کي جاتيان ھين ناچ کي صحبت تا شام بلڪہ ڪچھ ايڪ
رات گئي تلڪ رھتي ھي ليڪن صاحبان عالیشان کي رياست سي پھلي
اندام خلایق کا بکثرت هوتا تھا اب اس قدر نہین پر تھوڙا بہت مجمع
ھو ھي رھتا ھي ڪيونکہ ڪوئي مزاحم و مانع نہین جسکا جي چاھا گيا جسکا
جي نچاھا نڱيا دکھن رخ اس درگاہ کي ايڪ امام باڙا ھي جلي کي ڪناري
تعزيبی تمام شهر کي عاشوري کي دن وھين دفن ھون ھين صحن اسکا نپت
ڪشاده اور مصفا اور ھوا نہایت خوش آيند و پاڪيزہ خصوصاً برسات مين جو
ڪوئي وهان جائي نہایت حظ اُٹھائي (بيت) جو چاھي کہ کھولي دل تنگ
کو “ ڪري دید وھانکي ذرا رنگ کو “ غلہ بهي اقسام کا بکثرت هوتا ھي
بيشتر ارزاني رھتي ھي اور دودہ نہایت گاڙھا چکنا دھي بهي نپت خوش
ذائقہ چکا بہتایت سي بہم پھنچتا ھي اور ترڪاريان هر قسم کي بافراط اور
مستمي ليڪن تر ميوي بعضي بعضي خوب ھون ھين خصوصاً انار نہایت خوش
مزه بہت بڙا دانہ بهي اسکا گندہ نپت رسولا اگرچہ ولايت کا سا تو نہین
ليڪن ھندوستان کي اڪثر بلاد کي انارون پر شرف رکھتا ھي غرض جلال آباد
کي انار سي ڪلاڻي و خوب ميں ڪچھ کم نہین ڪپڙا بهي اقسام کا خوش قماش

گنڌي ندي بهي گهتي هيئن طول آبادي کا بهت بڑا اور عرض چھوٽا عمارتين
 سابق مين ڪهڙيل ڪي بيشتر تهين اب پخته بهي هيئن ڪيونڪه آبادي و رونق
 شهر مذکور ڪي صاحبان انگريز ڪي رياست مين بڙه گئي هي چنانچه باقي پور
 تين ڪوس شهر سي پري پچهم طرف اور اس سي تين ڪوس آگي دانا پور سي
 دونون معموري معقول آباد هوئي هيئن اڪثر صاحبون ڪي کوٽيان حويليان باغ
 وهان ساٿه ايڪ لطف و قريبي ڪي هيئن غرض شهر سي تا باقي پور اور وهان
 سي دانا پور تلڪ بستي هي بستي هي فاصله نهين شهر پناه اسڪي خام مگر
 دريا ڪي طرف ڪي الڳ خشتي هي اور قلعه وهان بنام هي في التحقيق
 ايڪ عمارت ڪلان خشتي هي ليڪن اب پراي هوگي مڪانات اس مين متعدد
 هيئن اور قريب اسڪي پچهم ڪي طرف ايڪ مسجد و مدرسه نهايت ڪشاده
 و خوش عمارت اگرچه عمارت اسڪي اب پراي هوگي هي ليڪن شهر مذکور
 مين لا ثاني هي گو ڪه مسجدين گهڻه و نو بهت سي هيئن يون سنا هي ڪه بنا
 اسڪي نواب سيف خان مرحوم في ڏالي تهي پر تعمير نواب هيبت جنگ في
 ڪي بالفعل نواب سراج الدوله ڪي نواسيون ڪي قبضي مين هي پورب دروازي
 ڪي آگي ايڪ مسافت بعيد پر جعفر خان کا باغ هي اور پچهم دروازي سي
 ايڪ ڪوس ڪي فاصلي پر شاه ارزان ڪي درگاه سوان اسکا سهاونا هر ايڪ مڪان

خوشبو ہوتی ہیں اور ہندوستان کی اکثر متعلقات سی اس صوبی کی کتنی ہیں
 محالوں میں کھیتیاں تین مہینی پہلی بڑی جاتی ہیں اور بعضی مقاموں میں دریا
 جیٹھ کی مہینی میں چڑھتی ہیں اکثر قطعی زمین کی پانی میں ڈوب جاتی
 ہیں پرجون جون پانی زیادتی کرتا ہی دھان زیادہ پہکتا ہی اور بڑھتا اگر بال
 لگنی سی پہلی پانی کی طغیانی ہو جاتی تو دھان اُس کھیت کی بال نہیں
 لاتی اور جنگلون میں یہانکی ارنی شیر کثرت سی ہوتی ہیں خصوصاً گورکھ پور
 بہرائچ کی اطراف میں سوای اُن کی ہرن پاڑھی و غیرہ جانور صحرائی بافراط نظر
 آتی ہیں اگرچہ دریاؤ اُس صوبی میں بہت ہیں لیکن بڑی تین گھاگرا سرجو
 گوہتی طول اُسکا سرکار گورکھ پور سی قنوج تلک ایک سو تیس کوس اور عرض
 کوہ شمالی سی تا سدھور تابع الہ آباد ایک سو پندرہ کوس شرق کی جانب
 اُسکی بہار شمال کی طرف پہاڑ جنوب کی سمت مانک پور مغرب کی طرف
 قنوج آدہ بہرائچ خیر آباد لکھنؤ گورکھ پور پانچ سرکارین متعلق اُنکی ایک سو
 ستانوی محال آمدنی چھیاسٹھ کروڑ پینتالیس لاکھ چالیس ہزار دام

صوبہ سرایا بہار بہار “دار الحکومت اُسکا عظیم آباد عرف پٹنہ ہی نہایت خوش
 سواد و خوش آب و ہوا گنگا کی کناری اور اُس مقام میں اس دریاؤ کو اٹھارہ

مین اپنی معاصرین کی بیچ لا ثانی تھا بلکہ اشعارِ عربی تو اُس فصاحت و
 بلاغت و بہتایت کی ساتھ کہ اہل ہند میں کسی فی اُس سی آگے بھی
 نہیں کہی قصائد اُسکی اس بات پر دال ہیں اور اُسکی تعریف میں فصیحان
 عرب کی زبانیں لال پیدائش اُسکی گیارہ سی چودہ ہجری میں اور وفات
 اُسکی سن بارہ سی دو میں پوتا بھی اُسکا مفتی میر حیدر اس وقت میں
 مغنم زمانہ اور اپنی معاصرین میں یگانہ تھا علومِ عربیہ میں مہارت تمام اور
 فنونِ فارسی میں دستگاہ ما لا کلام اُسکو تہی نثر کی جمیع اقسام پر قادر تھا
 اور نظم کی تمام اسراروں سی ماهر صاحبان کمپنی دامِ ظلہم کی سرکار میں
 مفتی گری کی خدمت پر برسوں سرفراز رہا اور صاحبانِ عالیشان کی نزدیک
 اپنی ہمچشمون میں ہمیشہ ممتاز اتفاقاً سن بارہ سی سترہ میں قبایل اُسکی
 بلگرام کو روانہ ہوئی میر موصوف اُنکی پہنچانی کی لئی آپ بھی تا عظیم
 آباد ساتھ ہوا مرشد آباد تلک پہنچا تھا کہ مرض الموت فی آگہرا آخر منزل
 مقصود تلک جانی ندیا مگر اول منزل پہنچایا حاصل یہہ ہی کہ یہانکی زمین
 قابل خیز ہی ایک نہ ایک صاحب کمال یہان پیدا ہو رہتا ہی قصہ مختصر
 صوبہ مذکور کی آب و ہوا نہایت خوب ہی اور اناج اکثر قسم کا یہان پیدا ہوتا
 ہی خصوصاً استعمالی اور جہنوان چانول نہایت خوش ذائقہ و سفید و پاکیزہ و

شاعرو صاحب طبع هوتي هين قصبه مذکور مين ايک کوا هي جو کوي
 چاليس دن متصل اسکا پائي پي خوب گاني لگي سواي اسکي اکثر اهل کمال
 يهان گذري هين چنانچه سيد جليل القدر عبد الجليل بلگرامي بڑا شاعر علم
 عربي و فارسي مين خوب ماهر فرخ سير کي وقت مين گذرا هي بلکه سنده
 کي وقايع نگاري بهي اسکو حضور اعلي سي مقرر تهی اتفاقا سرکار مذکور مين
 ايکبار اسي عهد فرخ مين مينه کي سائنه مصري برسي تهی اس بزرگوار ني اس
 خبر نادر روزگار کو بهي حضور پر نور مين لکھ بهيجا حضرت اس خبر کو
 خلاف قياس سمجه کر نهايت برهم هوي که افترا کرنا اور بادشاهون کي حضور
 لکھنا وقايع نگار کو هرگز نچاهي يه شخص لائق اس امر کي نهين غرض
 خدمت سي اس بيچاري کو تغير کيا روزگار اسکا نا حق جاتا رها تب مير
 مذکور خبر مسطور کي صداقت کي لي وھان کي قاضي مفتي بلکه اکثر اشرف
 ثقات کي مھرون سي ايک محضر کرواکر حضور مين لي آيا اور مورد الطاف
 هوکر اسي خدمت پر پھر سرفراز هوا يه رباعي حسب حال اسکي طبع زاد
 هي (رباعي) فرخ سير آن بادشه با برکات " چرخ از ادب او شده شيرين
 حرکات " در سنده زمين عهد دولتمندش " باران باريد ريزه قند و
 نبات " بعد اس بزرگ کي مير غلام علي آزاد بهي شعر و سخن و علم و فضل

و بیرون شهر کی هین لیکن نعل دروازی کی پچھم طرف کالکا کا بُخانوہ قدیم
 ہی ہر پیر کو وہاں ہندو جمع ہوتی هین اور اُسکی پرستش کرتی هین پر
 ہولی کی بعد کئی دن رات کو روشنی افراط سی وہاں رھتی ہی اور دکن
 طرف شهر کی باہر بھوانی کا مٹھ ہی وہاں بھی اٹھواری مین ایک مرتبہ
 ہندو پوجا کو جاتی هین اور پکوان و غیرہ بھی چڑھاتی هین مگر ہولی کی
 آٹھویں دن بڑا میلہ ہوتا ہی تمام شهر کی ہندو بلکہ مسلمانان تماش بین اور
 رنڈیان بھی اُسی قبیل کی ہزاروں جاتی هین اور جھمکڑی اپنی خواہش
 مندوں کو دیکھاتی هین تا شام اُسکی مندر کی گرد و پیش ایک دنگل جمع
 رھتا ہی بلکہ اُسکی قریب جتنی باغ هین وی بھی آدمیوں سی معمور رھتی
 هین غرض اس طرح کا میلہ شهر مذکور مین دوسرا نہیں ہوتا نام اُسکا آٹھون
 ہی سورج گنڈہ ایک تالاب ہی شهر سی چار کوس پچھم دکن کی درمیان
 وہاں بھی ہر برس برسات کی اخیر ہندو زن و مرد لاکھوں نہائی جاتی هین
 بلکہ دور دور کی باشندی بھی وہاں اپنی تین پہنچاتی هین ساتھ اُسکی
 مسلمان بھی ہزاروں نظر باز سجدی سجائی ادھر ادھر اور کسبیاں بھی تمام
 شهر کی اپنی تین بنائی چنائی جدھر تدھر جلوہ گر “ غرض تا شام وہاں
 بھیڑ بھاڑ رھتی ہی * بلگرام ایک بڑا قصبہ ہی اکثر وہانکی لوگ قابل و

وہاں تحصیل کی واسطی آتی ہیں اور فیض اُن سی اُٹھاتی ہیں حق تو یہ ہے
 ہی کہ اس شہر میں چرچا علم و فضل کا بہ نسبت اور بلاد کی زیادہ ہے
 کیونکہ فریقین کی فاصل یہاں موجود ہیں لیکن سنیوں کی فرقی میں مستثنیٰ
 مولوی مبین صاحب اور فرقہ ناجیہ امامیہ میں مولانا سید دلدار علی سلمہ
 اللہ تعالیٰ وحید عصر ہی تبحر اُس بزرگ کا اُسکی تحریر سی ہویدا ہی “ اور
 خوش بیانی اُسکی تقریر سی پیدا “ سیکڑوں اشخاص اُسکی بدولت گمراہی سی
 نکلی “ اور منزلِ ہدایت کو پہنچی “ مذہبِ امامیہ کو ترقی کامل اُسنی
 بخشی “ اور ہندوستان میں نمازِ جمعہ و جماعت اُسی فی کی “ شعرا بھی
 جتنی اُس شہر میں ہیں کیا فارسی گو کیا ریختہ گو کہیں نہیں وجہ اُسکی
 یہ ہے کہ بعد برہم ہونی شاہجہان آباد کی اکثر غریب امیر میرزایان
 ہندوستان سی نواب صفدر جنگ و شجاع الدولہ بہادر کی عہد میں آکر اس
 شہر میں بسکونت دائمی ساکن ہوئی پس شہر تو عبارت اشخاص سی ہے
 یہی دلی ہو گیا اور باشندی بھی اُسکی بسبب کثرت صحبت و تتبع زبان
 تلفظ صحیح کرنی لگی یہاں تک کہ جنکی طبع موزون تھی شاعر ہو گئی با
 وجود اُسکی بھی لہجی میں تفاوت بہت رہ گیا لیکن محاورے میں کم کہ
 زبان دان ہی اُسکو سمجھی اور اُسکی طبیعت اس پر لگی بخانی بھی اندرون

پينٽاليس برس گذري هين العلم عند الله اور چوڪ سي متصل دکن طرف
 فرنگي محل وجه تسميه اسڪي ۽ هي ڪه اڪبر بادشاهه کي عهد سلطنت مين
 اس مکان کي بيچ ايڪ فرانسيس سوداگر اُترا تها جو ڪه بي اذن حضور اعليٰ
 کي ۽ امر وقوع مين آيا ملازمان حضور کو گوارا نهوا آخر اسکو اخراج ڪيا پهر
 اورنگ زيب کي وقت مين حسب الحکم بادشاهي مکان مسطور ملا قطب
 الدين شهيد کي فرزندون کو ملا چنانچه ابتڪ بهي انکي آل اولاد کي
 سکونت وٺين هي ليکن وجه معاش جو انکي بند هو گي ۽ ۽ صرف قصور
 طالع کا هي و آلاچ نواب وزير کي سرڪار سي هزارون پرورش پاتي هين “وارد
 صدر يهان سي بهتيرا ڪجهه ليجاتي هين “پهري تو استحقاق زياده رڳهتي هين
 ڪيونڪه آبا و اجداد سي اس خاندان عالي کي نمڪ خوار و شڪر گذار هين جس
 وقت مزاج جناب عالي کا ٽڪ ايڪ متوجه هوا ۽ ۽ قليل تو ڪيا چيز هي ما
 ورا اسڪي نعمت ڪثير پائينگي “اور مدت العمر کو بي نياز هو جائينگي “ليکن
 کل امر مرهون باوقاتها (بيت) تا در نرسد وعده هر کار ڪه هست “سودي
 نڪند ياري هر يار ڪه هست “حاصل ۽ ۽ هي ڪه مکان مذکور قديم مدرسه
 هي بڙي بڙي فاضل مدرس وهان گذري هين بلڪه ابتڪ بهي سرشته درس
 و تدريس کا جاري هي چنانچه سواي شهر کي طلبه اطراف و اکناف سي

وزیر الممالک شجاع الدولہ بہادر کی عہد دولت میں جوہری محل کی
متصل باقر خان فی ایک امام باڑا بنایا اور دونوں جہان میں فائدہ اٹھایا خان
مرحوم مغل ولایت زا عمدہ روزگار تھا کئی سی سوار مغل و غیرہ اُسکی رسالی
میں تھی اب آغا فتح علی خلف اصدق اُسکا قید حیات میں ہی لیکن
محض بیکار و تکالیف میں گرفتار پر مکان مسطور پر قابض ہی ایک گاؤں
بھی اُس مبارک بنیاد کی اخراجات کی لپی آصف الدولہ بہادر فی دیا تھا
لیکن دو برس کی بعد اہل کاروں فی کسی حیلی سی ضبط کر لیا غرض یہ
جستہ بنا فی آوارق محل قبولیت و مقام تعزیت ہی مجلس میں یہاں کی
شاہدہ ریا کا نہیں سوای گریہ و زاری اہل مجلس کو کام دوسرا نہیں (بیت)
غلط ہی خلق کی کثرت کہیں نہیں ہوتی “ ولی بکا کی یہ شدت کہیں
نہیں ہوتی “ خوشا حال اُسکی بنانی والی کا کہ دنیا میں نام کیا اور عقلمندی
میں ثواب لیا قبر بھی اُس مرحوم کی اُسی میں ہی بلکہ اکثر مؤمنین اغنیاء
و مساکین اُسکی مکانات و صحن میں آسودہ ہیں (بیت) الہی قبر میں ہر
ایک سوئی چین کی ساتھ “ بروز حشر ہو محشور پھر حسین کی ساتھ “ اور
سال اُسکی بھی تعمیر کا از روی تاریخ نظم و نشر دیکھنی میں نہیں آیا مگر
بعضی اکابر و آغا فتح علی کی زبانی معلوم ہوا کہ اُسکی بنیاد کو اکتالیس یا

لِي بِنَا كِيا تَهَا جُنَائِحَہ اُسْکِي حِينِ حَيَاتِ مِينِ اِيکْ آدِ قَبْرِ بِيہِي وَہَانِ بِنِ
 جُکِي تَہِي بَعْدِ اُسْکِي مِرْزَا عَلِي مِرْزَا اَبُو طَالِبِ کِي باپِ نِي تَہُوڑِي سِي زَمِينِ
 اُسْ مَرْحُومِ سِي اِمَامِ باڑِي کِي واسطِي مانگِي اُسْ بَزُرْگِ وارِ نِي سَعَادَتِ
 دَارِينِ جانکرِ نَذَرِ کِي بَلْکَہِ جِسْ مَکَانِ مِينِ وَہِ قَبْرِ هِي مَجاورِي بِيہِي وَہَانْکِي
 اُسْ کُو دِي کِيونکہ وَہِ بِيچارَہِ مَرْدِ غَرِيبِ وَگُمِ نامِ تَہَا پَرِ جَبِ تَلْکِ جِيتا رَہَا
 مَکَانِ مَذکورِ اُسْکِي قَبْضِي مِينِ رَہَا اَوَرِ دالانِ اِمَامِ باڑِي کا بَنايَا هُوا اُسْکِي هِي
 بَعْدِ اُسْکِي وفاتِ کِي مِرْزَا اَبُو طَالِبِ خانِ سَيُوتِ هُوا اُسْني نامِ وَ نِشانِ روزگارِ
 مِينِ پيدا کِيا اِسْ واسطِي اِمَامِ باڑا اُسِي کِي نامِ سِي مشهورِ هُوا تِينِ گاونِ
 بِيہِي اُسْکِي اخراجاتِ کِي لِي نَوَابِ شجاعِ آلدولہِ بہادرِ مَرْحُومِ کِي عہدِ
 حُکومتِ سِي مَعِينِ هُوِي تَہِي لِيکِنِ نَوَابِ آصفِ آلدولہِ کِي دُورِ مِينِ نَصْفِي
 هُو گِي تَہِي بِالْفِعْلِ نَوَابِ يَمِينِ آلدولہِ سَعادتِ عَلِي خانِ بہادرِ دامِ اِقْبالِہِ
 کِي وَقتِ مِينِ وَہِ بِيہِي ضَبْطِ هُوِي پَرِ مِرْزَا مَہدي عَلِي خانِ بہادرِ دامِ ثروتِہِ
 سالِ بسالِ وَہَانْکِي اخراجاتِ کِي لِي قَدْرِي قَليلِ اِني طرفِ سِي گذرانتي
 هِينِ نِي اَلْحَقِيقَتِ يَہِ بِيہِي وَزيرِ هِي کِي سِرْکارِ سِي مِلتا هِي کِيونکہ خانِ
 مَوْصُوفِ بِيہِي اُسْ سِرْکارِ کا اِيکْ مُلازِمِ مُقَرَّبِ هِي حَقِ تَعَالِي تَوْفيقاتِ کُو اُسْکِي
 زِيادَہِ کَرِي اَوَرِ نَوَابِ وَزيرِ کِي دَربارِ مِينِ بَعزَتِ وَ آبرُو رکھي بَعْدِ اُسْکِي نَوَابِ

بنايا “ اور جتني باغ تهي اُنکي رونق کو دونا کر دِکھایا “ خصوصاً وزیر باغ
 اور موسلي باغ مين ايسي عمارت انگريزي دلچسپ بناي که بهار وهان سي
 کبھو نهين جاتي اور خزان هرگز آتي نهين پاتي (بيت) طلسمات کا سا هي
 اُس مين سمان “ کوي جاکي وهان پھير جاوي کهان “ في الواقع هر ايک
 عمارت قابل تعريف و لائق توصيف هي ليکن بهترين عمارت بناي مکان علم
 مجازي حضرت عباس عليه السلام هي که قواب رفيع آلمان في خلوص
 عقيدت سي سن باره سي ستره مين از سر نو کس خوبي سي اُس کو
 بناويا “ اور هزارها رُپيه اُسکي تعمير مين اُتھايا “ تاريخ اُسکي بنا کي مرزا
 قتيل شاعر کي اس مصرعي سي نکلتي هي (مصرعه) اين گنبد جديد بناي
 سعادتست الهي اُسکي بناي والي کي بنياد دولت کو مستحکم رکھيو “ اور
 توفيقات نيک کو اُس کي زياده کيجو “ پچھم طرف پايں اُسکي لب دريا
 مرزا ابو طالب خان کا امام باڑا هي بنا اُسکي تمام شهر کي امام باڑون سي
 مقدم هي چنانچہ اُسکي بنياد کو ساٹھ برس تخميناً گذري رياست اُس وقت
 نواب صفدر جنگ بهادر مرحوم کي تهي ليکن مکان مذکور کي مالک پہلي
 کلب علي خان مرحوم تهي خان مغفور نواب سرفراز الدوله حسن رضا خان
 مرحوم کا نانا تھا غرض اُس بزرگ في اُس مکان کو اپني اقربا کي مدفن کي

جاگه عمارتين نئي نئي وضع ڪي خوش قطع و دلچسپ بناوين چٽاڇه
 سنگي باره دري اور باولي والا مڪان انهن مين سي هي سواي انڪي بهي بهت
 سي مڪانات و باغات بناي ڪه هر ايڪ اپني وضع مين بي نظير اور نقش و
 نگارو صفائي مين به از صفحه تصوير هي خصوصاً دولٽخانه ڪه اشرف المڪانات
 هي اس واسطي اس جنت مڪان ڪي اڪثر آرامگاه وهي تنها تاريخ اسڪي بنا ڪي
 دولٽخانه عالي مؤلف ڪي نتايج طبع سي هي ليڪن خير العمارات امام باڙا
 هي واقعي ڪه ايسا استوار و پايدار ڪوي مڪان نهنين “ اور ڪسي عمارت مين
 اس شان ڪا دالن نهنين “ (بيت) حضيض اسڪي اوج فلڪ سي بلند “ نه
 پهتجي جهان وهم ڪي بهي ڪمند “ مسجد بهي وهان ڪي تمام شهر مين
 نمودار “ عمارت اسڪي نهايت استوار “ هر ايڪ برج اسڪا وسعت مين
 مسجد جامعي ڪي برابر اور رفعت مين برج فلڪ سي همسر (بيت) ملايڪ
 زمين پر هون ساکن اگر “ عبادت ڪرين بس ونهنين بيٺڪر “ اب نواب آصف
 الدوله بهادر مغفور ڪي بعد نواب يمين الدوله ناظم الملڪ سعادت
 عليخان بهادر وزير ابن وزير في جو مسند حڪومت پر اجلاس فرمايا “ اور
 افضال الهي سي ملڪ موروثي اپنا پايا “ علي هذا القياس متوجه تعمير ۾
 هوا چٽاڇه ڪيا ڪيا مڪان عاليشان دلکشا بلڪه ايڪ رمنا بهي نهايت پر فضا

محلہ کھتی تھی شاید یہ پنج منزلہ تھا اس سبب نام اسکا پچ محلہ ہوا قصہ
 مختصر جب نواب برہان الملک سعادت خان مرحوم قبائل سمیت اس
 شہر میں رونق افزا ہوئی اس مکان کو پانسورپی کرائی کو لیا چنانچہ کرائی
 نامہ اسکا نواب مرحوم کی مہر سی آج تلک انکی اولاد کی پاس موجود
 ہے لیکن کرایہ چند روز ہی دیکر موقوف کر دیا تھا اور اُسکی بدلی کوئی
 گاؤں یا جاگیر بھی مرحمت نہ کی غرض نواب وزیر الممالک صفدر جنگ
 ابو المنصور خان بہادر مرحوم کی عہد حکومت تلک بنا اُسکی جون کی تون
 رہی جس وقت نواب وزیر اعظم شجاع الدولہ بہادر مغفور مسند ریاست پر
 بیٹھی تب مکانات اور شیخ زادوں کی بھی لیکر اس مکان کی شامل کی
 بلکہ ایک آد بارہ دری اور بنوائی پھر عوض اُسکی اور وی مکان جو آب
 لیٹی تھی دوگوان گاؤں مالکون کی جاگیر کر دیا چند روز کی بعد وہ بھی
 سرکار میں ضبط ہو گیا لیکن یہ شیخ زادی نواب ابو المکارم خان مرحوم سی
 نسبت قرابت کی نہ کہتی تھی مگر ہموطنی کی پھر نواب وزیر ابن الوزیر آصف
 الدولہ بہادر خلد مکان کا جب دور آیا انھوں نے مکان مسطور نیی سر سی
 تعمیر کیا نقشہ ہی اور کر دیا بلکہ بہت سی حویلیاں لوگوں کی جو اُسکی
 اطراف و جوانب میں تھیں شیخا دروازی سمیت وی گروا دیں اور انکی

ھين “اور ماش کي ڪهچڙي اور ڪڙوا تيل چڙهائي ھين” گستاخي معاف
 سواي ڪشف و ڪرامت کي ٻي دنون بزرگ خوش ذائقه بهي ڪٽئي ته ڪه
 بعد رحلت ايسي نذر قبول کي “اور ڪسي چيز پر روح کو اُنکي رغبت
 هُئي” شهر کي اُتر رخ گومتِي کي ڪناري شاه پير محمد کا ٿيلا هي آگي
 وهي دارُ العلم تها اڪثر طلبه و علما وهان پڙهتي پڙهائي ته ڪه “اور اپني اوقات
 بخوبي بسر ليکائي ته ڪه” سنا هي ڪه شيخ موصوف کو سواي نعمت فقر کي
 دولت علم بهي ته ڪه في الجملة مرد صاحب کمال و صاحب حال و قال تها
 زندگي مين وه مقام اُسکا مسکن تها “بعد مرگ مدفن هوا” اور مسجد بهي
 اُس پر ايک نهايت عاليشان و وسيع “گنبد اُسکي بمرتبہ بلند و رفيع” اور
 مينار اُسکي گومتِي کي اُس پارچمهم اور اُتر کي آني والون کو تين چار کوس
 سي نظر آتي هين “کس اُنکي ابتلک ويسی هي جگمگاتي هين” اور
 قريب اس سي پُورب طرف پنج محله هي کثرت استعمال سي نون اُسکا
 حذف هو گيا هي اور جيم چي سي عوض چنانچه اڪثر لوگ پچ محله ڪهتي
 هين مکان مذکور نواب ابو المڪارم خان کا ديوانخانه تها اور ٻه بزرگ لکهنو
 کي شيخون سي هي مگر امير تها اور وجه تسميه مکان مسطور کي ٻه هي
 ڪه زمانه سابق مين يهان دو منزلي مکان کو دو محله اور سه منزلي کو سه

پڙهتي هين اور وقت پرستش جس قدر چانول و غيره اس مين ڏالتي هين پهر
 انکا نشان بهي نهين پاتي * لکهنو بهت بڙا شهر هي گومتی کي کناري آگي
 بهي دار الحکومت تها لیکن نواب شجاع الدوله بهادر مرحوم ني بعد بکسر کي
 هنگامي کي يه رتبہ فیض آباد کو بخشا چنانچه انتقال بهي اس سراي فاني
 سي ونهين کيا پهر نواب آصف الدوله بهادر مغفور ني اسکو نوازا اور دار
 الامارت تهرایا آبادي اسکي بهت بڙه گئي کهين سي کهين جا پهتجي اب
 بهي بدستور حاکم نشين بهي هي لیکن بهتر پر جو بستا هي اس سي نهايت
 نشیب و فراز اس مين واقع هي (بيت) کسيکا گهر هي ٿيلي پر هوا
 مين “کسيکا جهونپڙا تحت آلا مين” غرض شهر مذکور مين کتني
 سرائين اور بهت سي کثري ٿولي محلي آباد هين جس محلي مين شيخ مينا
 کي درگاه هي اسي مينانگري کهتي هين اکثر لوگ پنچشني کو فاتحه کي
 واسطي وهان جاتي هين “اور بيستر عوام الناس فاتحه انکي گڙ پيني پر دلاي
 هين” اور بيرون شهر شرق کي طرف لکھ پيڙي کي قريب مزار پير جليل کا
 هي لیکن اسکي قبر کا چبوترا قد آدم بلند و بي زينه هي اس باعث کوئي
 متصل اسکي جا نهين سکتا نور هي سي فاتحه پڙه جاتا هي هر جمعي کو
 وهان اکثر تماش بين جوان براي سير اور اکثر جهلا پواج عقيددي سي جاتي

پيدا نه هوني تو رجالون کي يهان مال خوب جمع هوتا بلڪه ايڪ ايڪ ڪٽڙا
 قصاي لکهي بن جاتا * ديون مڌت سي پيسون کي ٿڪ سال هي اتر کي
 پهاريون سي سونا روبا تانبا سرب سهاگه شهد چوڪ ڪچور سونڻ پيپل ڪهريا
 لون هينگ موم پشمينه ٿانگن باز جره شاهين و غيره سواي اسڪي اور بهت
 سي چيزين پهاري کي پهاري لائي هيڻ اور بيچ جاتي هيڻ بسبب اسڪي لوگون
 ڪا هجوم اور خريد فروخت کي دھوم وهان رھتي هي * نمڪهار مصرڪ ايڪ
 نامي جاگه اور هندوون کي پڙي پرستشگاه هي گومتی اسڪي قلعي کي تلي جا
 نڪلي هي نزديڪ اسڪي ايڪ حوض هي برهماورت ڪنڌه اسڪو ڪهتي هيڻ پاني
 اسڪا اندر هي اندر جوش ڪهاتا هي ساڻه اسڪي ايسا چکر مارتا هي ڪه آدمي
 کي قدرت نهين جو اس مين غوطه لگا سڪي بلڪه جو چيز ڪه اس مين گري
 في الفور نڪل پڙي هندو کي نزديڪ پڙا تيرتھ هي مشهور هي ڪه جتني ڪتابين
 هندي ڪه گردش فلڪي سي اور انقلاب دھري سي گم هوين تهين تپشيون اور
 منيون في اپني طبيعت کي جودت اور ذهن کي حدت سي اسڪي ڪناري پر
 نبي سر سي انهن درت ڪيا اور لکها هر ايڪ انکي مطالب سي فيضاب هوا
 قريب اسي ايڪ سر چشمه جهوڙي سي ندي ڪا هي ڪه وه گومتی مين ملي
 هي ايڪ گر ڪا چوڙا چار انگل گهرا جب اسڪي ڪناري برهمڻ بيد خوان منتر

اسبابِ عروسي سميت اُسکي مزار پر پهچتا هي اپني زعم مين هر برس اُسکا
 بياہ کرتا هي برسون سي په رسم اُسکي خاندان مين چلي آئي هي بلڪه ابتلڪ
 بهي جاري هي غرض رجالي کي اعتقاد سي بهي خدا پناه مين رکهي که رسواي
 سي خالي نهين اور گرد و پيش اُسکي گنبد کي جتني درخت هين ان مين
 رسيان ڌال کر کوي اپنا هاتھ باندھتا هي کوي پاڻ کوي گلا القصه انواع و
 اقسام کي سانگ لائي هين اور اپني گمان مين اُسي سبب سي مرادين پاتي
 هين سواي اُسکي کوي رجالا اُس بزرگ کو گاجنا دولهہ ڪهتا هي اور کوي
 رجالي سالار جهنلا وجه اُسکي په هي که جو رنڌي اُسکي گنبد مين جاتي
 هي “بد حال هوکر آئي هي” پر وه مردار په سمجهتي هي که صاحب
 قبر ني مجھي چوس ليا “اور په احوال کر ديا” تف اُسکي سمجه پر اور لغت
 اُسکي بوجه پر حقيقت اُسکي په هي که گنبد اُسکا نهايت جهوٽا اور دروازه
 نيٺ تنگ سپر لوگون کي آمد و شد متصل علاوہ اُسکي ايڪ بهت بڑا چراغ
 قبر کي سرهاني چلتا هي بسبب اُسکي ايسي گرمي اُس مين هوني هي که
 آدمي کي چربي پگھلتي هي مرد بهي وهان سي جو نڪلتا هي سو عرفناڪت پر
 عورت تو نازڪ هوني هي وه پسيني مين ڏوبي هوني حالت غش مين نڪلتي
 هي سواي اُسکي کذب و افترا پر په سچ هي که اگر مدار سالار دنيا مين

وہاں بنا ئي آخر اُسکي آبادي بمرتبہ گھٹي اور اُسکي بستي نہایت بڑھي
چنانچہ بالفلعل کہ سن بارہ سي بیس ہجری ہین اور نواب سعادت علی خان
بہادر وزیر ابن وزیر دام اقبالہ کی حکومت کا آٹھواں سال دونوں شہر اسی
نہج پر ہین * بہرائچ ایک قدیم شہر ہی سرجو کی کناری نہایت وسعت و
کیفیت کی ساتھ انبرایان اُسکی گرد و نواح میں اکثر “ اور پھلوریاں جا بجا
بیشتر “ تربت رجب سالار کی اور درگاہ سالار مسعود غازی کی وہین ہی سستی
ہین کہ رجب سالار تغلق شاہ کا بھائی تھا اور سالار مسعود غازی کی احوال
میں اختلاف ہی بعضی کہتی ہین قوم کا سید لیکن سلطان محمود غزنوی سی
بہی قرابت قریب رکھتا تھا اور بعضوں کا قول یہہ ہی کہ ایک پٹھان تھا
لیکن شہید ہوا غرض درگاہ اُسکی ایک عالم کی زیارت گاہ ہی سال میں
ایک بار دور دور سی لوگ میدنی کی ہمراہ چلتی ہین کتنی سیاح اکثر
بیماری پر نیچے قوم لال لال نیزون سمیت ہزاروں دفالی گاتی بجاتی ساتھ
لیکر اپنی اپنی بستیوں سی نکلتی ہین غرض جیٹھ کا پہلا اتوار اُسکی عرس
کا دن ہی بی اسی دو تین دن پہلی وہاں آ پہنچتی ہین اور اعتقاد انکا یہہ
ہی کہ وہی اُسکی بیاہ کا روز تھا چنانچہ شہانی کپڑی اُسکی گلی میں تھی
کہ مارا گیا اسی جہت سی ایک تیلی ردولی کا ساکن پلنگ پیڑھا کچھ

بُرْهَانُ الْمَلِكِ سَعَادَتِ خان بهادر کي نصیب ہوئی بعد اُنکي وفات کي قائم
 مقام اُنکا داماد نواب وزیر الممالک ابو المنصور خان صفدر جنگ بهادر
 مغفور ہوا کیونکہ فرزند نرینہ اُنکي ننھا اُسی بزرگ ني بنياد اُسکي ڈالي لیکن
 بطور جہاڻي کي جب نواب شجاع الدولہ بهادر ابن صفدر جنگ وزیر
 الممالک کو ریاست پہنچي بعد ہنگامہ بکسر کي مزاج اُسکا اُسکي آبادي پر
 آیا چنانچہ کتنی محل اور باغ پاکیزہ و خوش عمارت اُسني لب دریا بني
 اور ایک تریولیا بھی نہایت بلند و دلکشا متصل قلعہ اور چوک کي قریب
 بنایا بلکہ اپنی بود و باش بھی وہیں مقرر کي بسبب اُسکي اکثر سرداروں
 صاحبوں ني عمارتیں تعمیر کیں یہاں تلک کہ ہر ایک چھوٹی بڑي ني
 موافق اپنی مقدور کي حویلي بني چنانچہ ایک معمورہ معقول ہو گیا پر
 کھپرلین اکثر تھیں اور مٹختہ عمارتیں کم لیکن معمار قدرت کي ارادي میں
 جو اُسکي آبادي کو پایداری نہ تھی بلکہ خرابي منظور تھی کہ سن گیارہ سی
 اٹھاسی میں بعد نواب حافظ المَلک حافظ رحمت خان کي شکست کي
 نواب موصوف کا واقعہ ہوا اور مقبرہ اُسکا وہیں بنا پھر مسند حکومت پر اُسکا
 خلف الصّدق نواب آصف الدولہ بهادر وزیر ابن وزیر بیٹھا اُسني دار الحکومت
 لکھنو کو بدستور سابق مقرر کیا بلکہ عمارات و باغات بھی خوش قطع و دلچسب

سو آڻهتاليس کوس کي طول اور چهتيس کوس کي عرض مين بستا تها اور اسکي
 سواد مين جو کوئي خاک چھانئا سونا پاتا ايک کوس پري اسکي گهاگهره سرجو
 سي ملڪر قلعي کي تلي جا نڪلي هي اور قريب شهر کي دو بڙي بڙي
 قبرين هين طول انکا سات سات آڻه آڻه گز سي کم نهين عوام انکو حضرت
 شيت و ايوب سي منسوب ڪري هين بناير اسکي پنجشيني کو اکثر لوگ
 وهان جاڪر فاتحه پڙهتي هين اور بعضون کي نزديڪ رتن پور مين کبير جلاهي
 کي قبر هي شخص مذکور سلطان سکندر لودي کي وقت مين تها بنارس کي بچ
 مدتون جب تب ڪرنا رها فقرا کي نزديڪ بڙا موحد و صاحب کمال تها
 چنانچه اسکي طبع زاد اکثر دوهري اهل مذاق کي ورد زبان هين سچ هي ڪه
 محبت و معرفت ان سي ٿيکي پڙي هي * فيض آباد عرف بنگله تين کوس
 اوڏه سي مغرب رخ ايک آبادي نو احداث هي نهايت پر فضا و دلگشا سر
 زمين وهانکي نيت خوب و مرطوب مهندي بهي وهانکي قيامت رنگين
 چاهي انگور بيدانه شهوت اور سواي انکي اور بهي بعضي ميوي ترڪاريان
 پھول خوشبو رنگين افراط سي هوتي هين خصوصاً چنپا و لاله پر خربوزه حد برا
 اور پھيڪا صورت حرام وجه اسکي بنياد کي يه هي جب صوبه داري ملڪ
 مذکور کي انتقال پاڪر محمد شاه فردوس آرام گاه کي سلطنت مين نواب

درياو اس صوبي مين گنگا جمن سرجو طول اسکا مڃھولي ۽ جونپور سي ليڪر دکن
 کي پهڙ تلڪ ايڪ سو ساڻھ کوس اور عرض چونسا جو گنگا کا ايڪ گذر
 هي اس سي گهاٽم پور تلڪ ايڪ سو تيس کوس صوبه بهار اسڪي پورب
 طرف اڪبر آباد پڇھ رخ صوبه آوده اتر طرف باندھو گڏھ دکن طرف الھ
 آباد غازي پور بنارس جونپور چنار کالياجر کڙا مانڪ پور و غيرہ سولہ
 سرڪارين متعلقات انکي دو سو سينتاليس محال اور آمدني سينتيس کڙوڙ
 ساڻھ لاکھ ايڪ سڻھ هزار دام

صوبه آوده “هندي ڪتابون مين نام اسکا اجودھيا راجا رام چندر کا مولد و
 تخت گاه هي اسي جهت سي هندو اسکو پڙا معبد جانشي هين ڪيونڪه راجا
 مذکور عالي نژاد و نيڪ نهاد تها ساڻھ اسڪي دولت ظاهري و باطني سي بهي
 مالا مال عجائب غرائب افعال اسي وقوع مين آهي” اور بهت سي امور نادر
 اُسي دکھائي چنانچھ شور دريا پر پل باندھا اور انگنت بندر رڃھھ کي فوج
 ليڪر لنکا پر چڙھ ڪيا پھر راون کو مار کر اپني جو رو کو قيد سي چھڙا ليا اسي
 قبيل سي اڪثر حالات اسڪي رامائن مين لکھي هين غرض شھر مذکور ايڪ

Perhaps incorrectly written, and intended for Manjawly.

جاودان “سراڻن ٻي ڪي تهن ليڪن بالفعل ايڪ پختہ پل کي جنوب رخ
 اور دو کچي شمال رو ليڪن ڪچھ ايڪ فاصلي سي پھيل و عطر ٻي وھان کا
 نہایت خوشبو هوتا هي چنانچہ اکثر بلاد بطريق تحائف بھجواتي هين “اور
 خوشبوي ساز سوداگر ٻي اطراف مين اسکو ليجاتي هين “غرض سگند راي
 اور بيلي کا تيل تو وھان کا سا ڪمين نہوتا گلاب خجالت سي اسڪي آگي پائي
 هو جائي “اور سھاگ کي عطر کي باس ٻي اسڪي هوتي خوش نہ
 آئي “(بيت) بدن مين ملي اسکو جو مرد وزن “تو بن جائي هر ايڪ
 دولہہ دلہن “چنبيلي کا ٻي علي هذا القياس ليڪن مشهور يون هي کہ
 چنبيلي باڙہ کي اور بيلا جونپور کا پر اپني تين اس مين شڪ هي اور وھان
 کي نجبا اکثر ذهين و صاحب علم و دانشمند هوتي هين قصہ کوتاه صوبہ
 مذکور کي آب و هوا نہایت خوب هي ميوي ٻي اقسام کي هوتي هين
 خصوصاً انگور نہایت رسيل خوش مزہ ميٹھا بڑا بکثرت بکٽا هي اور پھول ٻي
 هر فصل مين ديکھني سونگھني کي بہتائيت کي ساٿہ خصوصاً موگرا بہت بڑا و
 گندہ نپت خوشبو هوتا هي ايڪ پھول اسکا حڪم عطردان کا رکھتا هي زراعت
 ٻي بہتائيت کي ساٿہ هوتي هي ليڪن موٹھ ڪم ياب جوآر باجرا ڪمتر اور ڪپڙي
 کي اقسام سي جھونا اور مھر گل خوب بنا جاتا هي اور درياون مين بڙي

ھي ” خصوصاً جامع مسجد وھانگي اپني ساخت مين لا ثاني ھي في الواقع
 پختہ کارون کي ايک نشاني ھي عمارت اُسکي تمام و کمال سنگين ” اينٽ
 گاري کا اس مين نام بهي نہيں ” (بيت) بناوي کوي ايسي اب کيا
 مجال ” مرمت بهي ھي اُسکي امر محال ” تعمير اُسکي سلطان شرق ابراهيم
 شرقي في آٹھ سو باون ھجري مين کي ” اور دارين مين نيک نامي
 لي ” تاريخ اُسکي بنا کي مسجد جامع الشرق ھي پل بهي وھان کا اقليم ھند
 مين بي مانند ھي ديرپاي اور پختگي اُسکي اظہر من الشمس سيکڑون برس
 گذري ھين ليکن معلوم يہ ہوتا ھي کہ آج بنا اور ابھي تيار ھو چکا ھي بنا
 اُسکي منعم خان خانانان في اکبر بادشاہ کي سلطنت مين کي اور مہتمم
 اسکا نواب مرحوم کا فہم غلام تھا قطعہ اُسکي تاريخ کا يہ ھي (قطعہ)
 خانانان خان منعم اقتدار ” بستہ اين پلرا بتوفيق کریم ” نام او منعم از
 آن آمد کہ ھست ” بر خلائق ھم رحيم و ھم کریم ” رہ بتاربخش بري گر
 افگني ” لفظ بدرا از صراط المستقيم ” حق تو يہ ھي کہ يہ تاريخ اُسکي
 بجا ھوي کہني والي کي طبيعت خوب لگي خدا اُسکي تعمير کندي
 کو مستغرق دريائي مغفرت کري ” اور پل صراط پر اُسکي دستگيري و
 معاونت ” (بيت) ھي دريا دلي کا يہ اُسکي نشان ” خدا اسکو قائم رکھي

نپت نرم اور ميثا هوتا هي ليكن وه سائنه ان خويون كي كلاني اور گندگي
 رڳهتا هي * گرهه كاليجر سنگين قلعه هي نپت بي لگاوا ايڪ بڙي اونچي
 بهار پر اسڪي ابتدا سي ڪوي واقف نهين چشي اڪثر اس مين جوش ڪهائي
 هين اور تالاب بڙي بڙي آب زال سي بهري هوي ايڪ لطف دڪهائي هين
 بهيرون كا بتخانه وهين هي اور قريب اسڪي گهني درختون كا ايڪ جنگل هي
 بيشتر اس مين آبئوس كي پير لوگ وهان سي هاتهي بهي پڪڙائي هين اور
 پاس اسڪي لوهي كي ڪهان بلڪه بعضي بعضي جاگهه سي الماس كي ٿلپين بهي
 هاتنه لگتين هين اور باشندي وهان كي سوئمنده هوي هين * جون پور بڙا
 شهر هي گومتني اسڪي اندر هوڪر نڪلي هي فيروز شاه في اسڪو اپني عهد سلطنت
 مين فخر الدين محمد جونان كه اسڪا چچا تها اسيڪي نام پر آباد ڪيا از بسڪه
 شهر مذڪور شور پشتون اور مٿه مردون مين واقع هوا تها فوجدار اسڪي بيشتر
 خونريزي و سفاڪي مين مشغول رهي تهي ليڪن آب و هوا اسڪي باشندون
 مسافرون كي مزاج سي موافق “ فضا اسڪي فضا گلزار سي فايق “ حويليان
 اس مين اڪثر پخته و سنگين “ چهپر كي مڪان ڪهين ڪهين “ اگرچه آبادي
 اسڪي اب ويسی نهين ليڪن غنيمت هي ڪيونڪه باغ خزان رسيد كا ايڪ آده
 چمن ديد كي قابل ره جاتا هي “ اور اهل نظر كو ايڪ لطف دڪهاتا

لیکن نشیب و فراز اُس مین بہت ہی گنگا اُسکی نیچی بہتی ہی قریب
 اُسکی ایک قوم عالمگیر کی وقت تلک سرو پا برہنہ جنگل مین رہتی تھی
 اور تیر اندازی و شمشیر زنی مین اپنی اوقات بسر کرتی تھی یعنی کتنی صحرا
 نشین یا پہاڑی اُس وقت مین رہتی تھی لیکن بالفعل بلکہ سالہای سال
 سی اُسکی متصل ایک معمورہ ہی کہ اکثر ہندو مسلمان اُس مین بستی ہین
 اشیا و اسباب بھی ضروری موافق اُنکی بہم پہنچتی ہین اور قلعہ مذکور ہر
 چند آگی بھی با رونق تھا پر جب سی صاحبان عالیشان کی قبضی مین آیا
 ہی خوب تیار سجا سجا رہتا ہی قریب اُسکی قاسم سلیمانی کی درگاہ ہی
 نہایت خوش عمارت پر کیفیت مکانات اُس مین سنگین و پختہ و متعدد
 اپنی وضع کی اسلوب دار و با قرینہ “ خصوصاً وسط مین ایک مسجد بہت
 بڑی پاکیزہ و استوار جیسی انگوٹھی مین نگینہ “ جنگلا بھی اُسکی اطراف کا
 نہایت سہاونا ہرا “ مرض خفقان کی دوا (بیت) ہی شاداب و سرسبز وہان
 کی زمین “ وہ جنگل ہی گلشن سی بہتر کہین “ اور چنار سی دگھن طرف
 آٹھ کوس کی فاصلی سی گنگا کی کناری پر مرزا پور ہی ہرچند کہ بستی
 اُسکی چھوٹی ہی لیکن خوب آباد و خوش سواد عمارتین پکی بیشتر “ لیکن
 اکثر بیمار یوں کی گھر “ سفید پونڈا و ہانکا مشہور ہی اگرچہ ہکلی کا بھی گنا

کچھ خیرات بھی کرتا (بیت) جو بقا اپنی فنا سمجھی وی دکھ بھرتی نہیں " مر
 مٹی جو زندگی میں وی کہو مرنی نہیں " فی الواقع شیخ ممدوح علوم
 ظاہری و باطنی سی مالا مال تھا " شعر و سخن تو اسکا ایک ادنیٰ کمال
 تھا " استاد متاخرین و افتخار متقدمین اسی کیونکر نکہتی کہ نظم و نثر اسکی
 ظہوری و نظیری کی برابر اور قصیدی قصائد عرفی سی بالاتر ہندوستان کی
 بیچ محمد شاہ کی وقت میں آیا کی برس دلی میں رہا پھر بنارس میں آکر
 گوشہ نشین ہوا " کسی امیر فقیر کی گھر نگیا " اور کسی سی کچھ نلیا " بلکہ
 محتاجوں کو موافق مقدور آپ ہی دیا کیا " گذران اسکی ہمیشہ اجلی
 رہی " احتیاج کسی امر کی بجز خالق کی نہوی " کہتی ہیں کہ تسخیر
 آفتاب اسکی عمل میں تھی یا کوئی اور دعوت غرض کشف و کرامت سی وہ
 روشن ضمیر خالی تھا مشہور ہی کہ نواب شجاع الدولہ بہادر کو لڑائی کا
 مشورہ مطلق ندیا بلکہ منع کیا کہ بگاڑ صاحبان انگریز سی حد برا ہی " اور
 مصالحہ سر تا پا پہلا " زہار آی فرزند سواي صلح کی کچھ نکرنا " اور لڑائی پر
 دھیان ہرگز نہ دھرنا " کیونکہ صلح میں حصول مراد ہی " اور جنگ میں
 فساد " غرض بعد ہنگامہ بکسر وہ عارف بی ریا سن گیارہ سی اسی ہجری میں
 بہشت نصیب ہوا * چنار گڑھ ایک قلعہ ہی پہاڑ پر سنگین و بلند و محفوظ

ھين اور اڪثر آزاد منس عبادتي تپشي اس لحاظ پر ڪه مرنا وهان ڪا باعث نجات
 ڪا هي اپني وطن چھوڙ دنيا سي هاته اٿا رام سي لو لگا وهين رهنا اختيار ڪري
 ھين بهتيري بوڙهي ڪهنه سال ڪٿي آاري جيني سي مايوس هوڪر وهان آئي
 ھين “ اور دنيا سي اٿه جاتي ھين “ از بسڪه لوگون ڪي آهر جاهر هر ايڪ سمت
 سي رھتي هي اسي سبب اسڪي آبادي ڪم نهين هوي ڪپڙا بهي وهان ريشمي
 و زرباني خوب بنا جاتا هي خصوصاً تاش بادله نهايت جڳمگا اور مشروع و
 ڪمخواب تو واقعي بعد گجرات ڪي بنارس ڪي برابر هند مين ڪهين نهين
 بنتا اگرچه مشروع موو مين اب تيار هوني لگا هي ليڪن ٻيه قماش و ملايمت
 ڪهان پاڇي اور نجيب ڪا سا فرق هي پڇهم طرف شهر ڪي اورنگ آباد ڪي
 سراي پخته اور نهايت ڪشاده داهني اسڪي بچاس موجن ڪا تالاب اس سي
 ڪچه آگي بڙه ڪر بستي سي باهر قدم شريف اڪثر وضع و شريف پنجشنبه
 ڪي دن وهان جاتي ھين شام تلڪ صحبت اور لوگون ڪي ڪثرت رھتي هي هر
 چند ڪه نشست گاهين اور خانقاهين ڪم ھين ليڪن لطف سي خالي نهين
 علاوه اسڪي اس قطعي مين اڪثر مسلمانن ڪي قبرين ھين چنانچه مزار
 شيخ محمد علي حزين گيلاني ڪا بهي وهين هي اس مرحوم في اپني حين
 حيات مين اسي بنوايا تها بلڪه ڪبهو ڪبهو پنجشنبه ڪو وهان جاکر بيٺهتا اور

پرستش ڪر قصارا اُدھر آ نڪلا اُن مين ايڪ ڪهٽرائي چنبي رنگ نهايت چالاڪي
 و بيباڪي سي پيش قدمي ڪرتي ٿي اور ايڪ اندازو ناز سي پاڻ ڏهري ٿي سراپا
 اُسکا گويا سانچي مين ڏهلا ٿيا “ هر ايڪ عضو حسن و ادا سي بهرا ٿيا “ (بيت)
 هلال ابرو منهن چاند جڻه امول “ خوش اسلوب چهب پنڌليان گول
 گول “ مڪهڙي ڪي رنگت ڪي آگي ڪندن زرد “ بلڪه پڪهراج بهي گرد “ سونا
 تو ڪيا مال هي جو اُس ڪي روپ ڪي منهن چڙه سڪي غرض تماشا يون ڪا
 ڏيکڻي هي جي سنسنا گيا اور آنڪهون تلي اندهيرا آگيا مير مرحوم ڪي بهي
 دل پر دير تلڪ اُس ڪا صدمه رها ليڪن وه چمڪ و جهمڪڙا ڏکڻا ٿي هوي
 نجانين ڪڏهر گئي پهر نه پهر ٿي تا شام راه ڏيکڻي ندان سمجهي ڪه تجلي
 ڪو تڪرار نهين اب بيٺهنا بيڦايده هي هر ايڪ ني گهر ڪي راه لي غرض معموره
 مذڪور ڪيفيت سي خالي نهين ڏيد ڪي قابل هي ساڻه اسڪي علم هندي ڪا بهي
 گهر هي ڪيونڪه بڙي بڙي پنڌت اچي اچي برهمڻ بيد ڪي پڙهائي والي شاستر
 ڪي بهيدونڪي جاني والي اور جوتڪي نجوم ڪي گني هر فن ڪي بڪثرت اُس
 شهر مين رهتي هيڻ اسي واسطي برهمڻ برهمڻ زادي دور دور سي تحصيل ڪو
 آتي هيڻ اور مدتون پڙهتي پڙهائي هيڻ چنانچھ ايتلڪ بهي مدرسه هندي
 ڪا موجود هي صاحبان عالشان ني بهي اخراجات اسڪي بدستور جاري رکهي

ڪَرتي هين غرض شهرِ مذکور نهايت قديم هي عمارات اُسڪي سنگين و پختہ و
 بلند اکثر لب دريا ليکن حواليون مين انگنائي ندارد سواي اُسڪي اندر باهر
 بستي كي هزارون بُخاني انگنت شوالي سيڪڙون ڪنڌه اور ٿهاڪر يهان ڪا بيسير
 ناهن چنانچه اُسڪا بڙا مندر تها عالمگير في تڙواڪر وهان ايڪ مسجد بڙي عاليشان
 بناي شهر كي لوگ اُسڪو بيسير كي مسجد ڪهتي هين سواي اُسڪي اور بهي
 ڪي نامي بُخاني توڙي اور مسجدين اُنڪي جاگه بنا ڪين قصه کوتاه شهرِ مذکور
 اب بهي آباد هي ليکن ڪوچي اُسڪي نهايت تنگ و تاريخ و بد بو بلڪه
 بعضي گليون مين تو دھوپ ڪا بهي گذر نهين هوتا اسي باعث زمين وهان كي
 بيشتر سيلي رهني هي پر دريا ڪناري كي عمارتين سب كي سب دلچسپ
 قابل سير اور باغات بهي شهر كي ڇهم طرف نيت سهاوني لگوننهين ڪه انسان
 ڪا وهان جي ڪبهو اداس نهو “هر چند اُسڪي ڪوي پاس نهو” حسن بهي
 وهانڪا نهايت چمڪ تمڪ كي ساڻه اڪر فرشته بهي ديکهي تو ديوانا هو جاي
 پريزاد توڪس شمار و قطار مين چنانچه ايڪ دن ڪا ڏڪر هي ڪه راقم ساون
 مين ايڪ باغ بي درو ديوار كي ڀيچ سر راه ايڪ بلندي پر بيٺا تها اور مير
 چراغ علي مرحوم حيف تخلص بهي ميري ساڻه تهي دن اُس وقت دو پهر
 سي ڪچھ ڪم هوگا ڪه ايڪ جهنڊ ڪا جهنڊ پريون ڪا اُس باغ كي ديھري مين

ھين سوای اسڪي سرڪار والا مين بهي هر شخص کڇھ رڀي داخل ڪرڻا هي علاوه
 اسڪي ھنود از بسڪه وهان کي مرنِي ڪو بهتر سمجھڻي ھين اسي سبب زمانه
 سابق مين بعضي تو نجات آخرت کي لڀي ڪٽني اس اُميد پر ڪه ڪسي راجا
 راو کي يهان جنم ليون جيتي جي اپني تين آري سي چرواتي تهي شاهجهان
 صاحب قران ثاني کي وقت سي پھ عمل موقوف هوا ليکن قلعه شاه عالم
 بادشاه کي چواليس سن جلوسي مين صاحبان انگريزي توڙ ڪراس اسلوب کي
 سانھ بنايا ڪه اسڪا نقشه هي اور هو گيا سچ تو پھ هي ڪه آگي قابل رزم تها
 اب لائق رزم هوا ليکن پھ معموره آگي نهايت آباد تها چنانچه اس مين
 باره سرائن اور باره دائري تهي اب تلڪ بهي ڪيي موجون ھين لکن وه عالم
 ڪهان شرف آلمان بالميڪين اور دائره وهان کي باشندي خانه فقرا ڪو ڪهڻي ھين
 پراسڪي محوطي مين مڪانات متعدد هوتي ھين بلڪه بيشتري مسجد و خانقاه بهي
 اس مين ديکھي هي چنانچه شاه خوب الله ڪا دائره نهايت وسيع و ڪلان اور
 مشهور جهان تها ھي پس معلوم هوا ڪه علما و مشائخ بهي يهان مدت سي
 رھتي ھين * اور تيس ڪوس صوبه مذکور سي پري بنارس هي هندي ڪتابون
 مين نام اسڪا بارانسي بهي لکها هي اس لڀي ڪه پھ بستري درميان دريائي برنا
 اور اسي کي واقع هي ڪاشي بهي اسڪو ڪهڻي ھين اور مهاديو سي منسوب

صوبہ خوش سواد الہ آباد "ہندوی نام اُسکا پراگ ہی اکثر ہندو تریبینی
 بھی کہتی ہیں جلال الدین محمد اکبر نے گنگا جمنہ کی بیچ ایک قلعہ سنگین
 و محکم مکانات بھی اُس میں متعدد و دلچسپ و مستحکم بنا کر ایک شہر
 بھی خوش سواد وہاں بسایا نام اُسکا اللہ باش رکھا پھر شاہجہان نے مسمیٰ
 بالہ آباد کیا ان دونوں دریاؤں نے قلعے کی جانب شرقی کی متصل اتصال
 پایا ہے اور ایک سوتا بھی قلعے سے نکل کر ان میں آ ملا ہے بنابر اسکی نام
 اس مکان کا تریبینی ٹھہرا اور اس سوتے کو ہندو سرستی کہتی ہیں لیکن کتب
 ہندی میں یہ نہیں لکھا کہ سرستی یہاں سے نکلی ہے سوائے اسکی قلعے
 میں ایک درخت ہے اُسکو اکھی بڑ کہتی ہیں معنی اسکی پائدار اور ہندی
 کتابوں سے یہ بھی دریافت ہوتا ہے کہ قیام درخت مذکور کا قیامت تلک
 ہے چنانچہ نور الدین محمد جہانگیر نے اُس کو کٹوا کر ایک توالوہی کا
 بہت بھاری اُس مقام پر رکھوا دیا تھا چند روز کی بعد وہ درخت پھر پہکا
 اور اُس توالوہی کو توڑ کر باہر نکلا حاصل یہ ہے کہ ہندو اُسکو بڑا تیرتھ بلکہ
 پرستشگاہوں کا پادشاہ جانتے ہیں جب کہ سورج مکر کا ہوتا ہے یعنی جدی
 میں آتا ہے گروہ گروہ زن و مرد نزدیک دور سے آکر وہاں جمع ہوتے ہیں
 ایک مہینی تلک روز نہاتی ہیں اور اپنی ہوت کی موافق دان پُن کرتے

مذکور کُچھ بودا نتھا مگر عیاش و غافل اِسی سبب سی روپانند کیمیاگر کی
 هاتھ سی کُشته هوا قصہ مختصر شورشین اور شرارتین تو بی اورنگ زیب کی
 وقت سی کرتی تھی چنانچہ زور آور سنگ اکبر آباد و شاہجہان آباد کی قافلہ
 اکثر لوٹ لیجاتا تھا اور مسافروں بیچاروں کو اقسام کی ایذا ین پہنچاتا تھا سیسئی
 کی نواح میں ایک گڈھی بھی اُسی اپنی حفظ کی لی نہایت مستحکم بنا ئی
 تھی اُسکی اُرتلی سی فوج بادشاہی سی بھی کتنی دنوں لڑا چنانچہ اکبر آباد
 کی ناظم فی ہرچند اُسکی لینی کا قصد کیا پر کُچھ نہو سکا لا چار دست بردار
 هوا آخر شاہزادہ بیدار بخت فی آکر تین مہینی تک اُسکا محاصرہ کیا جب
 ذخیرہ نبر چکا تب زور آور سنگ شہزادی کی خدمت میں دست بستہ
 حاضر هوا بلکہ ہمراہ اُسکی دکن گیا اورنگ زیب بسکہ اُسکی هاتھ سی
 بتنگ تھا توپ کی منہ دھرکی اڑا دیا پھر جاٹوں فی اپنا رئیس راجا رام کو
 مقرر کیا قصہ کوتاہ بنیاد انکی عالم گیر کی وقت سی بندھی پھر جون جون
 سلطنت ضعیف ہوتی گئی بی قوت پکڑی گئی چنانچہ اب تلک کہ شاہ
 عالم کا اٹھتالیسواں سن جلوسی ہی راجا رنجیت سنگ سورج مل کا بیٹا
 اُسی قوت و تسلط کی ساتھ اپنی ملکون پر محیط ہی

پور ڪا اراده نڪيا بلڪه ٿال ڏيا بنا اُنکي راجا بدن سنگ سورج مل جات کي
 باپ سي شروع هُئي اور اس امر کي ترغيب راجا جي سنگ جي پور والي
 في اُس ڪو ڏي بلڪه موجب اُسکي ترقي ڪا بهي ڪڇووهون هين ڪا خاندان پڙا
 چنانچه ايسري سنگ في محمد شاه فردوس آرام گاه سي ايڪ لاکھ چاليس
 هزار رُپي پر ميوات ڪا بهي اُس ڪو اجاره ڪروا ڏيا سواي اُسکي ملڪي مالي
 هرامرين اسکا مددگار ٿيا وجه اُسکي ٻه هي ڪه جي نگر کي راجاون في جاتون
 ڪو اپنا سد راه ٿهرايا ٿيا تاليف قلوب کي لئي آپ بهي اُن سي بسلوڪ پيش
 آئي ٿي اور حضور اعليٰ سي بهي رعايتين ڪروا ٿي پهر تو دولت اُنکي دن
 بدن بڙهني لڳي اور رياست رونق پکڙي بدن سنگ في اپني جيتي جي سورج
 مل ڪو مختار ڪيا اور آپ الڪ هو بيٺا اُسي اُس سي زياده گڙهون کي تياري
 کي اور شهرن کي آبادي ڪو ترقي بخشي سپاه کي احوال پر بهت متوجه هوا
 هر ايڪ رساله دار سردار سي بيشتر سلوڪ ڪيا بنا بر اسکي اڪثر ڪارهاي عمده
 اُسکي هاتھ سي نڪلي بلڪه بعضي بت باهري ڪام اُسي ڪئي چنانچه نواب ذو
 الفقار جنگ سيد صلابت خان مير بخشي پر غالب هوا اور نواب حڪيم خان
 سا بهادر اُس معرڪي مين مارا ڪيا غرض اُنکي رياست ڪو جو ايڪ مدت رهنا
 هي بسبب اُسکي سواي راجا رتن سنگ کي جو هوا سو مدبر اور شجاع پر راجا

پتلو ۾ ڇهه رخ طول صوبه مذکور کا گهاٽم پور الہ آباد کی متعلق سی لیکر تا
پتلو کہ شاہجہان آباد کی عملی سی ہی ایک سو ستر کوس اور عرض قنوج
سی تا بہ چندیری کہ وہ مالوی کی مضافات سی ہی سو کوس القصہ سرکار اکبر
آباد و باڑی و الور و تجارہ و ایرج و کالپی و سانوان و قنوج و کول بروہہ منڈلاور
گوالیار و غیرہ چودہ سرکارین متعلق اُن سی دو سو اٺھ سٺھ محال آمدنی اٺانوی
کروڑ اٺارہ لاکھ پینسٺھ ہزار آٺھ سو دام لیکن برسوں سی سرکار قنوج صوبہ اودھ
میں داخل ہی * ڌیگ کنہیر بہت پور بھی گویا صوبہ اکبر آباد کی متعلقات
سی ھین اٺارہ اٺارہ یا اُنیس اُنیس کوس کا فاصلہ اُن سی اور شہر مذکور سی
ہی قلعي اُنکی نہایت مستحکم و محفوظ و کلان ساتھ اُسکی اسباب جنگی اور
ذخیری ہر ایک میں اس بہتایت کی ساتھ کہ سالہای سال قلعي والی محتاج
ان امور کی نہون خصوصاً بہت پور میں بالفعل وہی رنجیت سنگ کا مسکن
ہی قلعه مذکور سب سی زیادہ مضبوط و محکم چنانچہ اُسکی گرد کی کھائی
ایک چھوٹی سی ندی ہی کہ ناو اُس میں چلی سواي اُسکی اور اسباب اور
آثار حفاظت کی بہت سی ھین پر وسعت میں ڌیگ کا قلعه اُس سی زیادہ
ہی لیکن مستحکم و محافظ ایسا نہین چنانچہ ذو الفقار الدولہ نجف خان میر
بخشی فی بھی نول سنگ کی لڑائی مار کر اُس کو چھین لیا تھا لیکن بہت

۱۱ اُسکي مندر کو توڑ کر وھين ايک مسجد بناي ھي اور عبد النبي خان
 فوجدار ۱۱ وسط شهر ميں ايک مسجد عالي بناکر دنيا ميں نام ۱۱ ڪيا اور عاقبت
 ميں ثواب ليا ۱۱ سواي اُسکي ۱۱ سرانٽ ميں دريا کي ۱۱ ڪناري سي اندر تلڪ ۱۱ ڪئي
 سو ۱۱ سترهيان سنگين و ۱۱ پختہ بنائين چنانچہ جيئہ ۱۱ بيساکھ ميں ۱۱ بهي ۱۱ ڪچھ اوڀر
 سو ۱۱ پاڻي ميں ۱۱ ڏوبي رھتي ۱۱ ھين بسبب اُسکي ۱۱ زينت گھاٽ کي ۱۱ بڑہ ۱۱ ڪئي اور
 نہاني والون کو راحت حد سي زيادہ ۱۱ ھوئي حاصل ۱۱ ۱۱ ھي ۱۱ کہ ۱۱ ھندوون کو بهي
 راضي ۱۱ ڪيا اور شهر مذکور ميں نيڪنام ۱۱ ھوا * قنوج قديم شهر ھي ۱۱ گنگا کي ۱۱ ڪناري
 ۱۱ نپت خوش آب و ۱۱ ھوا ۱۱ ميوہ بهي ۱۱ وھان کا ۱۱ اڪثر خوب و ۱۱ با مزہ ۱۱ ھوتا ھي ۱۱ بلھور
 کہ ۱۱ ايک ۱۱ پرگنہ سرڪار مذکور کا ۱۱ ھي اُسکي ۱۱ تعلقي کا ۱۱ ايک ۱۱ قصبہ مڪن پور درگاه
 سيد بدیع الدين عرف شاه مدار کي وھين ھي ۱۱ اڪثر لوگ اُس کو مانتی ۱۱ ھين
 خصوصاً عوام ۱۱ بيشتہ ارزال ۱۱ قصہ مختصر ۱۱ اس صوبي ميں بهي دريا دو ھي نمود
 کي ۱۱ ھين ايک تو ۱۱ جمنہ ۱۱ جسکا احوال سابق لکھي ميں آيا ۱۱ دوسرا ۱۱ چنبل کہ
 اڪبر آباد سي آئہ کوس کي فرق سي ۱۱ ھوتا ھوا ۱۱ بهداور و سرڪار ۱۱ ايرج کي ۱۱ محال
 سي گذرتا ھوا اڪبر پور کہ متعلق ۱۱ ڪالبي کا ۱۱ ھي وھان پہنچ کر ۱۱ جمنہ سي جا ۱۱ ملا
 ليکن درياي مذکور کي برآمد کا مقام مالوي کي ۱۱ متعلقات سي ۱۱ ھي يعني خاص
 پور غرض گھاٽم پور اس صوبي کي پورب طرف گنگا اتر رخ چنديري دکن طرف

ڪي هوتي تهِي اُنڪا ٽِهڪانا وِهين تها باشندي وهانڪي بمرتبہ زبان اور گوِي نہایت
 با اثر اور محبوب دلربائي مين خوب چالاڪ اور قيامت بي باڪ هوتي هين
 مزار شيخ محمد غوث ڪا بهي وهين هي ڪهتي هين ڪه شيخ مذڪور اپني عهد
 ڪي صاحب ڪمالون مين ممتاز تها اور تشخير مريخ اسڪي عمل مين تهِي *
 ڪالِي ايڪ شهر هي جمن ڪي ڪناري بهت سي صاحب ڪمال درويش اس
 سرزمين مين بهي آسوده هين ساڻه اسڪي مشهور هي ڪه بهيم ڪي تودي ڪي
 غار مين وهان فيروزي اور تانبي ڪي ڪهان هي ليڪن مداخل و مخارج اسڪي
 برابر هين پر گرمي اپني موسم مين وهان حد سي زياده پڙتي هي يهان تڪ
 ڪه اسڪي اطراف مين بيشتر بادِ سموم چلتي هي اڪثر راه رو اسڪي حدت سي
 تونس ڪر اديت پائي هين بلڪه بعضي تو مر هي جاتي هين اسي ڌر سي وهان
 ڪي باشندي اس رت مين بيشتر گهرون مين بيٺي رهي هين پهري چلتي
 نهين مگر بصورت گرمي ڪا وقت ٿال ڪر مصري بهي وهان ڪي بلاد هند مين
 مشهور هي * مٿهرا قديم بستي هي اسي دريا ڪي ڪناري پر ڪنهي ڪي پيدائش
 وهين هوي هي اور هندوي ڪتابون مين بزرگي و برتري اس طبقي ڪي بهت
 لکهي هي في الواقع هندوونڪا بڙا تيرتھ هي آغاز آفرينش سي اسڪو پرستگاه
 جاتي هين ٿاڪر وهان ڪا عالمگير ڪي وقت مين ڪيشوراي تها چنانچھ بادشاه

بملڪ ليجاتي هيئن اور انتفاع اڪثر اُتھائي هيئن قصه مختصر شهر مذکور نہایت
 آباد و بارونق هي مزار بهي اُس مين علما و اوليا کي اڪثر هيئن اور مقبره
 محمد اڪبر بادشاه و شاهجهان کا قريب اُسکي نہایت اسلوب و نمود کي ساتھ
 هي * بيانا قديم زماني مين ايڪ بڑا شهر تھا اور قلعه بهي اُسکا نہایت
 مضبوط و محفوظ اگلي وقت مين گنہگار بنديوانون کو وھين رکھتي تھي مہندي
 وھان کي نيٽ رنگين اور آم بهي بہت بڑا وزن مين قريب ايڪ سير کي *
 سيڪري ايڪ گاؤن هي اُسي کي علاقي کا اڪبر آباد سي بارہ کوس پر اڪبر
 بادشاه في شيخ سليم چشتي کي فرماني سي وھان ايڪ قلعه سنگين بنایا ساتھ
 اُسکي عمارتين اچھي اچھي خانقاھين خوب خوب مسجدين پاڪيزہ پاڪيزہ
 بنائين پھر فتح پور اُسکا نام رکھ کر دار السلطنت مقرر کیا متصل اُسکي ايڪ
 بڑا تالاب هي دو کوس کي پھير مين ڪناري پر اُسکي ايڪ بڑا ايوان و ايڪ
 مينار عالیشان علاوہ اُسکي ايڪ مکان هاڻھي لڙائي کا بہت بڑا اور چوگانگاہ
 نيٽ پرفضا قريب اُسکي سنگ سرخ کي کھان چنانچھ ستون اور چٿانين
 سواي انکي عمارات کي لوازم جس قدر اور چٿي اندازي کي درکار هون وھان
 سي نڪل سکتي هيئن * گواليار نامي قلعه هي آب و هوا اُسکي نہایت خوب
 استواري مضبوطي بهي نيٽ مشهور تا اسلوب سلطنت جو زنداني قابل حفظ

ایک شہر نہایت خوب بسایا اُسکی بعد بادل گڈہ مشہور ہوا پھر شاہ جلال
 الدین اُکبر نے ممالک محروسہ کا بیچون بیچ سمجھ کر ایک قلعہ نہایت
 مستحکم بنایا ساتھ اُسکی شہر بھی نہایت وسیع و خوش اسلوب پر عمارات
 بسایا سچ تو یہ ہے کہ کسی جہاندیدہ نے قلعہ اس متانت کا اور شہر اس
 وسعت کا نہیں دیکھا جمنا چار کوس تلک شہر کی درمیان بہتی ہے دونو
 طرف عمارتیں عالیشان اور رنگ برنگ کی مکان خدا کی قدرت کا تماشا
 دکھائی دیتے ہیں باوجود اُسکی اشخاص ہر قوم کی اور باشندے ہر ملک کی
 کثرت سے مجتمع "علیٰ هذا القیاس اجناس و اشیا بھی ہفت اقلیم کی
 جیسی چاہی ہر وقت بہتایت کی ساتھ موجود بہانت بہانت کی میوی
 ہر شہر و ولایت کی اور رنگ برنگ کی پھول ہر فصل میں بخوبی بہم
 پہنچتی ہیں پر وہاں کی خاص میوے میں خربوزہ نہایت شیرین و خوش
 مزہ و خوش بو ہوتا ہے لیکن کچھ چھوٹا اسی واسطی اُکبر آباد کی جمالی
 مشہور ہے پان بھی وہاں کا نازکتر ساتھ عطریات کی سوائے اُسکی اشیا بھی
 انواع و اقسام کی لطیف و اعلا بنتی ہے کاریگر بھی اپنی اپنی صنعت میں
 کامل موجود خصوصاً کارچوب یہاں کا سنہری رپہری نہایت چوکیا اور جگمگا
 ہوتا ہے بنابر اُسکی اکثر سوداگر کارچوبی تھان اور چیری خرید کر ملک

انسانی مین جنم لیکر خلق کو یہاں انیت دیتی ہیں فی الجملہ صوبہ مذکور
 کی ہوا قریب اعتدال کی ہے اور زراعت اُس مین بارانی و سیلابی اور کہیں
 کہیں کوون سی سہ فصلہ ہوتی ہے میوہ بھی ایران و توران تلک کا گوناگون
 کثرت سی اور پھول خوشبو اور رنگین طرح طرح کی بہتایت سی ہر فصل
 مین ہوتی ہیں عمارتیں بھی بڑی بڑی پختہ سنگین و خشتی افراط سی بنتی
 ہیں صوبہ اکبر آباد اُسکی مشرق کی طرف صوبہ لاہور مغرب کی طرف صوبہ
 اجمیر جانب جنوب کماون کا پہاڑ جانب شمال اور پٹول سی اکبر آباد
 لیکر تا لودھیانہ کنارہ دریای ستلج طول ایک سو ساٹھ کوس کا اور سرکار
 ریواڑی سی کماون کی پہاڑ تلک عرض ایک سو چالیس کوس عرض
 شاہجہان آباد و سرہند و حصار فیروزہ سہارنپور و سنہل و بداون و ریواڑی
 و نارنول آٹھ سرکارین متعلق انکی دو سو انتیس محال آمدنی اس صوبی کی
 چوہتر کروڑ ترستھ لاکھ پینتیس ہزار دام اور یہ اصطلاح مین متصدیون کی
 پچیسواں حصہ پیسی کا ہے

صوبہ مستقر الخلافہ اکبر آباد آگرہ ایک گاؤں پرگنہ بیانہ کی متعلقات سی
 تھا سلطان سکندر لودی فی اُس مکان کو پُر فضا دیکھ کر تختگاہ مقرر کیا اور

پهڻجي ڏهاڪه بهي اُسي کا نام هي بعد اُسکي کي فرسخ جاڪر دو حصي هُئي
 ايڪ تو شرق رو جاڪر چاٽ گام مين شور دريا سي مل گيا نام اُسکا پدماوتي
 ٽهرا دُورا جنوب کي طرف بهڪر تين ٽڪري هُوا ايڪ کو سرستي ڪهتي هين
 دُورڪو جُما تيسري کو گنگا پهر اُسکي جهوٽي جهوٽي هزار سوتي هوڪر بندر
 چاٽ گام کي نزديڪ درياي عمان مين مل گي بعد اُسکي سرستي اور جُما
 بهي اُس مين آملين پر تحقيق يه هي ڪه گنگا راج محل سي آگي بڙه ڪر
 متصل قاضي هتي کي جب پهڻجي نام اُسکا پدا هُوا وهين سي ايڪ سوتا
 جدا هوڪر مرشد آباد کي طرف گيا پهر نديا مين پهڻج جلنگي سي مل ڪلڪتي
 کي پهڻجي هو درياي شور سي جا ملا اُسي کا نام بهاگي رني هي اور پدا ڪه
 اصل گنگا هي وه چاٽ گام مين جاڪر سمندر سي ملي ليڪن ڏهاڪي سي يه
 درياو تين کوس پر هي متصل اُسکي بوڙهي گنگا قصه کوتاه چاٽ گام کي دريا
 تلڪ پهڻجي پهڻجي گنگا جُما سرستي کي هزار سوتي هو گي اور اڪثر سياحون
 کي زباني سني مين يون آيا هي ڪه گنگا کي ڪناري پر ابتدا سي انتها تلڪ
 بيشتر مٿه مرد چور مفسد راهزن بستي هين وجه اُسکي ايڪ لطف سي
 صاحب خلاصة التواريخ ني يه لکي هي ڪه از بس ڪه اس مين نهاني سي
 گناه لوگون کي جسم سي نور هُئي هين اغلب ڪه وي هي بطور تناسخ پيڪر

ساري درياؤن کي پاڻي سي هي اس پر خوبي ٻيهه ڪه هر ايڪ کي مزاج کو راس
 آتا هي بهان تلک ڪه بعضي بيمارون کو شفا بلڪه ڪتني مڙمن بيماريون کو
 فائده دوا کا بخشا هي با وجود اسکي تندرستون کو توانائي تازگي معدي کو
 صفائي قوت هاضمه کو ترقي ديتا هي سواي ان باتون کي رطوبت غريزي کو
 بڙهاتا هي بهوڪه زياده لگاتا هي رنگ لال ڪرڻا هي اور مزاج بحال اسي واسطي
 هندوستان کي بادشاه اور اڪثر امرا ڪهين هوڻ پر اسي کا پاڻي پيتي هيڻ قصه
 مختصر ٻيهه درياؤ هرڍوار سي سادات باره کي بستي مين هوتا هوا هستناپور کي
 متصل جا پهچا پهر وهان سي گڏه مڪهيترو انوب شهر و ڪرنباس و سورون اور
 بداون کي قريب اور وهان سي قنوج کي متصل ندان شيوراج پور اور ڪنجوي
 و مانڱ پور و شهراد پور مين هوتا هوا قلعي الله آباد کي تلي جا نڪلا هي
 وهين جمن بهي ڪي درياؤ سميت اس مين آملِي پهر گنگا چنار گڏه اور
 ڪي محالن کي تلي هوتي هوي بنارس کي نيچي جا پهچي غرض پڻي کي
 تلي پهچتي پهچتي بهتر درياؤ اتر اور دکن کي پهاريون سي جدي جدي آکر
 اس مين ملي پر نام اسيکا باقي رها مگر پاٽ بهت بڙه گيا ڪه ڪناره وهان
 بدقت نظر آتا هي اور برسات مين تو دکهاي هي نهين ديتا پهر وهان سي
 راج محل و مرشدآباد و ميردادپور و هجراهڻي مين هوتي هوي جهانگير نگر کي تلي

سکتی اس واسطی گزاری کی جاگہ بڑی بڑی موٹی رسی دونو کناروں کی
 درختوں سے مضبوط باندھتی ہیں اور چھینکوں پر ان کی سہاری سے پار اترتی
 ہیں غرض بدري ناتھ کی پرستش کو خلائی شہر شہر سے آتی ہی لیکن اس
 طرح کا طور گزاریکا جو کسی آدمی نے نہیں دیکھا بسبب اسکی آتی جاتی
 اس پر نہایت ڈرتی ہیں بعد اسکی دریای مذکور بدري ناتھ کی پہاڑ سے
 بہتا ہوا سری نگر تلی آیا اور وہاں سے رکھی کیش میں جاکر ہر دوار کی
 پہاڑ میں جا نکلا ہی اگرچہ گنگا سر تا سر ہندوؤں کی مذہب میں پوجنی
 کی قابل ہی علی الخصوص اس مقام کی بیچ چنانچہ ہر سال بیساکھی کی
 نہان کو ہر طرف سے ایک خلقت آکر وہاں جمع ہوتی ہی پر جس سال
 کہ مشتری دلو میں آتی ہی زبان ہندی میں اسی کنبہ کہتی ہیں اس برس
 نور دور کی لوگ کثرت سے آتی ہیں اور وہاں نہایتی ہیں حاصل یہہ ہی کہ
 وہانکا نہانا دان پن اور ناخن لینا سر منہ کی بال منڈانا پڑا ثواب جانتی
 ہیں بلکہ مردوں کی ہڈیوں کو بھی اس جگہ گنگا میں ڈالنا وسیلہ نجات کا
 سمجھتی ہیں اور پانی وہاں کا بطور حقی کی بہنگیوں میں ملک بملک
 پہنچاتی ہیں لطف یہہ ہی کہ مدتوں پانی اس دریا کا اگر باسنوں میں رہی
 مطلق نہیں بگڑتا کیڑا اس میں کبھو نہیں پڑتا ساتھ اس کی میٹھا اور ہلکا

اُسکي اٿائي کي شهر و قلعي کي نيچي جا نڪلا پهر کالبي کي متصل ڪيا اُسکي
 بعد اڪبر پور مين چنانچه عمارتين راجا بيربل کي اُسي کي ڪناري پر هين اور
 راجا مذکور شهر مسطور هي مين پيدا هوا اور اُسي شهر کي تلي درياي چنبل
 اور بيتوه اور استان ۽ سواي انکي اور بهي درياو گوندواني کي طرف سي جدي
 جدي آکر اُس مين ملي هين پهر جمنا ملڪوسي مين هوڪر اله آباد کي قلعي
 کي نيچي گنگا سي آ ملي اور دوسرا درياو گنگا اُسکي بهي سرچشمي سي کوٽي
 واقف نهين ليکن هندوون کي عقيدتي مين يون هي که گنگا بيڪنٿه سي اُتر
 شرح اُسکي هنود کي قديم ڪتابون مين هي اور ڪيلاس پرست پر هو چين کي
 متصل جا نڪلي چنانچه فردوسي کي شاهنامي مين هي که پتھر کي عمارات
 سياوش بن شاه ڪيکاوُس کي لب گنگا هين پهر وهان سي کوهستان بدري مين
 آئي ونهين ايڪ احاطه برف کا هي که همانچل اُس کو کھتي هين هندو اپني
 کايا کو اُسي مين گلانا باعث آخرت کي نجات کا جانتی هين چنانچه پانڌوون
 في جاکر اپني بدن اُس مين گلاي ليکن ڪناري اُس دريا کي اُس پهاري مين
 اس قدر بلند هين که پاني بدقت دڪھائي ديتا هي ناو پر آدمي پار نهين جا

§ In a Persian MS. written درستان, and perhaps intended for the Cane River.

سوني ڪي هين پهر اور اشيا اور ظروف کا تو ڪيا شمار هي القصه درياي مذکور
 اُس ديار مين سي هوکر سرور مين آيا هي چنانچه وهانگي زميندار سلاطين
 هند کو بلکہ وهان ڪي وزرا امرا تلک دريا ڪي راه سي برف کشتيون پر
 بهيجتي تهي اسي سبب عوام الناس وهان ڪي راجا کو برقي راجا گهتي تهي
 پير وهان سي پهڙ پر هوکر اُس زمين مسطح پر پهچا هي ڪه شاه جهان ني
 وهين اُسڪي ڪناري پر ايڪ قصر عاليشان بنايا هي بلکہ هر ايڪ امير صاحب
 منزلت ني سواي اُن ڪي بعضي بعضي اور بادشاهي بندون ني بهي موافق
 اپني قدر و حوصلي ڪي عمارتين ستهري ستهري دل چسپ بنائين هين اسي
 جيت سي وهان ايڪ معموره مختصر سا لگونهان بن گيا اور مخلص پور اُس
 کا نام هوا چنانچه بادشاهه اڪثر اوقات وهان سير کو جاتي تهي اور ايڪ حظ
 اُتھاتي تهي اسي مقام سي شاه نهر ڪه آدهي جمنا برابر هي شاهجهان آباد
 مين کات کر ليگي هين اور درياي مذکور پهڙ سي اتر ڪر اڪثر محال ڪي تازگي
 کا باعث هوا هي چنانچه قلعه ارگ اور ڪتني مڪان بادشاهي اميرونڪي اسي
 ڪي ڪناري هين پير وهان سي ستهرا اور گوگل اور بندرaben مين پهچا بي دار
 الخلافه سي پنڌره فرسخ کا عرصه رکھتي هين پير اڪبر آباد ڪي تلي گيا چنانچه
 وهان بهي اڪثر عمارات بادشاهي اور اميرونڪي حويليان لب دريا هين بعد

اُور سُفيد شَهد بَهي بَہتايَت سي وَہين مِلتا هِي از بَسڪَہ بَسْتِي اُسڪي مَحْفُوظ اُور
 بي لڳاؤ هِي بَسبب اُسڪي اُڙتلي کي زَميندار وَهان کي بادشاهون سي نَہين
 دَبتِي هَميشَہ بَغي رَہتي هَين راقِم اِيکَ مَرتبِي هَمراہ نَوَاب آصف اَلدولہ مَرحُوم
 کي حَسَن رِضا خان بَہادر مَغفور کي رفاقت مِين نانک مَتي تَلک گيا هِي
 لِيکَن پَہاڙ کي گَهاڙي مِين اِتِّفاق جاني کا نَہين هُوا بَلڪَہ کُوي شَخْص لَشڪر کا
 وَهان نَہين جا سکا في اَلوِاقِع راہ اُس پَہاڙ کي نِہايَت سَخْت اُور کُڏَہب
 هِي لِيکَن پَہاڙي وَهانکي جِنس مَيوہ اَکثر لاڪر لَشڪر مِين بِيئَچَہ جاتي تَہي خُصُوصًا
 اخروَت بَہتايَت سي اُور نِہايَت سَسْتِي اَلغرض اِس صُوبي مِين دو دريا بَڙي
 هَين اِيکَ جَمنا کَہ سَرچِشمَہ اُسکا مَعْلُوم نَہين اَکثر سَيّاح جَہان گُرد خُصُوصًا وي
 کَہ چين سي پَہاڙون کي راہ آتي جاتي هَين اُنکي زباني يُون سَنا هِي کَہ يَہہ
 دريا چين مِين سي هُوکر پَہاڙون کو کاڌا هُوا بَشِہر مِين پَہنچا هِي کَہتي هَين
 کَہ اُس مُلک مِين سونا بَہت هُوتا هِي وَجَہ اُسڪي يَہہ هِي کَہ اَکثر سَنگ ريزي
 وَهانکي تائير پارس کي رَکَہتي هَين لوہا تانبا اُنکو لڳ کر سونا هُو جاتا هِي
 لِيکَن پَہچاني نَہين جاتي اِس واسطِي وَهانکي باشِندي گَھوڙي تَڻو بيل کي پاوَن
 مِين نَعَل باندَہ کر چَرني کو وَهان کي پَہاڙ پَر چَھوڙ ديتي هَين بسا اَوَقات اُنکي
 نَعَل سوني کي بن جاتي هَين اُور اُس مُلک کي حاکم کي يَہان نَقاري بَهي

خصوصاً سورج گھن مین کیونکہ اُس روز دُور دُور سی گُروہ گُروہ رنڌي مردِ عام
 خاص بلکہ سب چھوٹی بڑی آنکروہان جمع هُوتی هین اور نقد و جنس
 انواع و اقسام کی ظاہر و مخفی خیرات کُرتی هین هرچند کہ اُن مین کوئی
 کیسا هی بخیل یا مفلس هو پر اپنی قدر و طاقت سی زیادہ دان پُن کرتا هی
 بلکہ سِوای تالابِ مذکور کی ائہتالیس کوس تلک جتنی جھیلین تالاب حوض
 کوئی اطرافِ شهر کی اور وی مکانات جنکی نزدیک سرستی ندی بہتی هی
 بلکہ وی بیٹھکین بھی کہ اگلی مینون کی نام سی مشہور هین اور قدیم
 کتابون مین مسطور اُن سب کو تیرتہ جانتی هین اسی سبب پانڈو اور
 کورو کہ پیشوا ہندوونکی تھی آپس مین لڑکر وہین ماری گئی اور چالیس کوس
 دلی سی پری شمال رو سنہل ایک قدیم شهر اُس مین ہرمندر ایک پُرانی
 پرستشگاہ ہنود کی هی کہتی هین کہ دورِ آخری مین ایک اوتار وہین سی
 نکلیگا قریب اُسکی ۵۰ نانک متا بابا نانک کی چیلی اور سیوک وہان اکثر
 جمع هُوتی هین اور جب تپ مین مشغول رھتی هین اتر طرف اُسکی
 کماؤن کا پہاڑ سونی روپی تانبی شیشی لوهی گندک سہاگی کی کھان اُس مین
 هی سِوای اُسکی بازو شاہین اور چنگل گیر پرندی وہین سی آتی هین بلکہ
 سرہ گائی مُشک کی ہرن ریشم کی کیرتی پہاڑی تانگن اکثر وہین هُوتی هین

حَسْبُ الْحُكْمِ بادشاه کی نکال دیا اور ایک باغ نہایت مطبوع خوش قطع پانچ درجی کا بنایا عمارتیں اُسکی نیٹ انوٹھی اور بیتھکین نہایت لگوںہیں جی اگر کیسا ہی اداس ہو تو وہاں لگ جائے بلکہ دل پر اداسی پھر کہہو نہ آئی سوای مکانات کی صنعت کی یہ عجیب کام کیا کہ دامن کوہ کی آجھو کو اُس باغ میں اس حکمت سی لایا کہ وہاں جتنی حوضوں اور نہروں میں فواری تھی اُسکی پانی سی چھوٹنی لگی محتاج خزانیکی نہر ہی اور گلاب بھی اس کثرت سی اُس میں پھولتا ہی کہ موسم میں ہر روز انگنت پھول خوش رنگ و پاکیزہ اُترتی ہیں چنانچہ خلاصۃ التواریخ کا راقم لکھتا ہی کہ میں موسم بہار میں جس دن اُس گلزار سراپا بہار کی سیر کو گیا تھا اُس دن چالیس من گلاب کی پھول اُس باغ سی اترکر گلاب خانی میں گئی تھی (بیت) روش پر بھی اُسکی تھی پھولوں کی ڈھیر “نہوتی تھی پر سیر سی اُسکی سیر” غرض سال بسال پھولوں کی وہاں ترقی اور بہار کی زیادتی تھی تھانیسر ایک پُرانی بستی ہی سرہند سی تین کوس پر جنوب رو قریب اُسکی کور کھیت نام ایک بڑا تالاب ہی ہندی کتابوں میں اُسکو نافِ زمین لکھا ہی اور پیدائش کی ابتدا بھی ہندوؤں کی نزدیک اُسی مکان میں ہوئی ہی حاصل یہ ہی کہ اُسکو بڑا تیرتھ جانتی ہیں اور نہانا اُس میں ثوابِ عظیم

هو الغیب عند الله اور شاھجہان آباد سی تیس کوس کی مسافت پر * پانی
 پت ایک قدیم قصہ ہی شیخ شرف بو علی قلندر وہین پیدا ہوا اور چالیس
 برس کا ہو کر دلی میں آیا پھر خواجہ قطب الدین کی خدمت میں مشرف
 ہوا لیکن بیس برس تک علوم ظاہری کی تحصیل میں رہا جب نور ربانی
 کی تجلی اُسکی آئینہ باطن میں ہوئی ساری کتابیں جمنے میں ڈبو دیں اور
 مسافرت اختیار کی جس وقت روم میں پہنچا شمس تبریز و مولوی روم سی
 استفادہ اٹھایا سوای انکی بھی وہاں کی اکثر اولیا سی بہت سا فائدہ پایا ندان
 اپنی وطن کو پھرا جب کہ وہاں پہنچا کچھ عزت میں بیٹھا یہاں تک کہ جہان
 سی اٹھ گیا اُسکی بھی کشف و کرامات کا ایک عالم گواہ ہی “ اور مزار ایک
 جہان کی زیارت گاہ “ سرھند قدیم شہر ہی سامانی کی متعلقات سی
 فیروز شاہ فی اپنی سلطنت میں سن سات سو ساٹھ ہجری کی بیچ اُسی جدا
 کرکی ایک علیحدہ پرگنہ مقرر کیا آبادی و رونق اُسکی پھر دن بدن بڑھتی
 گئی سرھند سی بیس کوس کی فرق پر بھوانا گھاٹ ایک معبد ہی بیشتر لوگ
 اُسکو مہادیو کہتی ہیں ہندوؤں کی قدیم پرستش گاہ ہی لیکن فدا ئی خان کوکہ
 کہ امرای عظام سی تھا اُسنی عالم گیر کی سن چار جلوسی میں وہین رہنا
 اختیار کیا نام اُسکا بجنور رکھا وہاں کی راجا کو کہ کئی پشت سی راج کرتا تھا

سي ديوار بهي اُٿي ڪه شاه عبد الباقي پيرزادي ڪو ٻيو خبر پهچي سٽي هي
 سوار هوا اور سيڪڙون اشخاص خواص و عوام سي اُسڪي ساڻه هو لي آخِر آنڪر
 ديپري ڪي بنياد ڏهاڙي اور ايت ڪو خوب سزا دي اُسي جاکر نواب سي
 فرياد ڪي نهايت غصي هوا اور ڪي سردارون ڪو معه فوج بهيجا ڪه پيرزادي ڪي
 حويلي ڏها دين اور گهر لوٽ لين ليڪن شيخ اپني مڪان مين باستقلال ياد الهي
 مين بيٺا رها مطلق نڌرا يهان تلڪ ڪه وهان ڪي لوگون ڪو منع ڪيا ڪه ڪوئي
 ميري مدد ڪو نه آي اور اپني تين اس بلا مين نه پهتسائي ڪه سواي قادر لا
 يزال اس وقت ڪسي سي ياري و مددگاري منظور نهين ڪيونڪه جنگ و جدل
 فقيرونڪا دستور نهين القصه وي لوگ جو باراده پرخاش آي ته ٻيو سوچي
 ڪه دنيا ڪي واسطي ايمان ڪهونا اور عاقبت سي هاتھ ڏهونا عبث هي چارو
 ناچار هر ايڪ شيخ سي برادرت پيش آيا اور نقد ايمان اپنا دنيا ڪي لالچ پر
 ڪسي ني نه گنوايا نواب ني بهي اس ماجري ڪو سُنڪر انفعال ڪهينچا اور اُس
 ڪار نا شايسته سي هاتھ اُٿايا جب احمد شاه ڪي بادشاهت هوني ملڪ و
 معاش وهانڪي نجبا ڪي گهڻي لڳي جماعت مين اُنڪي تفريقي ني راه پاڻي
 جسني سبھتا اپنا جڏهر ديکھا اُڏهر ڪي راه لي آخِر شهر مذکور ويرانه بن ڪيا اور
 جسني چاها وهان عمل ڪر ليا اب تلڪ تو بهي حالت هي آگي ديکھي ڪيا

پر شيخ سيد اڪثر بلڪه فضلا علما بهي محمد شاه فردوس آرامگاه کي وقت تلک
 شهر مذکور خوب آباد تها اور عالم فاضل بهه غالب تهي که ماه رمضان مين
 مقدور نه تها که دو پهر ڏهلي تلک نان بائي يا بهتپارا تنور گرم کري يا
 بهتپونجا بهار جهونکي يا کوي بازار مين دن دئي حقه پي احيانا اگر کسي
 سي ايسي حرکت هو جاتي تو محتسب کي هاتھ سي اسکي آبرو جاتي شهر
 کي اندر باهر درگاهين اڪثر کيونکه هزارون بزرگ صاحب کمال اس سرزمين
 مين آسوده هين ليکن صاحب ولايت سيد محمد ترک مزار اس بزرگ کا
 بستي کي اندر هي سالهاي سال گذري که کفار کي هاتھ سي وه بزرگوار شهيد
 هوا عجيب و غريب حكايات و خرق عادات اسکي مزار سي وهانکي باشندي
 منسوب کړي هين اور اپني مرادونکي لئي جميرات کو جاکر وهان چوکیان
 بهرتي هين ليکن بئخانه ديهر اس وقت تلک قصبه مذکور کي اطراف مين
 کوي هندو بنا نسکا تها چنانچه ايک اتيت ني نواب مظفر خان خاندوران
 کي بهائي کو بهت سي ربي نذرانه ديکر چاها تها که ايک بئخانه وهان بنائي
 اور بنياد کفر کي قائم کري اتفاقا اس وقت نواب مرحوم کا قصبه مذکور سي
 سات کوس کي فاصلي پر ڏيرا تها علاوه اسکي سرکار مذکور اسکي جاگير بهي
 تهي غرض اس اتيت ني آبادي کي قريب بتخاني کي نيو ڌالي بلڪه تهوڙي

فراواني “ پر بستي کي اندر جيسي مکانات کي کثرت هي ” ويسی هي باهر
 قبرون کي بهتاييت “ اکثر بادشاهون وزيرون اميرون کي مقبري اطراف مين
 هين پر مشهور تر مقبره همايون بادشاه کا کي قباد کي کيلوگرهي مين جمن کي
 کناري پر هي سواي اسکي وه علما فضلا فقرا که اپني عهد مين مشهور آفاق
 تهی انکي مزار بهي اس کثرت سي هين که ايک شهر خموشان بستا هي *
 سرکار نارنول ايک قديم قصبه هي دهلي سي پچاس کوس کي فاصلي پر آب
 و هوا وهانکي نهايت خوب سواد اسکا هر ايک صاحب طبع کا مرغوب
 عمارتين اس مين اکثر پختہ و سنگين مهندي وهانکي نيٲ رنگين کهيت
 اسکي بستي کي قريب اکثر اوقات لڙکي وهانکي باشندون کي کهيلتي کهيلتي
 کهيتون پر جا نکلتي هين اور گهر کو آتي هوئي مهندي کي پتي اپني جوتيون
 مين بهر ليتي هين غرض گهر پهچتي پهچتي پاؤن انکي لال عنابي هو جاتي
 هين شکار بهي هر قسم کا بهتاييت سي چنانچه چتر پمار پسي کي چار چار
 تير بيٲ جاتي هين پهر گوشت اور ترکاري کس کو غرض هي که منگواي اور
 کهاي مگر بصورت يا بسبب عادت سواي اسکي پهل پهل هر ايک موسم
 کي خوش بو خوش ذائقه بافراط ميسر آتي هين اور خواهش مندون کي دل
 و دماغ کو راحت و آرام پهچاني هين متوطن وهانکي مچبا شرفا هر قوم کي

سي فائده لا ڪلام هي ڪيونڪه بنائي والي ڪا دنيا مين نام اور خلق ڪو بلا شهبه
 آرام هي ليڪن حمام ڪي تعمير هر پير و جوان ڪي راحت ڪا موجب هوني
 هي اور هر شخص ڪي دل ڪي ڪلفت ڪهوتي هي چنانچه بادشاهي حمام سي
 اس شهر مين ايڪ فيض عام هي ڪوئي بشر محروم نهين ساخت مين وه
 فلاتون ڪي حمام سي خوبتر "در و ديوار اسڪي خوش اسلوب سراسر" سطح
 اسڪي گنبد ڪي ڪره نار سي ملي هوني "اور ديوارون ڪي نيو مرڪر زمين سي
 لڳي هوني" جامه خانه اسڪا بهترين مڪانات "حوض وهان ڪا خشڪ مزاجون
 ڪي لي آب حيات" مطبخ اسڪا مخزن آتش سوزان ڪا "ماه آينه اسڪي
 تابدان ڪا "حرارت اسڪي حرارت غريزي ڪو بهڙڪائي" اور رطوبت اسڪي
 رطوبت اصلي ڪو بهڙهائي " (ايات) پاتي هين يهان چين مسهي خاص و
 عام "بس پهي حمام هي خير المقام" تيل ملي اس مين گر ايڪ بار
 جو "اس ڪو پوست ڪا مرض پهر نهو" ميل جو ڪوئي چاهي ڪه دل ڪي
 جهڙائي "حوض مين بس اسڪي وه غوطه لگائي" اس مين نهاوي جو ڪوئي
 ايڪ دم "قلب پر اسڪي نرهي گرد غم" وصف ڪري اسڪا سنجندان اگر "پهر
 نڪهي شعر بجز شعر تر" اسڪي جو تعريف مين ڪهولي دهن "گرم رهي اسڪا
 هميشه سخن" القصه اس شهر ڪا هر مڪان لاثاني "ساتھ اسڪي عمارات ڪي

ٻنابر اُسڪي مسجد ۾ خانقاهين مدرسي پاڪيزو دلچسپ ڪثرت سي هيئن " اور
 خانه باغ بهي بهتايٽ سي " ليڪن سن ايڪ هزار ساڻه هجري مين مطابق
 چويستوين سال شاهجهاني ڪي ناف شهر مين ايڪ جامع مسجد سنگ سرخ
 ڪي ايسي بني ڪه اگلون ني نه ويسِي دِيڪهي نه پڇهلون ني سني " نيو اُسڪي
 تا به سمڪ " مناري اُسڪي سر بفلڪ " گنبد چرخ بلا گردان اُسڪي
 گنبدونڪا " عالم بالا تلڪ جلوه اُسڪي برجيونڪا " زينہ اُسڪي منبر کا پاڻه
 عرش سي اوڻچا " ستون ڪمڪشان اُسڪي ستون در سي نيچا " محراب اُس
 ڪي محل اجابت دعا " نمازي وهانڪا مقبول درگاه ڪبريا " ديوارين سد
 سڪندر سي بلندتر " صحن اُسڪا صحن فردوس ڪي برابر (بيت) حوض هي
 ايڪ صحن مين اُسڪي لطيف " پاڻي هيئن فيض اُسي وضع و شريف " سنگ
 هر يڪ اُسڪا به از يشم هي " چشمه حيوان کا وه هم چشم هي " جو ڪه
 نمازي ڪري اُسي وضو " حشر مين محشور هو با آبرو " ايڪ بهي بوند اُسڪي
 اگر جسني پي " اُسڪو هوا تصفيه باطني " اُسي طهارت هي سراپا نجات " هي
 وه گنهگارون ڪو آب حيات " جو ڪوي ايڪ قطره بهي اُسڪا پيئي " پياس
 نهو حشر مين بهي گر جيئي " غسل جو ايڪ بار بهي اُس مين ڪري " ساي
 سي پهر اُسڪي جهنم ڌري " هر چند مسجد و باغ اور مسافر خاني ڪي بنا

اپني زين پوش بچھائي حقي لڳائي بيٺي هين “ ڪسي طرف بانگي
 ٿيڙهي اپني مجلس جمائي بيٺي هين “ ايڪ طرف ڪي شهدي
 شڪستي سلفي ڪي دم ماري هين “ ڪهين دو چار لڳي پڇني زياده گو اپني
 ارڙهي چانول جدي هي بگهاري هين “ غرض ميلي ڪي سي دھوم اور
 چهريون ڪا سا هجوم هر روز سواي جمعي ڪي دو بهر ڏهلي تلڪ رھتا هي
 (بيت) خلق ڪا رھتا هي زبس اردحام “ رھتي هي نت ميلي ڪي سي
 دھوم دھام “ جنس هر ايڪ قسم ڪي وهان خوار هي “ گھوڙون ڪي يھ گرمي
 بازار هي “ اسڀ هر ايڪ ملڪ ڪي هين بي شمار “ مانگو اگر ايڪ تو لا
 دين هزار “ گوکھ يھ ڪثرت هي پھ قيمت گران “ سستا اگر چاهو تو پاؤ
 ڪهان “ بسڪھ وهان رھتي هي نت لاؤ لاؤ “ بڙھتا هي جاتا هي سدا انکا
 بهاؤ “ گھوڙيڪا مت پوچھي ڪچھ مول تول “ ٿڌو هي ڪنڪائي ڪا ترڪي ڪي
 مول “ گھوڙا هر ايڪ شخص ڪو درڪار هي “ پيرو جوان جو هي خريدار
 هي “ بلڪه يھ احوال هي هر طفل ڪا “ دائي سي ڪھتا هي ڪھ گھوڙا هي
 لا “ ڪوئي ڪهلونا اسي ڪيسا هي دي “ گھوڙي سوا يھ نهين ممڪن ڪھ لي “ ديگھا
 ڪمھارون ني جو يھ ڪچھ سڀاؤ “ مٿي ڪي گھوڙي ڪي نڦري ڪي بهاؤ “ الغرض
 اس ملڪ مبارڪ بنياد ڪا هر ايڪ محلہ خوش سواد “ اور هر مقام آباد “

لیکن اُردوئی مُعلّیٰ کا عالمِ ھین جُدا ھي فضا اُسکي نہایت پاکیزہ و وسیع “
 عمارات و ھانکي بہر تہ اُسلوبدار و رفیع “ صحن اُسکا رشکِ صحن گلزار “ دُکان
 ھر ایک بازار کي بہار “ اھلِ حرفہ سب کي سب مرفہ احوال “ کوٹھي اُنکي
 نقد و جنس و جواہر سي مالا مال “ نہ کسي چیز کي وھان کمی “ نہ کوئي
 بشر اُس آبادي مين غمي (بیت) ھي دروازہ اُسکا گلستان کا باب “ بیاض
 جھان کا ھي وہ انتخاب “ فضا اُسکي دیکھي اگر ایک نظر “ تو دل تنگ
 ھوئي نہ پھر عمر پھر “ بھلاي ھي ایک لختِ غم اُسکي سیر “ خوش آئي
 ھي بس دمبدم اُسکي سیر “ سمان وھان کا دیکھي اگر ایک ذرا “ تو ماني نہ
 لي نام ارژنگ کا “ بہت مين في یوں اُسکي تعریف کي “ ھي اُردو کي
 بولي کا ماخذ وھي “ اور نخاس کي بازار کي طرز ھي جدي “ فضا اُسکي
 فضائي عالم سي بھي بڑي “ صحن اُسکا اقسام کي چارپاون سي مالا مال “ زمین
 اُسکي نہایت صاف بقا ڈھال “ ھر ایک طرف خلق کا ایک دنگل “ جا بجا
 چہل پہل “ چابک سوار قسم قسم کي گھوڑون کو پھیر رھي ھين “ خریدار
 دلالون کو گھیر رھي ھين “ سودا وھان کا دست بدست “ ھر ایک دلال کوڑیالا
 مال مست “ کوئي گھوڑي کي مول نول کي لي ھاتھ لاتا ھي “ کوئي کھڑا
 ٹٹو ھي چکاتا ھي “ ایک طرف سپاھي پیشہ بھلي آدمي چبوترون پر اپني

اعلیٰ ھي “ پر چانڊني چوڪ تمام شهر کا اڃالا ھي “ هر دُڪان اُسکي بي
 مانند “ جس جنس کو ديکھو بادشاه پسند “ صحن ۾ ڪشاده ڪه دل ڪهل
 جائي “ صاف آيسا ڪه آدمي چانول بکھيرڪر ڪهاڻي “ دلال اُس بازار کا
 سوداگرون کو آنڪھ اٿهاڪر نهين ديکھتا “ بساتي وهان کا جوهر يون کو خاطر مين
 نهين لاتا “ دُڪان ايڪ بزار کي اسطنبول کي بزازي برابر “ کوٽهي ايڪ
 صراف کي تمام ايران کي صرافي برابر “ (بيت) رُپي هر ايڪ دُڪان مين هين
 ڪهنڪتي “ ڪٿوري رات بهر هينگي جهنگتي “ لگي هين هر طرف پھولونڪي
 انبار “ گلي ڪوچه هر ايڪ ھي رشڪ گلزار “ فواڪه کا وفور اس درجه
 هيگا “ ملي ھي تازه ميوه اصفهان کا “ طعام اقسام کا جو ڪوئي منگواي “ بقدر
 ايڪ فوج کي بازار سي آي “ جو ثبات ايڪ سلطنت کا هوئي درڪار “ تو
 حاضر ڪر دي وونھين ايڪ دُڪاندار “ اگر اُباب چاهي ايڪ لشڪر “ تو هاتھ
 آجائي بس ايڪ دن کي اندر “ نهين ھي اهل حرفه ڪوئي بيڪار “ ھي نت
 بيع و شرا کا گرم بازار “ جو ادنيل وهان ھي دُڪان جواهر “ وھي ھي بيگمان
 کان جواهر “ گر ايڪ اقليم کا آجائي وهان مال “ تو لي لي ايڪ مهاجن
 اسکو في الحال “ ڪوئي بيماري هو ڪاھيڪو فڪري “ ڪه وهان هر شي کي نت
 رھتي ھي بکري “ في الواقع اُس مقام فرحت انجام کو جتنا سراهي بجائي

شهر کي آبرو ڏوڻي هئي ”اڪثر لوگون کي حويليون مين بنبي ٿيندي پاني سي
 معمور رهندي لڳي اور حوض و تالاب بهي دولتخانه والا کي بهر پور باغون مين
 وهان کي شادي اڪثر رهندي لڳي اور چمنون مين طراوت بيشتتر حقا که وه
 بزرگ بهشتي تها که اُسکي کماي سي شاه و گدا کو فيض هوا (بيت) رکهي
 حشر مين اُسکي حق آبرو ”که فيض اسکا جاري هوا کو بکو“ شهر پناه اُسکي
 سنگي نهايت پختہ و مضبوط عرض و طول و بلندي و خوش اسلوب اُسکي عقل
 احاطه نهين کر سکتی بلکہ ايک جہت کي پيمائش کا دھيان نهين دھر
 سکتی اندر باھر اُسکي بستي حد سي باھر ”چپي چپي پر آبادي جدھر
 تدھر“ عمارتين انواع و اقسام کي خوبصورت کثرت سي ”حويليان طرح بطرح
 کي خوش اسلوب بهتايت سي“ باغون کي بهار بي خزان ”چمنون مين
 دايِم طلسمات کا سا سمان“ هريک محله اسکا اقليم سي زياده پر فضا
 جهوني سي جهوتا کوچہ اسکا شهر سي بڑا ”هجوم خلايق هر سر راه“ هر ايک
 مقام ايک تماشا گاه ”شهر شهر گاؤں گاؤں کي باشندون ني اپني بهبودي
 اور آسائش جو ديکهي بود و باش ونهين اختيار کي غرض هر صنف کي اشخاص
 و هر ملڪ کي اشيا جب چاهو کثرت سي ديکھ لو“ کسي چيز کي کمتي
 کسي وقت ممکن نهين که هو ”اگرچه بازار سارا هي اسکا اپني عالم مين

نِيِي نظر آي ” اور جس طرف نگاه پڑي ونيهن ره جائي ” اگر رضوان وهان
 كي بهار ديکھتا تو روضه رضوان كي درباري سي هاتھ اُٹھاتا (بيت) جنان کا
 هر مکان اُسکا نمونا ” خوش اُسلوبِي مين بلکہ اُسي دونا ” پهلين پهلين هميشه
 وهان كي گلزار ” خزان اُن تک نيهن پاتي کُهو بار ” نرالي جگ سي رنگ
 و بو گلونكي ” حلاوت اور هي کُچھ هي پهلونكي ” وهان كي طايرون کا رنگ
 هي اور ” هي اُنكي زمزمون کا ڈھنگ هي اور ” مين هر يک شي کو دُون
 تشبيه کسي ” که وه ملتِي نيهن اُسي اور اُسي ” گرد اُس قلعه مبارک كي
 ايک کھاي نہایت چوڑِي چکلي گھري بهي ايسي که عمق زمين اُسكي وري ”
 اور وه اُسي کھين پري ” پاني اُسکا ايسا لطيف و شفاف اگر ايک خشخاش کا دانه
 بهي اُسكي تهاه مين هوِي تو اندھيري رات مين صاف نظر آي ” اور جو اندھا
 بهي اُس مين غوطه لگا سكي تو بلا شُبّه نکال لوي ” (بيت) نظر آي هي
 اُسكي ته مين راي ” کهان يه آب گوهر مين صفائي ” اگر پڑ جائي اُسكي
 بيج ايک بال ” تو يون آوي نظر موتي کا جون بال ” جمنّا بهي اُس قلعي
 كي تشنه دیدار هوکر جانب شرقي سي آي اور اُسكي تلي نہایت آب و
 تاب سي بهني لگي پھر نواب علي مردان خان مرحوم دريائي مذکور کو کات
 کر شاه نهر سرمور پہاڑ كي اوپر سي لایا کوچھ و بازار كي رونق زياده بڑهي ” اور

اندرپرست کي مرمت و تعمير ڪرکي دين پناه نام رکها اور اپني تخت گاه
مقرر ڪيا پهر شير شاه پنهان في گوشک سبز کو اجازت ڪرايڪ اور شهر بسايا اور
اُسکي بيٺي سليم شاه في سليم گزه بنايا ابتلڪ بهي وه شاهجهان آباد مين
جمنا کي اندر قلعه ارڪ کي سامهني موجود هي اگرچه هر ايڪ في ان
بادشاهون مين سي ايڪ ايڪ شهر بساڪر اپنا دارالسلطنت مقرر ڪيا ليڪن
هندوستان کي بادشاهون کي تخت گاه ملڪ بملڪ دلي هي مشهور هي پهر
سن ايڪ هزار اٺتاليس هجري مين مطابق بارهوين برس جلوسي کي شاهجهان
صاحب قران ثاني ني دلي کي قريب ايڪ شهر بنياد ڪيا اور شاهجهان آباد
اُسکا نام رکها اُسکي خوش نيتي سي اس ملڪ ني به رونق اور آبادي پکڙي
که جتي ملڪ اگلي بادشاهون کي لکهي مين آي تهي گم نام هو گهي فقط
اُسکا نام ره ڪيا جيسي سمندر مين بهتيري بڙي بڙي درياو ملي هين پر نام
اُسکا هي باجنا هي قلعه بهي اُسکا سنگ سرنج کا اس مضبوطي و خوش اسلوبي
کي سانه بنا هي که معمار قضا و قدر کي زبان اُسکي اوصاف مين لال هي
پهر ساخت تو اُسکي سي امر محال علاوه اُسکي مکانات قسم قسم کي متعدد
پاکيزه خاصي “ اور باغ بهي اُسکي گلشن جهان کي خلاصي “ نهرين جاري
جا بجا “ حمض هر ايڪ مکان مين کتورا سا بهرا هوا “ جدھر دیکھي کيفيت

شمسُ الدِّين التَّمشُ في بَعْدِ اُسْکي اِپنا رَهْنا اُس مِین مُقَرَّر کِیا مگر سُلطان غیاثُ
 الدِّین بِلینِ فی اِیکُ اور قلعہ چہ سو چھیاسٹھ ہجری مِین بِنا کِیا اور اُسکا نام
 مرزغن رکھا پھر سُلطان معزُ الدِّین کِیُباد فی سن چہ سو چھیاسی مِین جَمنا
 کِی کِناری اِیکُ اور شہرِ پُر فضا و عِمارات اُسکِی دِلکشا آباد کِیا نام اُسکا کِیلوگرہی
 رکھا اُسکِی اِمیر خُسرو فی قرانُ السَّعْدِین مِین تَعْرِیف کِی ہِی بَعْدِ از آن
 سُلطان جلالُ الدِّین خَلجی فی شہرِ کُوشک لعل اور سُلطان علاؤ الدِّین فی
 کُوشک سبز بساکر اِپنا اِپنا ہر اِیکُ کو دارُ السُّلْطَنَت کِیا پھر سُلطان غیاثُ
 الدِّین تغلق شاہ فی سن سات سو پچیس ہجری مِین شہرِ تغلق آباد کِی تَعْمِیہ
 کِی پھر اُسکِی بیٹی سُلطان مُحَمَّد فخرُ الدِّین جُونان فی اِیکُ اور مُلک کِی
 بَنیاد ڈالی اور ہزار سُون کا اِیکُ قَصْر بَنایا سوای اُسکِی اور بَہی مَکانات
 سَنگِ رُخام کِی پاکیزہ پُر فضا بَنائی پھر سُلطان فیروز شاہ فی سن سات سو
 پچین ہجری مِین شہرِ فیروز آباد نہایت وسعت و عظمت کِی ساٹھ بسایا
 اور جَمنا کو کات کر اُسکِی نیچي لایا ساٹھ اُسکِی تین کوس کِی فاصلي پر
 اِیکُ اور محلّ معہ منارہء جہان نَما بَنایا چنانچہ وہ منارہ اَبتک قائم ہِی
 عوامُ النَّاس اُسکو فیروز شاہ کِی لات کہتی ہِین بَعْدِ اُسکِی سُلطان مُبارک شاہ
 فی مُبارک آباد آباد کِیا اور نو سی اٹھتیس ہجری مِین ہمایون بادشاہ فی قلعہ

پہ انتخاب کیا گیا ہے کتاب آرائش محفل میں سی کہ جو اکثر یہ مشتمل
ہی مضمون خلاصہ التواریخ پر

صوبہ دار الخلافت شاہ جہان آباد "ہندی فارسی کی تاریخوں سی یوں معلوم
ہوتا ہے کہ شہر ہستناپور گنگا کی کنارے پر اگلی زمانی میں تختگاہ ہندوستان
کی بادشاہوں کی تھا وسعت و رونق بھی اُسکی اُس عصر میں حد سی باہر
تھی زبان اُسکی بیان سی قاصر ہے اگرچہ اب بھی نہایت آباد ہے لیکن
جیسا پانڈوؤں اور کوروؤں کی وقت میں بسا تھا سو کہان جب کہ دونوں
فرقوں میں بیکھیری ہوئی اور پھوٹ پڑی تب پانڈوؤں فی اس ملک کو
چھوڑا اور شہر اندرپرست کہ جمنہ کی کنارے پر تھا اُس میں آئی بلکہ اپنا
دار السلطنت بھی اُسی کو ٹھہرایا بعد ایک مدت کی راجا اٹکپال تونوڑ فی
بیر بگرماجیت کی چار سو چالیس سن میں اندرپرست کی نزدیک شہر دھلی
کو آباد کیا اور ایک ہزار کچھ اوپر دوسو سن میں بگرماجیت کی راجا پتھورا
فی ایک قلعہ و شہر اپنی نام کا بنایا چنانچہ سلطان قطب الدین ایبک و سلطان

مُنْتَخَبَاتِ هِنْدِي

هِنْدِي زَبَانِ كِي طَالِبُونِ كِي فَايْدِي كِي واسْطِي

اِنْتِخَابِ كِيا هُوا

جان شيكسپير كا

سنه ايڪٽ هزار آٺه سِي پچيس عيسوي ميں

مُطابِق سنه باره سِي چاليس هجري كِي

سر نو سِي چهاپا گيا

دُوسري جلد

LONDON:

Printed by COX and BAYLIS, 75, Great Queen Street.

Lincoln's-Inn-Fields.

1825.

Bayerische
Staatsbibliothek
München



مکتبہ اسلامیہ

ہندوستان کی تاریخ کی کتابوں کی فہرست

مکتبہ اسلامیہ

مکتبہ اسلامیہ

سید ابوالکلام آزاد کی تصانیف

مکتبہ اسلامیہ

مکتبہ اسلامیہ

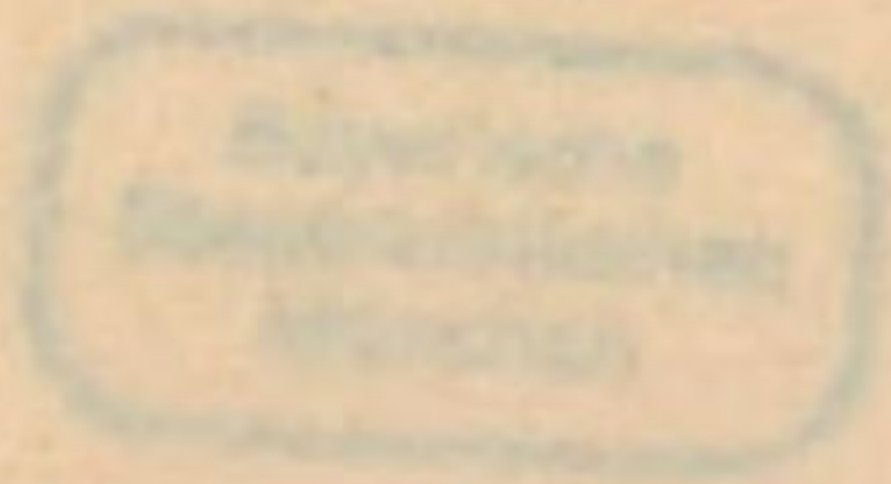
مکتبہ اسلامیہ

LONDON

Printed by G. K. and RAYLES, 72, Great Queen Street

London, E.C. 4

1922





Shakespear, John

Muntakhabāt-i-Hindī, or selections in Hindustani with verbal translations
or particular vocabularies, and a grammatical analysis of some parts, for
the use of students of that language
Bd.: 2. - 2. ed. - 1825

London 1825

4 L.as. 237 d-1/2

urn:nbn:de:bvb:12-bsb10522250-9